Jyotish-Kaomudi

अनुक्रमणिका

ऊँ

जीवन में नक्षत्रों का महत्त्व ?

भारतीय ज्योतिष में नक्षत्र का अत्यंत महत्त्व है। किसी भी व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक फैले षोड़श अर्थात् सोलह संस्कारों में नक्षत्र महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हम जिसे मुहूर्त कहते हैं, उसके मूल में नक्षत्र ही है।

किसी भी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा जिस नक्षत्र में होता है, वही उसका जन्म-नक्षत्र मान लिया जाता है तथा वह नक्षत्र पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से जिस राशि के अंतर्गत आता है, वही राशि उस व्यक्ति की जन्म-राशि मान ली जाती है।

नक्षत्र का भी एक स्वामी ग्रह मान लिया गया है, इसलिए जन्म के समय चंद्रमा जिस नक्षत्र में होता है, उस नक्षत्र के स्वामी ग्रह की दशा या महादशा में उस व्यक्ति का जन्म हुआ, यह कहा जाता है। फिर ग्रहों के क्रमानुसार उस व्यक्ति के जीवन में उन ग्रहों की महादशाएं आती रहती हैं। (तैत्तिरीय ब्राह्मण कृष्ण आयुर्वेद, रामायण वाल्मीकीकृत)

भारतीय ज्योतिष में नक्षत्रों का विशद् अध्ययन किया गया है। यह भी माना गया है कि नक्षत्र जातक की कुंडली में अपनी स्थिति के अनुसार शुभ–अशुभ फल के साथ–साथ नाना प्रकार की व्याधियों के भी कारक बनते हैं।

नक्षत्रों पर विस्तृत अध्ययन करने के पूर्व यह समझा जाए कि आखिर नक्षत्र हैं क्या ? नक्षत्रों और तारों का क्या संबंध है ? इसी प्रकार राशियों और ग्रहों के साथ उनके रिश्ते कैसे हैं ?

नक्षत्र का शाब्दिक अर्थ क्या है ?

'नक्षत्र' संस्कृत भाषा का शब्द है तथा उसकी व्याख्या करते हुए कहा

गया है– *न क्षरति, न सरति इति नक्षत्र*–जो न हिले, न चले, वह नक्षत्र है।

कुछ विद्वानों ने नक्षत्र का यह भी अर्थ लगाया है–

नक्ष–पहुँचना, 'स्प्रोच', त्र–चौकसी।

अंग्रेजी भाषा में नक्षत्र को 'कांस्टलेशन' (Constellation) कहते हैं।

चीनी ज्योतिष में नक्षत्र को सिओ (Sieou) कहा जाता है, जबकि अरबी नजूमी नक्षत्रों को मनाजिल, जो 'मंजिल' शब्द का बहुवचन है, कहते हैं।

नक्षत्र : तारों के समूह

पाश्चात्य विश्वकोशों में कहा गया है कि चीनी, अरब, बेबीलोनिया–निवासी और मिस्री वे पहले लोग थे, जिन्होंने आकाश में नजर आने वाले तारों के समूहों में किसी विशिष्ट आकृति को आरोपित कर उन्हें नाम दिया है। (संभवतः उन्होंने भारतीय प्राचीन वेदों उपनिषदों आदि का ज्ञान नहीं पाया इसलिए ऐसा लिखा है)

यहीं पर नक्षत्रों एवं तारों का अंतर स्पष्ट हो जाता है। वास्तविकता तो यह है कि नक्षत्र सूर्य, चंद्र, मंगल की तरह कोई अकेली इकाई नहीं होते। दरअसल नक्षत्र कुछ तारों के समूह का ही विशिष्ट नाम हैं।

नक्षत्र बनाम तारे

आकाश में नक्षत्रों की रचना तारे करते हैं। ये तारे क्या हैं ? सबसे पहले हमें तारों के बारे में परिचय प्राप्त करें फिर नक्षत्रों, राशियों या ग्रहों और उनमें क्या अंतर है, यह अपने आप स्पष्ट हो जाएगा।

तारे क्या हैं ?

रात्रि के समय स्वच्छ आकाश में असंख्य तारे नजर आते हैं। लेकिन अंतरिक्ष में इनके अतिरिक्त और भी तारे हैं, जो हमें नजर नहीं आते, दूसरे शब्दों में जिनका प्रकाश या जिनकी रोशनी हम धरतीवासियों को नजर नहीं आती। पर वे मौजूद हैं, और जैसे–जैसे अंतरिक्ष विज्ञान उन्नति कर रहा है, जैसे–जैसे खगोलशास्त्री निरंतर शोधों में लगे हुए हैं, हमारे सामने नये–नये तारों की, नये–नये ग्रहों की और नये–नये सौर मंडलों की उपस्थिति स्पष्ट होती जा रही है।

तारे किन तत्वों के बने होते हैं ? उनकी रचना की प्रक्रिया क्या है ?

कुछ खगोलशास्त्रियों और वैज्ञानिकों का विश्वास है कि तारे वस्तुतः अंतरिक्ष में धूल के विशाल बादलों और उद्जन गैस अर्थात् हाइड्रोजन गैस से बने हैं।

इस गैस के अणुओं की गुरुत्वाकर्षण शक्ति उन्हें परस्पर पास लाती है और विशाल बादल, जिसे 'प्रोटोस्टार' कहा जाता है, लघुकाय होने लगता है।

जैसे–जैसे यह प्रोटोस्टार सिकुड़ने लगता है, उसके केंद्र का तापमान बढ़ने लगता है। जब यह तापमान 1,800,000 डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुँच जाता है, तो तारा अपनी मध्यावस्था की ओर अपेक्षाकृत धीमी और स्थिर गति से अग्रसर होने लगता है।

क्या तारों में ऊर्जा होती है ?

हाँ, तारों में ऊर्जा होती है। तारे की मध्यावस्था में उद्‌जन या हाइड्रोजन गैस के अणु निरंतर परस्पर निकट आकर एक नयी गैस-हीलियम गैस-की रचना करने लगते हैं। हर बार जब उद्‌जन गैस के अणुओं से हीलियम गैस का कोई अणु बनता है तो प्रकाश एवं ताप के रूप में उससे ऊर्जा का प्रवाह होता है।

किसी भी तारे द्वारा निसृत की जाने वाली अपार ऊर्जा के लिए करोड़ों टन उद्‌जन गैस हीलियम गैस में परिवर्तित होती है।

तारों की यह ऊर्जा कहाँ जाती है ?

अधिकांश तारों की ऊर्जा अंतरिक्ष में समाहित हो जाती है, लेकिन जो थोड़ी ऊर्जा शेष रहती है, उससे तारा निरंतर गर्म होने लगता है। जब तारे के मध्य का तापमान 100 मिलियन डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुँच जाता है तो तारा फैलने लगता है और हीलियम के अणु, और भारी हीलियम अणुओं की संरचना के लिए परस्पर मिलने लगते हैं।

क्या तारों में विस्फोट भी होता है ?

यदि यह सम्मिलन क्रिया तीव्र गति से होती है तो तारों में विस्फोट हो जाता है और अंतरिक्ष में उसके तत्व विलीन होने लगते हैं।

क्या तारों का अवसान भी होता है ?

हाँ, तारे भी जन्म–मरण की प्रक्रिया के शिकार होते हैं। जब तारों में विस्फोट होता है तो तारे के जीवन का यह चरण 'सुपरनोवा' चरण कहलाता है। हालांकि ऐसा यदा–कदा ही होता है।

अक्सर तारे धीरे–धीरे विस्तारित होकर एक विशाल लाल रंग के तारे

का रूप धर लेते हैं। इन्हें 'रेड जाइंट' कहा जाता है अर्थात् 'लाल राक्षस'।

अंत में जब तारे के तमाम उद्जन 'ईंधन' का इस्तेमाल हो चुका होता है तो वह सिकुड़ कर 'व्हाइट ड्वार्फ' अर्थात् 'श्वेत वामन' का रूप धर लेता है और धीरे–धीरे ठंडा होकर धूमिल पड़ने लगता है। यह उसके 'अवसान' का संकेत माना गया है।

तारों के जन्म और मरण की इस क्रिया में करोड़ों–करोड़ों वर्ष लगते हैं।

इसीलिए मनुष्य की पिछली अनेक पीढ़ियों ने उन्हें सदा एक–सा देखा है। उन्हें वे स्थिर प्रतीत होते हैं, 'न क्षरति, न सरति'

पर वास्तविकता इसके विपरीत है। करोड़ों वर्षों की अवधि के बाद तारों का भी एक न एक दिन अवसान होता ही है।

सन् 1054 ईस्वी में एक दिन अचानक आकाश में एक दैदीप्यमान तारा नजर आया। दो वर्षों तक वह आकाश में चमकता रहा, इतना कि उसे दिन में भी देखा जा सकता था। लेकिन धीरे–धीरे वह तिरोहित होता चला गया। अब उसके स्थान पर गैस का केवल एक समूह नजर आता है। मध्यम चमक वाले इस गैस समूह को नाम दिया गया है–'क्रैब नेबुला'।

तारों के आकार के बारे में बताइए ?

टिम–टिम करते या झिलमिलाते इन तारों में कुछ तारे तो इतने विशाल हैं कि यदि हमारे सूर्य को उनके मध्य रखा जाए तो हमारी पृथ्वी भी उनमें समा जाएगी।

कुछ तारे सूर्य से भी छोटे हैं।

तारों का वर्गीकरण

धरती से दिखायी देने वाले तारों के प्रकाश के आधार पर उनका वर्गीकरण भी किया गया है। तारों की चमक को 'मेग्नीट्यूड' कहा जाता है पर इस मेग्नीट्यूड से किसी भी तारे की असली चमक का सही अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

तारों के इन प्रकाश के आधार पर उन्हें तरह–तरह के नाम दिये गये हैं।

तारों के ऐसे अध्ययनों ने खगोल शास्त्रियों को अंतरिक्ष को तो समझने में मदद की ही है, वे उनके प्रकाश से उनके 'हल्के' या भारी होने का भी पता लगा सकते हैं।

क्या तारे रेडियो तरंगें भी प्रवाहित करते हैं ?

1968 में खगोलशास्त्रियों ने ऐसे तारों का पता लगाया जो नियमित रूप से रेडियो–तरंगें प्रवाहित कर रहे थे तथा एक क्षण में या सेकंड में तीस बार चमकते थे। कुछ तारों की ऐसी ही रेडियो तरंगों के कारण इस अनुमान ने भी जन्म लिया कि शायद अंतरिक्ष में कहीं कोई और सभ्यता है, जो इस तरह की रेडियो तरंगें प्रवाहित कर रही है।

तारों के संबंध में यह संक्षिप्त विवरण ही है। पर तारों के संबंध में जानना इसलिए जरूरी है कि वे ही 'नक्षत्र' की रचना करते हैं।

नक्षत्र की परिभाषा हमने पहले पढ़ी कि *'न क्षरति, न सरति'*। ऐसी बात नहीं है। चूंकि तारों की स्थिति में करोड़ों–करोड़ों वर्षों में परिवर्तन आता है, अतः वे धरती पर रहने वाले नश्वर मनुष्य को, जिसका जीवन इन तारों के जीवन की तुलना में किसी बुदबुदे से भी बेहद गौण होता है, वे स्थिर नजर आते हैं।

तो फिर क्या तारे ही नक्षत्रों का आधार हुए ?

हाँ, तारे ही नक्षत्रों का आधार हैं। मनुष्य हजारों वर्षों से इन तारों को देखता आया है। सभ्यता के विकास के साथ–साथ मनुष्य ने आकाश में सतत चमकने वाले इन तारों के समूहों में कुछ आकृतियां आरोपित कर दीं। कालांतर में वे नक्षत्र या 'कांस्टलेशन' कहलाने लगे। प्राचीन काल में इन नक्षत्रों की सहायता से नाविक और यात्री दिशा निर्धारित करते थे। इसीलिए अरब में इन्हें 'मनाजिल' कहा जाने लगा।

नक्षत्रों का नामकरण कब हुआ और उसका आधार क्या है ?

माना जाता है कि प्राचीन यूनानियों को लगभग 49 कांस्टलेशन या नक्षत्रों का ज्ञान था और उनका नामकरण उन्होंने अपने वीर नायकों और देवताओं के नाम पर किया था। बाद में रोमन खगोलशास्त्रियों ने उन्हें जो नाम दिये, वे आज तक प्रचलित हैं। इनमें से एक प्रसिद्ध कांस्टलेशन 'उर्सा मेजर' या 'ग्रेट बीयर' है, (भारतीय लोग इसे सप्तऋषि तारामंडल कहते थे) जिसके सात मुख्य तारे एक हल के फल की रचना करते हैं। इसे 'प्लो' भी कहा जाता है। इस 'प्लो' के दो तारे प्वाइंटर कहलाते हैं, क्योंकि वे हमेशा ध्रुव तारे की ओर होते हैं। इसे 'पोलारिस' भी कहा जाता है तथा यह हमेशा उत्तरी ध्रुव के पास नजर आता है।

आज के खगोलशास्त्रियों ने 88 कांस्टलेशन या नक्षत्रों की पहचान की

है। इनमें से 23 तो दक्षिणी गोलार्द्ध के धुर दक्षिण में हैं। 18वीं शती के खगोलशास्त्रियों ने पहली बार इनका नामकरण किया।

पृथ्वी और नक्षत्रों का क्या संबंध है ?

यद्यपि हमारी पृथ्वी अपने क्रांतिवृत्त पर सूर्य की परिक्रमा करती रहती है तथापि धरती से ऐसा प्रतीत होता है कि सूर्य ही पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है। और एक समय यह विश्वास इतना बद्धमूल था कि अनेक खगोल–शास्त्रियों को इस तथ्य को प्रतिपादित करने के लिए धार्मिक मठाधीशों के हाथों कठोर दंड सहने पड़े।

क्रांतिवृत्त क्या है ?

पृथ्वी जिस मार्ग पर सूर्य की परिक्रमा करती है, उसे क्रांति वृत्त (तारों के बीच पश्चिम से पूर्व की ओर खिसकता हुआ सूर्य जिस आभासित मार्ग पर भ्रमण करता हुआ दिखाई देता है उसको KV कहते हैं) कहते हैं। यह मार्ग अंडाकार है। इसे भचक्र भी कहते हैं। इस क्रांतिवृत्त की पृष्ठभूमि में असंख्य तारे नजर आते हैं। आज यह कल्पना भी कर पाना मुश्किल है, कब, कहाँ, किन लोगों ने इन असंख्य तारों के बीच कुछ चिर-परिचित छवियां खोजीं। निस्संदेह यह किसी एक पीढ़ी का काम नहीं होगा फिर भी संसार में अलग-अलग लोगों ने अलग-अलग जगह एक-एक समूह बनाया। कालांतर में इन तारों को 27 आकृतियों में बांटा गया है। यही आकृतियां नक्षत्र कहलाती हैं। यों एक नक्षत्र अभिजित को भी माना गया है। इसे मिला दें तो नक्षत्र 28 हो जाते हैं। इसे **(Vega Star)** के नाम से जाना जाता है।

नक्षत्रों एवं राशियों का क्या संबंध है ?

नक्षत्र 27 हैं और राशियां 12। अतः जब इन 27 नक्षत्रों का बारह से विभाजन किया गया तो प्रत्येक राशि में सवा दो नक्षत्रों की स्थिति की कल्पना की गयी।

क्रांतिवृत्त के 360 अंशों को बारह राशियों में विभाजित करने पर प्रत्येक राशि में तीस अंश आये।

और जब 27 नक्षत्रों को बारह से विभाजित किया गया तो प्रत्येक नक्षत्र को 13.20 अंश प्राप्त हुए। सवा दो नक्षत्र प्रत्येक राशि में आये।

सुविधा के लिए प्रत्येक नक्षत्र को चार चरणों में बांटा गया और उसके

13.20 अंशों को चार से विभाजित करने पर प्रत्येक चरण में 3 अंश 20 कला की स्थिति मानी गयी।

हम आगे देखेंगे कि किस तरह किसी नक्षत्र का एक अंश या चरण किसी एक राशि में आता है, तो दूसरा किसी अन्य पिछली या अगली राशि में।

राशियों में नक्षत्रों की स्थिति का उद्देश्य क्या है ?

ज्योतिष शास्त्र ने यह सब 'झमेला', अनुमानित 'झमेला', क्यों खड़ा किया ?

यह 'माथा–पच्ची' अकारण नहीं थी।

दरअसल ज्योतिष शास्त्री क्रांतिपथ के 360 अंशों को बारह से विभाजित कर, (बारह ही क्यों ? (शायद 12 विशेष आकृतियों के कारण) क्योंकि राशियां बारह मानी गयीं) तथा बाद में सत्ताइस नक्षत्रों को बारह राशियों में विभाजित कर, तथा बाद में नक्षत्रों को भी चरणों में विभाजित कर एक दूरी सुनिश्चित कर लेना चाहते थे ताकि पता लगा सकें कि कोई भी ग्रह विशेष किस समय, किस राशि में और उस राशि में भी किस नक्षत्र में तथा उसके भी किस चरण में है।

कारण यह है कि प्रत्येक नक्षत्र तारों के समूह से बनता है, और प्रत्येक नक्षत्र में आने वाले तारों की भी संख्या एक जैसी नहीं है। यदि आर्द्रा नक्षत्र में मात्र एक तारा है तो शतभिषा में, जैसा कि नाम से स्पष्ट है, सौ तारे हैं।

नक्षत्रों के नाम बताइए ? क्या राशियों की तरह उनके भी स्वामी होते हैं ?

यहाँ हम प्रारंभ में ज्योतिष शास्त्र में वर्णित एवं उपयोगी सत्ताइस नक्षत्रों के नाम उनके देवता एवं उनके स्वामी ग्रहों का परिचय दे रहे है–

क्रम	नक्षत्र	देवता	स्वामी
1.	अश्विनी	अश्विनी कुमार	केतु
2.	भरणी	यम (काल)	शुक्र
3.	कृत्तिका	अग्नि	सूर्य
4.	रोहिणी	ब्रह्मा (प्रजापति)	चंद्रमा
5.	मृगशिरा	चंद्रमा	मंगल
6.	आर्द्रा	शिव (रूद्र)	राहु
7.	पुनर्वसु	अदिति (आदित्य)	गुरु
8.	पुष्य	वृहस्पति	शनि

9.	आश्लेषा	सर्प	बुध
10.	मघा	पितर	केतु
11.	पूर्वा फाल्गुनी	भग	शुक्र
12.	उत्तरा फाल्गुनी	अर्यमा	सूर्य
13.	हस्त	सूर्य (सविता)	चंद्रमा
14.	चित्रा	त्वष्टा (विश्वकर्मा)	मंगल
15.	स्वाति	पवन (मरुत)	राहु
16.	विशाखा	इंद्राग्नि	गुरु
17.	अनुराधा	मित्र	शनि
18.	ज्येष्ठा	इंद्र	बुध
19.	मूल	राक्षस (निऋति)	केतु
20.	पूर्वाषाढ़ा	जल	शुक्र
21.	उत्तराषाढ़ा	विश्वदेव	सूर्य
22.	श्रवण	विष्णु (गोविन्द)	चंद्रमा
23.	धनिष्ठा	वसु	मंगल
24.	शतभिषा	वरुण	राहु
25.	पूर्वाभाद्रपद	अजपाद (अजैकपाद)	गुरु
26.	उत्तराभाद्रपद	अहिर्बुध्न्य	शनि
27.	रेवती	पूषा	बुध

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि ज्योतिष शास्त्र में नौ ग्रहों को तीन–तीन नक्षत्रों का आधिपत्य दिया गया है, जैसे–

1. सूर्य के आधिपत्य के नक्षत्र हैं, कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी तथा उत्तराषाढ़ा।

2. चंद्र के नक्षत्र हैं : रोहिणी, हस्त एवं श्रवण।

3. मंगल के नक्षत्र हैं : मृगशिरा, चित्रा तथा धनिष्ठा।

4. बुध के नक्षत्र हैं–आश्लेषा, ज्येष्ठा एवं रेवती।

5. गुरु के नक्षत्र हैं–पुनर्वसु, विशाखा एवं पूर्वाभाद्रपद।

6. शुक्र के नक्षत्र हैं–भरणी, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा।

7. शनि के नक्षत्र हैं–पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद।

8. राहु के नक्षत्र हैं–आर्द्रा, स्वाति तथा शतभिषा।

9. केतु के नक्षत्र हैं–अश्विनी, मघा, एवं मूल।

जैसा कि पहले बताया गया है विंशोत्तरी दशा के निर्धारण में नक्षत्रों का

ही आधार होता है। जन्म के समय चंद्रमा जिस नक्षत्र में होता है, जातक का उसी ग्रह की दशा में जन्म मान लिया जाता है।

जातक अपने जन्म नक्षत्र के कारण किस ग्रह की पूर्ण दशा का कितना अंश भोग चुका है या उसे उस ग्रह की पूरी दशा का भोग करना है, यह सब नक्षत्र के चरण–विभाजन के फलस्वरूप ज्ञात हो जाता है।

कृपया राशियों के बारे में भी संक्षिप्त में बताएं ?

हमने देखा कि तारों को मिलाकर राशियों की कल्पना की गयी है और प्रत्येक राशि में सवा दो नक्षत्रों की स्थिति मानी गयी है।

राशि तीस अंशों की होती है और नक्षत्र 13 अंश 20 कलांश के तथा उनका प्रत्येक चरण 3 अंश 20 कला का होता है।

सूर्य की पृथ्वी द्वारा परिक्रमा का पथ अंडाकार है। इस परिक्रमा पथ की पृष्ठभूमि में जो तारे सतत् नजर आते हैं, उनका ही सुविधा के लिए किसी आकृति विशेष में समायोजन कर विभाजन किया गया है।

पृथ्वी का यह राशिपथ अंग्रेजी में 'जोडियक' कहलाता है। हिंदी में 'जोडियक' को ही राशिपथ कहते हैं। क्रांतिवृत के विषय में हमने पहले भी बताया है। सुविधा के लिए एक बार पुनः। इस अंडाकार परिक्रमा पथ या वृत्त को 360 अंशों में बांटा गया है। फिर इन 360 अंशों को बारह से विभाजित किया है। 360 में बारह से भाग देने पर एक संख्या में तीस अंश आते हैं। इन तीस अंशों में आने वाले तारों के समूह को एक राशि मान लिया गया है। सुविधा के लिए इन राशियों को भी एक नाम दे दिया गया है। इन नामों में हम सब परिचित हैं। हमारे यहाँ बारह राशियां हैं–

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन।

अंग्रेजी में या पाश्चात्य खगोलशास्त्र और ज्योतिष शास्त्र में इनके ही नाम हैं–क्रमशः एरियस (मेष), टॉरस (वृष), जेमिनी (मिथुन), कैंसर (कर्क), लियो (सिंह), वर्गो (कन्या), लिब्रा (तुला), स्कोरपियो (वृश्चिक), सैगीटेरियस (धनु), कैप्रीकॉर्न (मकर), एक्वारियस (कुंभ), पाइसीज (मीन)।

ज्योतिष शास्त्र में प्रत्येक राशि को सात ग्रहों में से किसी न किसी के आधीन माना गया है। इसका परिचय आगे प्रसंगानुसार।

यहाँ हम यह जानेंगे कि प्रत्येक राशि में कौन–कौन से नक्षत्र या उनके चरण आते हैं। सुविधा के लिए हम राशि के स्वामी ग्रह तथा इन राशियों

में आने वाले नक्षत्रों के स्वामी ग्रहों का भी परिचय दे रहे हैं। उद्देश्य यही है कि पाठक यह समझने की कोशिश करें कि किसी व्यक्ति के जीवन में, ज्योतिष शास्त्र के सिद्धांतानुसार भी न तो अकेला नक्षत्र, न अकेली राशि और न अकेला कोई ग्रह प्रभाव डालता है। किसी भी व्यक्ति पर इन सबका सम्मिलित प्रभाव ही पड़ता है।

कृपया राशियों एवं उनके नक्षत्रों का परिचय दीजिए ?

प्रथम राशि, मेष राशि का स्वामित्व मंगल को दिया गया है। मेष राशि में अश्विनी (स्वामी : केतु), भरणी (स्वामी : शुक्र) के सभी चार–चार चरण तथा कृत्तिका (स्वामी : सूर्य) का एक चरण आता है।

एक राशि में तीस अंश माने गये हैं। यहाँ अश्विनी के 13.20, भरणी के 13.20 तथा कृत्तिका के प्रथम चरण 3.20 मिलकर 30 अंश पूरे होते हैं।

अब यदि मेष राशि में जन्मे दो व्यक्तियों के नक्षत्रों में अंतर है तो फलों में भी अंतर पड़ेगा, यद्यपि वह व्यक्ति मेष राशि में जन्मा माना जाएगा तथापि मेष राशि के अश्विनी, भरणी अथवा कृत्तिका नक्षत्र में जन्म लेने से कुछ न कुछ फर्क अवश्य पड़ेगा।

यही बात शेष राशियों एवं उनके नक्षत्रों पर भी लागू होती है।

मेष के बाद वृषभ अथवा वृष दूसरी राशि है। कुंडली में 2 के अंक से इसे संकेतित किया जाता है। इसका स्वामित्व शुक्र को दिया गया है।

वृष राशि में कृत्तिका (स्वामी : सूर्य) के शेष तीन चरण (प्रथम चरण मेष में होता है), रोहिणी (स्वामी : चंद्र) के चारों चरण (13.20) और मृगशिरा (स्वामी : मंगल) के दो चरण (6.40) होते हैं।

मिथुन राशि (स्वामी : बुध) में मृगशिरा के शेष दो चरण (6.40), आर्द्रा (स्वामी : राहु) के चारों चरण (13.20) एवं पुनर्वसु (स्वामी : गुरु) के तीन चरण (10.00) होते हैं।

कर्क राशि (स्वामी : चंद्र) में पुनर्वसु का अंतिम चरण (3.20) पुष्य (स्वामी : शनि) के चारों चरण (13.20) तथा आश्लेषा (स्वामी : बुध) के चारों चरण (13.20) शामिल हैं।

सिंह राशि (स्वामी : सूर्य) में मघा के चारों चरण (13.20), पूर्वा फाल्गुनी (स्वामी : शुक्र) के चारों चरण (13.20) तथा उत्तरा फाल्गुनी (स्वामी : स्वयं सूर्य) का प्रथम चरण (3.20) होता है।

कन्या राशि (स्वामी : बुध) में उत्तरा फाल्गुनी के शेष तीन चरण (10.

00), हस्त (स्वामी : चंद्र) के चारों चरण (13.20) तथा चित्रा (स्वामी : मंगल) के दो चरण (6.40) की गणना होती है।

तुला राशि (स्वामी : शुक्र) में चित्रा के दो चरण (6.40), स्वाति (स्वामी : राहु) के चारों चरण (13.20) तथा विशाखा (स्वामी : गुरु) के तीन चरण (10.00) का समावेश माना गया है।

वृश्चिक राशि (स्वामी : मंगल) में विशाखा का अंतिम चरण (3.20), अनुराधा (स्वामी : शनि) तथा ज्येष्ठा (स्वामी : बुध) के समस्त चरणों की गणना होती है। अर्थात् अनुराधा के (13.20) तथा ज्येष्ठा के (13.20)।

धनु राशि में मूल (स्वामी : केतु) के चारों चरण (13.20), पूर्वाषाढ़ा (स्वामी : शुक्र) के चारों चरण (13.20) तथा उत्तराषाढ़ा (स्वामी : सूर्य) के प्रथम चरण (3.20) का समावेश माना गया है।

मकर राशि (स्वामी : शनि) में उत्तराषाढ़ा के शेष तीन चरण (10.00), श्रवण (स्वामी : चंद्र) के चारों चरण (13.20) तथा धनिष्ठा (स्वामी : मंगल) के दो चरण (6.40) की गणना होती है।

कुंभ राशि (स्वामी : शनि) में धनिष्ठा के अंतिम दो चरण (6.40) तथा शतभिषा (स्वामी : राहु) के चारों चरण (13.20) तथा पूर्वभाद्रपद (स्वामी : गुरु) के तीन चरण (10.00) का समावेश है।

मीन राशि (स्वामी : गुरु) में पूर्वभाद्रपद का अंतिम चरण तथा उत्तरा भाद्रपद (स्वामी : शनि) के चारों चरण (13.20) तथा रेवती (स्वामी : बुध) के चारों चरणों (13.20) का समावेश माना गया है।

नक्षत्रों के चरणाक्षर से क्या आशय है ? उनका महत्त्व बताइए ?

भारतीय ज्योतिष की महत्त्वपूर्ण विशेषता है–गोपनीयता के साथ–साथ सरलता। तंत्र शास्त्र में भी यही विशेषता है। जो मंत्र अपने अर्थ की गोपनीयता के कारण निरर्थक प्रतीत होते हैं, वे मंत्र का ज्ञान होने पर अर्थवान् एवं प्राणवान् सिद्ध हो जाते हैं।

प्रत्यक्ष देखने पर प्रत्येक नक्षत्र के पृथक–पृथक चरणों के लिए नियत अक्षर भी अर्थहीन लगते हैं। जैसे अश्विनी के चार चरणों के लिए नियत अक्षर हैं–चू, चे, चो, ला।

अश्विनी को आज प्रथम नक्षत्र माना जाता है, जबकि प्राचीन काल में यह स्थान कृतिका का कहा जाता था। इस पर आगे चर्चा प्रसंग अनुसार।

नक्षत्रों के लिए नियत चरणाक्षर आज अपने ज्ञान की सीमा के कारण

भले ही अर्थहीन लगते हों, पर उनका एक महत्त्व और उपयोग है।

अकेले चरणाक्षर से ज्योतिष शास्त्र का कोई भी अनुभवी अध्येता किसी भी व्यक्ति की चंद्र लग्न एवं नक्षत्र एवं वह नक्षत्र जिस राशि के अंतर्गत आता है, तथा नक्षत्र एवं राशि के स्वामी ग्रह की जानकारी के आधार पर उस व्यक्ति विशेष के संबंध में पर्याप्त जानकारी पा सकता है।

अगर भारतीय ज्योतिष शास्त्र के सिद्धांतों पर विश्वास रखते हैं तो हम यह भी जानते हैं कि किसी भी जातक के जन्म नक्षत्र, राशि एवं नक्षत्र एवं राशि के स्वामी आदि का उस जातक के व्यक्तित्व, स्वभाव आदि पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। और यही बातें किसी भी व्यक्ति के भाग्य–निर्धारण में भी पर्याप्त भूमिका निभाती हैं। जन्म नक्षत्र, राशि, राशि के स्वामी ग्रहों के शुभ–अशुभ प्रभाव का आकलन कर कोई भी व्यक्ति अपने दोषों को दूर कर गुणों में वृद्धि कर सकता है।

अतः जन्म नक्षत्र का महत्त्व है तथा उसके चरणों के लिए नियत अक्षरों की भी अपनी कम उपयोगिता नहीं है।

यहाँ प्रस्तुत है, विभिन्न नक्षत्रों के चरणाक्षरः–

नक्षत्र	*प्रथम*	*द्वितीय*	*तृतीय*	*चतुर्थ*
अश्विनी	चू	चे	चो	ला
भरणी	ली	लू	ले	लो
कृत्तिका	अ	इ	उ	ए
रोहिणी	ओ	वा	वी	बू
मृगशिरा	बे	बो	का	की
आर्द्रा	कू	घ	ङ	छ
पुनर्वसु	के	को	ह	ही
पुष्य	हू	हे	हो	डा
आश्लेषा	डी	डू	डे	डो
मघा	मा	मी	मे	मो
पूर्वा फाल्गुनी	मो	ट	टी	टू
उत्तरा फाल्गुनी	टे	टो	पा	पी
हस्त	पू	ष	ण	ठ
चित्रा	पे	पो	रा	री
स्वाति	रू	रे	रो	ता
विशाखा	ती	तू	ते	तो
अनुराधा	न	नी	नू	ने
ज्येष्ठा	नो	य	यी	यू

मूल	ये	यो	भ	भी
पूर्वाषाढा	भू	ध	फ	ढ
उत्तराषाढा	भे	भो	जू	जी
अभिजित	जू	जे	जो	ख
श्रवण	खि	खू	खे	खो
धनिष्ठा	ग	गी	गू	गे
शतभिषा	गो	सा	सी	सू
पूर्वाभाद्रपद	से	सो	दा	दी
उत्तराभाद्रपद	दु	थ	झ	त्र
रेवती	दे	दो	चा	ची

राशियों की रचना नक्षत्रों से होती है, अतः जिस राशि में जो नक्षत्र होता है—उसके चरण अक्षरों का उस राशि में समावेश हो जाता है। और राशि के आधार पर चंद्र राशि तय कर दी जाती है।

पाठकों की सुविधा के लिए इसे और स्पष्ट कर देते हैं:

मेष:	चू चे चो ला,	ली लू ले लो,	अ
	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका
वृष:	इ उ व	ओ आ वी वू	वे वो
	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा
मिथुन :	क की,	कू घ ङ छ	के को ह
	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
कर्क:	ही	हू हे हो डा	डी डू डे डो
	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
सिंह:	मा मी मे मो	मो ट टी टू	टे
	मघा	पू. फाल्गुनी	उ. फाल्गुनी

राशि			
	टो पा पी	पू ष ण ठ	पे पो
कन्या:	उ. फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
	रा री	रू रे रो ता	ती तू ते
तुला:	चित्रा	स्वाति	विशाखा
	तो	न नी नू ने	नी य री यू
वृश्चिक:	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
	पे पो भ भी	भू ध फ ढ	भ
धनु:	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
	भो ज जी	खि खू खे खी	ग गी
मकर:	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा
	गू गे	गो सा सी सू	से सो दा
कुंभ:	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद
	दी	दू थ झ त्र	दे दो चा ची
मीन:	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती

'गंड' से क्या तात्पर्य है ?

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से एक और तथ्य स्पष्ट होता है– और वह यह कि इन बारह राशियों में तीन स्थल ऐसे हैं, जहाँ राशि एवं नक्षत्र, दोनों की ही समाप्ति होती है। जैसे कर्क राशि, जिसकी समाप्ति के साथ उसके अंतर्गत आने वाले आश्लेषा नक्षत्र के भी चारों चरण समाप्त होते हैं।

इसके बाद आती है वृश्चिक राशि, जिसकी समाप्ति के साथ–साथ ज्येष्ठा के भी चारों चरण समाप्त होते हैं।

तीसरा स्थल है मीन राशि। मीन राशि के समाप्ति के साथ ही रेवती नक्षत्र के भी चारों चरणों का उसमें समावेश हो जाता है।

दूसरे शब्दों में प्रत्येक चौथी राशि की समाप्ति पर यह स्थिति बनती है।

ज्योतिष शास्त्र की भाषा में इन स्थानों को गंड+मूल कहते हैं। गंड अर्थात् वे विशिष्ट स्थल जहाँ राशि एवं उसके अंतर्गत आने वाले अंतिम नक्षत्र का भी अंत होता है।

गंड में जन्म को अशुभ माना गया है। यह मान्यता है कि जन्म गंड के जितना निकट होगा, वह उतना ही अशुभ, विपत्तिकर अथवा अनिष्ट करने वाला होगा।

मूल नक्षत्र के संबंध में अनेक भयभीत करने वाले फलादेश मिलते हैं। कहा जाता है कि मूल के प्रथम चरण में जातक का जन्म पिता के लिए, द्वितीय चरण में जन्म माता के लिए तथा तृतीय चरण में जन्म जातक के परिवार एवं धन का नाशक होता है। जबकि चतुर्थ चरण में जन्म होने से जातक की कोई हानि नहीं होती।

इसी तरह आश्लेषा के प्रथम चरण में जन्म होने से जातक का कुछ भी अशुभ नहीं होता, जबकि द्वितीय चरण में जन्म होने से पारिवारिक धन का नाश, तृतीय चरण में जन्म होने से माता के लिए तथा चतुर्थ चरण में जन्म होने से पिता का अनिष्ट होता है।

क्या राशियों की भांति नक्षत्रों में भी संज्ञा, वर्ण आदि के भेद हैं ?

हाँ, जिस प्रकार राशियों पर स्वभाव, वर्ण, आदि आरोपित किये गये हैं, उसी तरह नक्षत्रों का भी ध्रुव, चर, उग्र, मिश्र, मृदु, तीक्ष्ण, दारूण आदि संज्ञाओं में विभाजन किया गया। नक्षत्रों में भी ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि वर्ण भेद किया गया है।

यही नहीं, नक्षत्रों का, योनि, वर्ग एवं सत्व, रज, तम गुणों के आधार पर भी विभाजन किया गया है।

सर्वप्रथम नक्षत्रों की संज्ञाओं का परिचय प्राप्त करें।

ध्रुव संज्ञक नक्षत्र हैं : उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा तथा उत्तराभाद्रपद, रोहिणी। और रविवार

चर संज्ञक नक्षत्र हैं : स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा। और सोमवार

उग्र संज्ञक नक्षत्र हैं : पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी, एवं मघा। ओर मंगलवार

मिश्र संज्ञक नक्षत्रों में विशाखा, कृत्तिका और बुधवार का समावेश है।

क्षिप्र एवं लघु संज्ञक नक्षत्र हैं : हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित। और गुरुवार

मृदु संज्ञक नक्षत्रों में मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा का समावेश है। शुक्रवार

तीक्ष्ण एवं दारुण संज्ञक नक्षत्र हैं : मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा। शनिवार

नक्षत्रों की इन संज्ञाओं का क्या उपयोग है ?

नक्षत्रों की इन संज्ञाओं से उनके फल का पता चलता है।

जैसे कहा गया है कि ध्रुव संज्ञक नक्षत्रों अर्थात् उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तरा भाद्रपद एवं रोहिणी नक्षत्र में स्थायित्व रखने की कामना वाले कार्य शुरू करने चाहिए। अर्थात् ऐसे कार्य जिनमें हम स्थायित्व चाहते हैं, जैसे गृह–निर्माण, ग्रह शांति, उद्यान एवं बीजारोपण आदि।

चर संज्ञक नक्षत्रों का संबंध गति से है। अतः जिन कामों में हम गति चाहते हैं, उन्हें चर संज्ञक नक्षत्रों में शुरू करना चाहिए। चर संज्ञक नक्षत्रों में, हमें पता है, स्वाति, पुनर्वसु श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषा का समावेश है।

उग्र संज्ञक नक्षत्रों यथा पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, भरणी एवं मघा को मारण, शस्त्र–निर्माण, विष प्रयोग आदि के लिए उपयुक्त कहा गया है।

मिश्र संज्ञक नक्षत्रों जैसे विशाखा, कृत्तिका आदि को यज्ञादि एवं मिश्रित कार्य के लिए श्रेष्ठ बताया गया है।

क्षिप्र एवं लघु संज्ञक नक्षत्र शास्त्र अध्ययन, आभूषण निर्माण, हस्तशिल्प के कार्य, दुकानदारी शुरू करने के कार्य तथा रतिकर्म के लिए शुभ कहे गये हैं। क्षिप्र एवं लघु संज्ञक नक्षत्र हैं–हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित।

मृदु संज्ञक नक्षत्र ललित कला, विशेषकर गायन आदि, खेलकूद, उत्सव, वस्त्राभूषण आदि कार्यों के लिए शुभ माने गये हैं। मृदु संज्ञक नक्षत्रों में मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा आदि की गणना होती है।

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा आदि की गणना तीक्ष्ण एवं दारुण संज्ञक नक्षत्रों में होती है तथा जैसा कि इनकी संज्ञा में स्पष्ट है, ये नक्षत्र मारण, तांत्रिक, प्रयोगों, आक्रमण आदि के लिए उपयुक्त पाये गये हैं।

मुहुर्त चिंतामणि में नक्षत्रों को ऊर्ध्वमुख, अधोमुख तथा तिर्यङमुख भी

माना गया है। अधोमुख नक्षत्र हैं–मूल, आश्लेषा, कृत्तिका, विशाखा, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी और मघा। अधोमुख नक्षत्रों में कूप खनन, खनिज कार्य, धरती के गर्भ में किये जाने वाले कार्यों को शुरू करने का परामर्श दिया जाता है। तिर्यंङ मुख नक्षत्रों में बांध बनवाने, वाहन आदि से संबंधित कार्य किये जाते हैं। ऐसे नक्षत्र हैं–मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, स्वाति, पुनर्वसु, ज्येष्ठा और अश्विनी।

नक्षत्रों की नेत्र संज्ञा

इसी तरह नक्षत्रों को अल्प, दृष्टि, अंध, सुअक्षि तथा एकाक्षी भी माना गया। एकाक्षी अर्थात् काना। यह वर्गीकरण चोरी संबंधी प्रश्नों में उपयोगी होता है। अल्प दृष्टि नक्षत्र हैं–रोहिणी, पुष्य, विशाखा, रेवती, विशाखा, पूर्वाषाढ़ा एवं उत्तराफाल्गुनी।

अंध नक्षत्र है–भरणी, आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, पूर्वाभाद्रपद।

सुअक्षि नक्षत्र हैं–कृत्तिका, पुनर्वसु, पूर्वा फाल्गुनी, स्वाति, श्रवण, मूल, उत्तराभाद्रपद।

एकाक्षी नक्षत्र हैं–मृगशिरा, आश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा, शतभिषा।

नक्षत्रों के वर्ण

ग्रहों, राशियों की भांति नक्षत्रों का भी वर्णों में विभाजित किया गया है। तदनुसार ब्राह्मण वर्ण के नक्षत्र हैं–

पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद और कृत्तिका। क्षत्रिय वर्ण में इन नक्षत्रों का समावेश है : उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, पुष्य। वैश्य वर्ण के नक्षत्रों मे–रोहिणी, अनुराधा, मघा, रेवती की गणना होती है।

शूद्र या सेवक वर्ण के नक्षत्र हैं–हस्त, पुनर्वसु, अश्विनी, अभिजीत।

इसी तरह मूल, आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा नक्षत्रों की उग्र जाति का तथा आश्लेषा, विशाखा, श्रवण एवं भरणी नक्षत्रों को चंडाल जाति का माना गया है।

नक्षत्रों का फलादेश करते समय इन सब बातों का भी विचार किया जाता है।

नक्षत्रों के गुणों के बारे में भी बताइए ?

योगदर्शन महर्षि पातंजलि के अनुसार प्रत्येक नक्षत्र में सत्व, रज या तम, कोई न कोई एक गुण होता है तथा वह नक्षत्र स्वयं में स्थित ग्रह विशेष को अपना वह गुण प्रदान कर देता है।

'यहाँ अपने में स्थित' को थोड़ा और स्पष्ट कर दें।

नक्षत्र ग्रहों से भी बहुत दूर होते हैं। कुछ नक्षत्रों को मिलाकर राशियों की कल्पना की गयी है, यह हम जानते ही हैं।

जब हम कहते हैं कि कोई ग्रह विशेष, किसी विशिष्ट राशि में है तो तात्पर्य यही कि हमें धरती से देखने पर वह ग्रह विशेष, उसी विशिष्ट राशि के सामने नजर आता है।

या यों कहें कि राशिपथ के मंच पर वह राशि उस ग्रह की पृष्ठभूमि में पड़े परदे की भांति होती है।

मगर राशि तीस अंशों की होती है। उसमें सवा दो नक्षत्रों की कल्पना की गयी है। सूक्ष्मता के लिए ज्योतिष में यह जानने की विधि विकसित की गयी कि राशि में भी ग्रह उस राशि के किस नक्षत्र और उसके किस चरण में हैं।

जैसे कोई कहे कि मैं दिल्ली में रहता हूँ। लेकिन दिल्ली तो बहुत बड़ी है। पूछने पर वह अपनी कॉलोनी या मोहल्ले का नाम बताता है। पर कॉलोनी भी कोई छोटी नहीं होती। अतः वह अपने घर का नंबर, गली आदि बताता है।

बस, कुछ ऐसा ही ग्रहों की राशि, नक्षत्र और उसके चरण विशेष में उसकी स्थिति के बारे में समझ लीजिए।

इस प्रकार जब कोई ग्रह किसी राशि के घटक किसी नक्षत्र विशेष के सामने होता है तो हम कहते हैं कि वह ग्रह उस नक्षत्र में है।

हमारे यहाँ तीन गुणों की विशेष महिमा बतायी गयी है। मनुष्यों में भी इन्हीं गुणों का वास बताया गया है।

ये गुण हम सभी जानते हैं। ये हैं—सात्विक गुण, राजसिक गुण और तामसिक गुण।

निम्न तालिका से ज्ञात होता है कि किस नक्षत्र पर कौन—सा गुण आरोपित किया गया है।

नक्षत्र, उनका गुण एवं स्वामी ग्रह

सत्व गुण	रजोगुण	तमोगुण
पुनर्वसु	भरणी	अश्विनी
(गुरु)	(शुक्र)	(केतु)
आश्लेषा	कृत्तिका	मृगशिरा
(बुध)	(सूर्य)	(राहु)

विशाखा	रोहिणी	आर्द्रा
(गुरु)	(चंद्र)	(मंगल)
ज्येष्ठा	पूर्वाफाल्गुनी	पुष्य
(बुध)	(शुक्र)	(शनि)
पूर्वाभाद्रपद	उत्तरा फाल्गुनी	मघा
(गुरु)	(सूर्य)	(केतु)
रेवती	हस्त	चित्रा
(बुध)	(चंद्र)	(मंगल)
	पूर्वाषाढ़ा	स्वाति
	(शुक्र)	(राहु)
	उत्तराषाढ़ा	अनुराधा
	(सूर्य)	(शनि)
	श्रवण	मूल
	(चंद्र)	(केतु)
		धनिष्ठा
		(राहु)
		शतभिषा
		(मंगल)
		उत्तरा भाद्रपद
		(बुध)

वर-वधू की कुंडली-मिलान में क्या नक्षत्रों पर भी ध्यान दिया जाता है ?

जी हाँ, वर–वधू की कुंडली–मिलान में नक्षत्रों की बहुत अहम् भूमिका होती है। मिलान के लिए जो नियम बनाये गये हैं, उनकी तालिका मेलापक सारिणी कहलाती है। इसी मेलापक सारिणी के आधार पर विवाह के समय वर–वधू की कुंडली मिलाने का आम प्रचलन है। कुंडली–मिलान का एकमात्र उद्देश्य यही जानना था कि दो लोगों के मध्य आजीवन संबंध शुभ, सुखद और फलप्रद होगा या नहीं।

पहले जब आज जैसे विवाह योग्य कन्याओं और युवकों के परिचय–सम्मेलन के आयोजनों का न प्रचलन था और न लड़की या लड़के को एक–दूसरे को मिलाने–दिखाने का रिवाज, तब दोनों की कुंडली के अध्ययन से ही यह ज्ञात किया जाता था कि प्रस्तावित संबंध करने योग्य है या नहीं। इस कार्य में सुविधा के लिए जिस मेलापक सारिणी की रचना

की गयी, उसमें नक्षत्रों की एक अतिशय महत्त्वपूर्ण भूमिका स्पष्ट नजर आती है।

मेलापक सारिणी का मुख्य आधार नक्षत्र ही हैं। उत्तर भारत में वर–वधू के मध्य छत्तीस गुणों के मिलान को देखने की प्रथा है।

वर्ण, वश्य, तारा, योनि, गण मैत्री, भकूट और नाड़ी। इन्हें अष्टकूट या आठ कूटों की संज्ञा दी गयी है। इनमें से प्रत्येक के लिए निश्चित गुण या गुणों का निर्धारण कर दिया गया है।

जैसे वर्ण, वश्य के 2, तारा के 3, योनि के 4, ग्रह मैत्री के 5, गुण मैत्री के 6, भकुट के 7 और नाड़ी के 8 (कुल योग : 36) गुण तय किये गये हैं।

इनमें तारा, योनि, गण, नाड़ी का मूलाधार नक्षत्र ही है। अर्थात् 36 में से 21 गुणों का निर्धारण नक्षत्रों के आधार पर ही होता है, जैसे तारा के 3, योनि के 4, गण मैत्री के 6 और नाड़ी के 8। कुल योग 3+4+6+8 = 21।

तारा कूट में वर–वधू के जन्म नक्षत्रों की परस्पर दूरी देखी जाती है।

कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक की गिनती की जाती है। प्राप्त संख्या में 9 का भाग दिया जाता है। विषम संख्या जैसे 3,5,7 शेष बचे तो इसे अशुभ समझा जाता है।

योनि कूट का आधार भी नक्षत्र ही है

विभिन्न नक्षत्रों को अश्व, भैंस, सिंह, बकरी, मेष, वानर, नेवला, सर्प आदि 14 योनियों में विभाजित किया गया है तथा उनमें परस्पर मैत्री अथवा शत्रुता आरोपित की गयी है। यदि वर–कन्या की योनियों में मैत्री है तो इसके चार गुण प्राप्त माने जाते हैं।

इसी तरह गण निर्धारण का आधार भी नक्षत्र हैं।

विभिन्न नक्षत्रों को देव, मनुष्य एवं राक्षस गणों में विभाजित किया गया है। जातक का जो जन्म नक्षत्र होता है, वह जिस वर्ग के अंतर्गत आता है, उसे ही वर या कन्या का गण माना जाता है।

देव, राक्षस एवं मनुष्य गण में मैत्री, समता और शत्रुता के भाव आरोपित कर गणों की अनुकूलता–प्रतिकूलता देखी जाती है।

जब वर–कन्या का गण एक ही होता है तो 6 गुण प्राप्त माने जाते हैं। यह विश्वास किया जाता है कि गण एक होने पर परस्पर मैत्री होगी।

यदि वर–वधू में से एक का गण देव तथा दूसरे का मनुष्य हो तो मध्यम प्रीति का फलादेश किया जाता है। इसके गुण मिलते हैं।

इसी प्रकार वर–कन्या में से यदि किसी का गण मनुष्य हो और दूसरे का राक्षस तो इसे घोर अशुभ माना जाता है। किसी एक की मृत्यु का भी फलादेश कहा गया है। एक का देव तथा दूसरे का राक्षस होने पर दोनों में परस्पर वैर भाव बना रहता है।

मेलापक में नाड़ी कूट को सर्वाधिक गुण दिये गये हैं। विभिन्न नक्षत्रों का आदि, मध्य, अंत नाड़ी में विभाजन किया गया है। यह आयुर्वेद की प्रकृति नाड़ी वात, पित्त, कफ से मिलती है।

एक ओर जहाँ वर–कन्या के गणों का एक होना शुभ माना गया है, वहीं दोनों की नाड़ियों के एक होने पर विवाह की वर्जना की गयी है।

यहाँ प्रस्तुत है, नक्षत्रों का आदि, मध्य, अंत नाड़ी में विभाजनः–

आदि नाड़ी : अश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, उ.फा., हस्त, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद

मध्य नाड़ी : भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पू.फा. चित्रा, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद

अंत नाड़ी : कृत्तिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, स्वाति, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, रेवती

सर्वतोभद्र चक्र क्या है ?

'फल दीपिका' के अनुसार, यह चक्र तीनों लोकों को प्रकाशमान करने वाला है। सर्वतोभद्र चक्र का उपयोग गोचर फल कहने के लिए किया जाता है। इस सर्वतोभद्र चक्र का निर्माण इस प्रकार किया जाता है–

सर्वप्रथम दस खड़ी एवं दस रेखाएं बना कर 81 वर्गों वाला एक चक्र तैयार किया जाता है। इसमें शीर्षस्थ अर्थात् ऊपर वाली दिशा को उत्तर, उसके बाद दायीं दिशा को पूर्व, बायीं दिशा को पश्चिम तथा ठीक सामने वाली दिशा को दक्षिण दिशा माना जाता है।

इसके उपरांत उत्तर पूर्व कोण में 'अ', दक्षिण पूर्व में 'आ' दक्षिण पश्चिम में इ एवं पश्चिमोत्तर कोण में 'ई' अक्षर लिखे जाते हैं।

ग्रहों की महादशा एवं नक्षत्र

भारतीय ज्योतिष में अनेक प्रकार की दशाओं के उल्लेख मिलते हैं। किसी भी जातक के जीवन में कब कौन–सा ग्रह प्रमुख प्रभाव डालते हुए शुभ या अशुभ फल देगा, यह उस व्यक्ति के जीवन में आने वाली ग्रहों की महादशा से जानने का प्रयत्न किया जाता है।

इन सभी दशाओं में नक्षत्र महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यहाँ प्रस्तुत है, विभिन्न दशाओं का परिचय

किसी भी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा जिस नक्षत्र में होता है, उसी नक्षत्र के स्वामी ग्रह की दशा का उसके जीवन में प्रारंभ मान लिया जाता है।

जैसा कि पहले कहा गया है, नक्षत्र 27 होते हैं। इन सत्ताइस ग्रहों का स्वामित्व तो ग्रहों को दिया गया है। यथा—यहाँ केवल विशोंतरी में हैं ये स्वामी।

सूर्य के स्वामित्व के नक्षत्र हैं : कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी एवं पूर्वाषाढ़ा।

चंद्रमा का जिन नक्षत्रों पर आधिपत्य माना गया है, वे हैं—रोहिणी, हस्त एवं श्रवण।

मंगल के नक्षत्र हैं—मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा।

बुध के नक्षत्र हैं—आश्लेषा, ज्येष्ठा एवं रेवती।

गुरु के नक्षत्र हैं—पुनर्वसु, विशाखा तथा पूर्वाभाद्रपद।

शुक्र के नक्षत्र हैं—भरणी, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा।

शनि को जिन नक्षत्रों का स्वामित्व प्रदान किया गया है, वे हैं—पुष्य, अनुराधा एवं उत्तरा भाद्रपद।

राहु के नक्षत्र हैं—आर्द्रा, स्वाति तथा शतभिषा।

केतु के नक्षत्रों में अश्विनी, मघा एवं मूल की गणना होती है।

विंशोत्तरी दशा पद्धति में जातक की आयु को 120 वर्ष की मान कर विभिन्न ग्रहों का दशाओं में इन वर्षों का काल—विभाजन किया गया है।

जैसे—

सूर्य की महादशा 6 वर्ष

चंद्र की महादशा 10 वर्ष

मंगल की महादशा 7 वर्ष

राहु की महादशा 18 वर्ष

गुरु की महादशा 16 वर्ष

शनि की महादशा 19 वर्ष

बुध की महादशा 17 वर्ष

केतु की महादशा 7 वर्ष

शुक्र की महादशा 20 वर्ष

इस तरह यदि किसी जातक का जन्म कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी या पूर्वाषाढ़ा में होगा तो जन्म के समय उसे सूर्य की 6 वर्ष की दशा का प्रारंभ माना जाएगा।

इसी तरह यदि रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में जन्म होगा तो चंद्र की 20 वर्ष की महादशा लगेगी।

इसी प्रकार मृगशिरा, चित्रा या धनिष्ठा नक्षत्र में जन्म होने पर मंगल की 6 वर्ष की।

आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में जन्म होने पर बुध की 17 वर्ष की।

पुनर्वसु, विशाखा या पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में जन्म होने पर गुरु की 16 वर्ष की।

भरणी, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म होने पर शुक्र की 20 वर्ष की।

पुष्य, अनुराधा या उत्तराभाद्र नक्षत्र में जन्म होने पर शनि की 19 वर्ष की।

आर्द्रा, स्वाति या शतभिषा नक्षत्र में जन्म होने पर राहु की 18 वर्ष की, तथा

अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र में जन्म होने पर केतु की 7 वर्ष की दशा का प्रारंभ माना जाएगा।

विंशोत्तरी महादशा में ग्रहों की महादशा का क्रम इस प्रकार रखा गया है–कारण? इसका आधार नक्षत्र है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु एवं शुक्र।

दूसरे शब्दों में यदि सूर्य की दशा में जातक का जन्म हुआ तो आने वाले जीवन में ग्रहों की महादशाएं उपरोक्त क्रम में आएंगी।

अब यदि किसी जातक का जन्म गुरु की महादशा में होता है तो उपरोक्त क्रम के अनुसार गुरु के बाद शनि की, फिर बुध केतु, शुक्र, सूर्य, चंद्र, मंगल, राहु की दशाएं आएंगी। यही सिद्धांत अन्य ग्रहों की जन्म समय की महादशा के बाद लागू होगा।

इस तरह हम देखते हैं कि महादशा के निर्धारण में नक्षत्रों की एक विशिष्ट भूमिका होती है।

हम नक्षत्र का चरण ज्ञान कैसे जान सकते हैं ?

नक्षत्र के चरण ज्ञान की विधि इस प्रकार है :–

किसी भी नक्षत्र के कुल समय अर्थात् भभोग मान को चार से विभाजित करने पर उस एक चरण का समय पर भोग जाना जा सकता है। चार से भाग इसलिए कि प्रत्येक नक्षत्र में चार चरण माने गये हैं, या उसके अंशों को चार हिस्सों में बांटा गया है।

उदाहरण के लिए किसी का जन्म कालिक भभोग या पूर्ण समय 60 घड़ी 40 पल है तो उसके नक्षत्र का चरण मान इस प्रकार निकाला जा सकता है:–

$$\frac{60.40}{4} = 15.10$$

इस तरह प्रथम चरण = 15.10 तक

दूसरा चरण = 30.20 तक

तीसरा चरण = 45.30 तक

तथा चौथा चरण = 60.40 तक होगा।

नक्षत्र के चरण ज्ञान का क्या महत्त्व है ?

इसके लिए हमें महादशा के सिद्धांत को समझना पड़ेगा। इसकी चर्चा विस्तृत रूप से ही की जा सकती है। फिर भी सुविधा के लिए हम आवश्यक जानकारी सार रूप में ही दे रहे हैं।

ज्योतिष शास्त्र में चंद्र राशि, जिसे आम तौर पर जन्म राशि भी कहते हैं, का अर्थ है, किसी भी जातक के जन्म के समय चंद्रमा किस नक्षत्र में स्थित था। (यह नक्षत्र जिस राशि के अंतर्गत आता है, उस राशि को ही उस व्यक्ति की चंद्र राशि या जन्म राशि मान लिया जाता है।)

हमने यह देखा कि प्रत्येक नक्षत्र का एक ग्रह–विशेष स्वामी होता है। जैसा अश्विनी नक्षत्र का केतु, भरणी का शुक्र।

दशाएं भी कई प्रकार की हैं। उत्तर भारत में विंशोत्तरी दशा का प्रचलन है।

विंशोत्तरी दशा में जातक की आयु 120 वर्ष मान कर उसका विभिन्न ग्रहों की महादशाओं में विभाजन किया जाता है। ग्रहों की इन दशाओं की अवधि समान नहीं है।

निम्नलिखित तालिका से पाठक यह भी जान जाएंगे कि किस नक्षत्र में जन्म लेने पर किस ग्रह विशेष की दशा में जन्म माना जाएगा।

नक्षत्र	स्वामी ग्रह	दशा काल
कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा	सूर्य	6 वर्ष
रोहिणी, हस्त, श्रवण	चंद्र	10 वर्ष
मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा	मंगल	7 वर्ष
आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा	राहु	18 वर्ष
पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद	गुरु	16 वर्ष

पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद	शनि	19 वर्ष
आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती	बुध	17 वर्ष
मघा, मूल, अश्विनी	केतु	7 वर्ष
पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, भरणी	शुक्र	20 वर्ष

प्रश्न किया जा सकता है कि क्या किसी नक्षत्र विशेष में जन्म लेने पर जातक को उसके स्वामी ग्रह की पूरी अवधि की दशा लगती है या उसका कुछ भाग।

क्योंकि कुंडलियों में अक्सर 'भुक्त' एवं भोग्य काल का उल्लेख होता है। तो 'भुक्त' एवं 'भोग्य' से क्या तात्पर्य है ?

यह कोई पेचीदा विषय नहीं है। 'भुक्त' का सामान्य अर्थ है, भोगा हुआ। और भोग्य का अर्थ है–जिसे भोगा जाना है।

नक्षत्रों का कारकत्व

भारतीय ज्योतिष में जिस तरह ग्रहों को कुछ बातों, कुछ वस्तुओं का कारक माना गया है, उसी प्रकार नक्षत्रों का भी कारकत्व निर्धारित किया गया है। कारक का सामान्य अर्थ है–

यहाँ हम विभिन्न नक्षत्रों के कारकत्व का परिचय प्रस्तुत कर रहे हैं–

अश्विनी (केतु) : वैद्य, सेवक, वैश्य, स्वरूपवान पुरुष, अश्व, अश्वारोही।

भरणी (शुक्र) : आसक्ति युक्त, गुण हीन व्यक्ति, मांस भक्षी, क्रूर कर्मी।

कृत्तिका (सूर्य) : द्विज, पुरोहित, ज्योतिषी, कुंभकार (कुम्हार) नाई, श्वेत पुष्प।

रोहिणी (चंद्र) : राजा, धन–संपन्न व्यक्ति, योगी, कृषक, दुकानदार, सुव्रती।

मृगशिरा (मंगल) : कामी, वस्त्र, पद्म, फल–फूल वनचर मृग, नभचर (पक्षी)

आर्द्रा (राहु) : भरणी –उच्चाटण प्रिय, मिथ्याभाषी, परनारी आसक्त।

पुनर्वसु (गुरु) : राज्य सेवक, बुद्धिमान, यशस्वी, धनी, सत्यवादी, उदार।

पुष्य (शनि) : मंत्रज्ञ, मछुआरे, यज्ञ के प्रति आसक्त, साधु, अन्न, (जौं गेहूँ, चावल) ईख।

आश्लेषा (बुध) : वैद्य, परधनहर्ता, कंद–मूल, कीट–सर्प, विष–तुष धान्य।

मघा (केतु) : स्त्री द्वेषी, पितृभक्त, वैश्य, पर्वतवासी, धन–धान्य संपन्न, अन्न–भंडार।

पूर्वा फाल्गुनी (शुक्र) : गायक, नटनी, शिल्पी, नमक, कपास।

उत्तरा फाल्गुनी (सूर्य) : पवित्र, विनयी, दानी, शास्त्रज्ञ, स्वधर्मानुरागी।

हस्त (चंद्र) : वेदज्ञ, ज्योतिषी, वणिक, मंत्री, शिल्पी, चोर।

चित्रा (मंगल) : गणितज्ञ, मणि, अंगराग।

स्वाति (राहु) : निपुण व्यापारी, अस्थिर स्वभाव वाले, मृग, अश्व, पृथ्वी।

विशाखा (गुरु) : अग्निमूलक, अन्न–मूंग, उड़द, चने, तिल, लाल वर्णी फूल।

अनुराधा (शनि) : साधु–संतों के प्रति प्रेम वाले, शूरवीर, महानायक।

ज्येष्ठा (बुध) : कुलीन, यशस्वी, धनी, विजय कामी नरेश, सेनानायक, परधन–हर्ता।

मूल (केतु) : धनी, वैद्य, फूल, फल, बीज और कंदमूल से आजीविका चलाने वाले (माली)।

पूर्वाषाढ़ा (शुक्र) : सत्यवादी, धनी, मृदु, सेतु–निर्माता।

उत्तराषाढ़ा (सूर्य) : तेजस्वी, वीर, देवभक्त, मंत्री, मल्ल, अश्व।

श्रवण (चंद्र) : भगवद् भक्त, सत्यवादी, कर्मठ, परिश्रमी, मायावी।

धनिष्ठा (मंगल) : शांतिप्रिय, दानी, स्त्री द्वेषी, मान रहित।

शतभिषा (राहु) : कलाकार, मछलीमार, शकुन जानने वाले

पूर्वाभाद्रपद (गुरु) : हिंसक, नीच, पशुपालक, शठ।

उत्तराभाद्रपद (शनि) : दानी, वैभवशाली, तपस्वी, पाखंडी।

रेवती (बुध) : वैश्य, केवट, जल में उत्पन्न वस्तु पर आश्रित।

क्या राशियों की तरह नक्षत्रों की भी शरीर में स्थिति मानी गयी है ?

हाँ, राशियों की भांति शरीर के विभिन्न अंगों में नक्षत्रों की स्थिति मानी गयी है। ऐसा माना जाता है कि किसी अशुभ ग्रह का नक्षत्र पर प्रभाव, शरीर के उस अंग को भी प्रभावित करता है, जहाँ उस नक्षत्र विशेष की स्थिति मानी गयी है।

नक्षत्रों द्वारा प्रभावित होने वाले शरीर के अंग इस प्रकार हैं :–

1. अश्विनी : पैरों का ऊपरी भाग
2. भरणी : पैरों का निचला भाग

3. कृत्तिका : सिर
4. रोहिणी : माथा (ललाट)
5. मृगशिरा : भौंहे
6. आर्द्रा : नेत्र
7. पुनर्वसु : नाक
8. पुष्य : चेहरा
9. आश्लेषा : कान
10. मघा : ओंठ एवं ठुड्डी
11. पूर्वा फाल्गुनी : दायां हाथ
12. उत्तर फाल्गुनी : बायां हाथ
13. हस्त : हाथों की अंगुलियां
14. चित्रा : गर्दन (गला)
15. स्वाति : फेफड़े
16. विशाखा : वक्षस्थल
17. अनुराधा : उदर
18. ज्येष्ठा : दायां भाग
19. मूल : बायां हाथ
20. पूर्वाषाढ़ा : पृष्ठ भाग (पीठ)
21. उत्तराषाढ़ा : कमर भाग (कमर)
22. अभिजित : मस्तिष्क
23. श्रवण : गुप्तांग
24. धनिष्ठा : गुदा
25. शतभिषा : दायीं जांघ
26. पूर्वाभाद्रपद : बायीं जांघ
27. उत्तराभाद्रपद : पिंडली का अगला हिस्सा
28. रेवती : एड़ी (घुटना भी)

आपने पहले 27 नक्षत्रों की चर्चा की है। लेकिन यहाँ एक अतिरिक्त नक्षत्र अभिजित का भी समावेश है ? ऐसा क्यों ?

ज्योतिष शास्त्र में आम तौर पर 27 नक्षत्रों का ही प्रचलन है पर ज्योतिर्विद उत्तराषाढ़ा नक्षत्र की 15 और श्रवण नक्षत्र की शुरू की चार घड़ियों को मिलाकर 19 घड़ी के अभिजित नक्षत्र की भी नक्षत्र मंडल में गणना करते हैं।

19 घटियों वाला अभिजित नक्षत्र सभी कार्यों के लिए शुभ माना गया है। मध्य रात्रि व दोपहर में लगभग अभिजीत मुहुर्त होता है। भगवान श्री राम और भगवान कृष्ण इसी मुहुर्त में पैदा हुए थे। सिक्ख धर्म के सरदार लोग दोपहर में इसी मुहुर्त में शादी करते हैं।

क्या कोई ग्रह किसी नक्षत्र में होने से एक ही फल देता है या उस नक्षत्र में भी उसके फलों में अंतर आ जाता है ? ऐसा होता है तो क्यों ?

किसी भी नक्षत्र में कोई ग्रह एक जैसा फल नहीं देता। ग्रह विशेष नक्षत्र के किस चरण में स्थित है और उस चरण विशेष का स्वामी ग्रह कौन है, उस चरण–स्वामी ग्रह से नक्षत्र स्थित ग्रह के कैसे संबंध हैं, दोनों शुभ हैं, दोनों अशुभ हैं, या दोनों में मैत्री है या शत्रुता है, आदि का अध्ययन कर फल का निर्णय किया जाता है।

नक्षत्रों के चरणों के स्वामी–ग्रहों के बारे में बताएं।

प्रत्येक नक्षत्र की चर्चा करते हुए हमने आगे के पृष्ठों में उनके चरणों के स्वामी–ग्रहों की भी जानकारी दी है। 'जातक सारदीप' का अध्ययन हमें इस विषय को समझने में सहायक हो सकता है। उसमें बताया गया है कि किस नक्षत्र–विशेष के चरण विशेष में स्थित ग्रह उस चरण के स्वामी ग्रह के कारण कैसा प्रभाव डालता है।

निस्संदेह यह एक सूक्ष्म अध्ययन है। और हमें ज्योतिष ग्रंथ कर्ताओं के अध्ययन, शोध पर आधारित फल निर्णयों के पीछे छिपी वैज्ञानिकता और तार्किकता का कायल होना ही पड़ता है।

यहाँ सारांश में नक्षत्र के चरणों के स्वामी–ग्रहों का परिचयः पाठक जब आगे विभिन्न नक्षत्रों के चरणों में स्थित ग्रहों के फलों को पढ़ें, तो उसके साथ उस चरण–विशेष के स्वामी–ग्रह के गुण–धर्मों के संदर्भ में वर्णित फल को कसौटी पर कसने का प्रयत्न करें।

नक्षत्र स्वामी ग्रह चरण एवं स्वामी ग्रह

अश्विनी केतु: प्रथमः मंगल, द्वितीयः शुक्र, तृतीयः बुध, चतुर्थः चंद्र
भरणी शुक्र, प्रथमः सूर्य, द्वितीयः बुध, तृतीयः शुक्र, चतुर्थः मंगल
कृत्तिका सूर्य, प्रथमः गुरु, द्वितीयः शनि, तृतीयः शनि, चतुर्थः गुरु
रोहिणी चंद्र, प्रथमः मंगल, द्वितीयः शुक्र, तृतीयः बुध, चतुर्थः चंद्र
मृगशिरा मंगल, प्रथमः सूर्य, द्वितीयः बुध, तृतीयः शुक्र, चतुर्थः मंगल

आर्द्रा राहु, प्रथम:गुरु, द्वितीय: शनि, तृतीय: शनि, चतुर्थ: गुरु
पुनर्वसु गुरु, प्रथम: मंगल, द्वितीय: शुक्र, तृतीय: बुध, चतुर्थ: चंद्र
पुष्य शनि, प्रथम: सूर्य, द्वितीय:'बुध, तृतीय: शुक्र, चतुर्थ: मंगल
आश्लेषा बुध, प्रथम: गुरु, द्वितीय: शनि, तृतीय: शनि, चतुर्थ: गुरु
मघा केतु, प्रथम: मंगल, द्वितीय: शुक्र, तृतीय: बुध, चतुर्थ: चंद्र
पूर्वा फाल्गुनी शुक्र, प्रथम: सूर्य, द्वितीय: बुध, तृतीय: शुक्र, चतुर्थ: मंगल,
उत्तरा फाल्गुनी सूर्य, प्रथम: गुरु, द्वितीय: शनि, तृतीय: शनि, चतुर्थ गुरु
हस्त चंद्र, प्रथम: मंगल, द्वितीय: शुक्र, तृतीय: बुध, चतुर्थ: चंद्र
चित्रा मंगल, प्रथम: सूर्य, द्वितीय: बुध, तृतीय: शुक्र, चतुर्थ: मंगल
स्वाति राहु, प्रथम: गुरु, द्वितीय: शनि, तृतीय: शनि, चतुर्थ: गुरु
विशाखा गुरु, प्रथम: मंगल, द्वितीय: शुक्र, तृतीय: बुध, चतुर्थ: चंद्र
अनुराधा शनि, प्रथम: सूर्य, द्वितीय: बुध, तृतीय: शुक्र, चतुर्थ: मंगल
ज्येष्ठा बुध, प्रथम: गुरु, द्वितीय: शनि, तृतीय: शनि, चतुर्थ: गुरु
मूल केतु, प्रथम: मंगल, द्वितीय: शुक्र, तृतीय: बुध, चतुर्थ: चंद्र
पूर्वाषाढ़ा शुक्र, प्रथम: सूर्य, द्वितीय: बुध, तृतीय: शुक्र, चतुर्थ: मंगल
उत्तराषाढ़ा सूर्य, प्रथम: गुरु, द्वितीय: शनि, तृतीय: शनि, चतुर्थ: गुरु
श्रवण चंद्र, प्रथम: मंगल, द्वितीय: शुक्र, तृतीय: बुध, चतुर्थ: चंद्र
धनिष्ठा मंगल, प्रथम: सूर्य, द्वितीय: बुध, तृतीय: शुक्र, चतुर्थ: मंगल
शतभिषा राहु, प्रथम: गुरु, द्वितीय: शनि, तृतीय: शनि, चतुर्थ: गुरु
पूर्वा भाद्रापद गुरु, प्रथम: मंगल, द्वितीय: शुक्र, तृतीय: बुध, चतुर्थ: चंद्र
उत्तरा भाद्रापद शनि, प्रथम: सूर्य, द्वितीय: बुध, तृतीय: शुक्र, चतुर्थ: मंगल
रेवती बुध, प्रथम: गुरु, द्वितीय: शनि, तृतीय: शनि, चतुर्थ: गुरु

ग्रहों को चरणों का स्वामित्व किस आधार पर दिया गया, यह एक विचारणीय प्रश्न है ? ज्योतिष शास्त्र को पढ़ते समय मन में ऐसी प्रत्येक जिज्ञासाएं कभी–कभी सनातन प्रश्न का रूप ले लेती हैं। उनका समाधान कोई अनुभवी, अध्ययन एवं शोधप्रिय ज्योतिष ही दे सकता है।

हमारा प्रयत्न यही है कि हम पाठकों के लिए अध्ययन योग्य सभी सामग्री एक जगह रखें ताकि प्रबुद्ध पाठक इस संबंध में अधिक अध्ययन एवं शोध के लिए प्रवृत्त हों।

नक्षत्रों के नौ भेद

नक्षत्रों की तारा का अर्थ: (कौन सी तारा जन्म की मुहुर्त की)
तारा नौ प्रकार की मानी गयी है :–

1. जन्म, 2. सम्पत, 3. विपत, 4. क्षेम, 5. प्रत्यरि, 6. साधक, 7. वध 8. मित्र, 9. अतिमित्र। (केवल मुहुर्त शास्त्रों में)

नाम ही इन ताराओं का अर्थ एवं महत्व स्पष्ट कर देते हैं। जन्म नक्षत्र 1 से इष्ट दिवस तक नक्षत्र संख्या गिनकर उसमें नौ का भाग देने पर शेष तुल्य तारा प्राप्त होती है। 3, 5, 7 संज्ञा वाली ताराओं को छोड़कर शेष ताराएं अर्थात् 1, 2, 4, 6, 8, 0 ताराएं शुभ होती हैं।

3, 5, 7 ताराओं में यात्रा, विवाह, आदि प्रतिबंधित माने गये हैं।

नक्षत्रों का नेष्ट काल

किसी भी व्यक्ति के जन्म नक्षत्र के संदर्भ में कुछ अन्य नक्षत्रों के चरण विशेष उस व्यक्ति के लिए अशुभ माने गये हैं। जैसे–जन्म नक्षत्र से ग्यारहवें, बारहवें एवं इक्कीसवें नक्षत्र के प्रथम चरण को घातक या अशुभ माना गया है।

उदाहरण के लिए यदि किसी का जन्म अश्विनी नक्षत्र में हुआ है तो उसके लिए अश्विनी से ग्यारहवें नक्षत्र में पूर्वा फाल्गुनी एवं बारहवें नक्षत्र में उत्तरा फाल्गुनी तथा इक्कीसवें नक्षत्र में उत्तराषाढा का पहला चरण अशुभ होगा।

इसी तरह किसी भी जन्म नक्षत्र से चौथे एवं चौदहवें नक्षत्रों का दूसरा चरण तथा सातवें, सोलहवें एवं चौबीसवें नक्षत्र का तीसरा चरण तथा सत्रहवें नक्षत्र का चौथा चरण अशुभ होगा।

4, 11, 17, 24 सुविधा के लिए सूत्र रूप में–

जन्म नक्षत्र से 11, 12, 21वें नक्षत्र का प्रथम चरण

जन्म नक्षत्र से 4, 14वें नक्षत्र का दूसरा चरण

जन्म नक्षत्र से 7, 16, 24वें नक्षत्र का तीसरा चरण

जन्म नक्षत्र से 17वें चरण का चौथा चरण

पाठक चाहें तो किसी भी वांछित वर्ष में इन नक्षत्रों के चरणों का काल लिख लें और इन चरणों के अशुभ समय में सावधान रहें। पंचांगों में प्रत्येक नक्षत्र का काल समय दिया जाता है।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार किसी भी व्यक्ति का जन्म किसी न किसी नक्षत्र के काल में होता है। व्यक्ति का जन्म जिस नक्षत्र में होता है, उसे आद्य नक्षत्र (आधान नक्षत्र) या आदि नक्षत्र कहते हैं।

आद्य नक्षत्र से दसवें नक्षत्र को कर्म नक्षत्र कहा गया है। (आद्य नक्षत्र भी कर्म नक्षत्र कहलाता है)। इसी तरह इस जन्म नक्षत्र से सोलहवां नक्षत्र सांघातिक नक्षत्र, अठारहवां समुदाय नक्षत्र, तेइसवां वैनाशिक नक्षत्र, पच्चीसवां

मानस नक्षत्र कहलाता है। 19वां नक्षत्र आधान नक्षत्र कहलाता है।

उपरोक्त छह नक्षत्र अशुभ माने गये हैं तथा उनमें शुभ कार्य नहीं करना चाहिए। यदि ये नक्षत्र 'पीड़ित' हैं तो विशेष अशुभ फल मिलते हैं। जैसे आद्य नक्षत्र पीड़ित हो तो रोगादि के अतिरिक्त धनक्षय होता है। कर्म नक्षत्र आदि अशुभ स्थिति में है तो संकल्प पूरे नहीं होते, सार रूप में कर्मों का क्षय या हानि होती है। सोलहवें नक्षत्र–साधातिक नक्षत्र के पीड़ित होने से संबंधियों के व्यवहार से हानि उठानी पड़ती है। अठारहवें नक्षत्र समुदाय नक्षत्र के पीड़ित होने से सुख में न्यूनता आती है। तेइसवें नक्षत्र वैनाशिक नक्षत्र के पीड़ित होने पर व्याधि, मृत्यु आदि के योग बनते हैं तथा पच्चीसवें नक्षत्र मानस नक्षत्र के पीड़ित होने पर व्यक्ति मानसिक क्लेश, चिंताओं से मुक्त रहता है।

उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति का जन्म अश्विनी नक्षत्र में हुआ है तो यह नक्षत्र अर्थात् अश्विनी नक्षत्र उसके लिए आद्य नक्षत्र होगा।

अश्विनी से दसवां नक्षत्र मघा कर्म नक्षत्र, सोलहवां विशाखा नक्षत्र साधातिक नक्षत्र, अठारहवां ज्येष्ठा समुदाय नक्षत्र, तेइसवां धनिष्ठा वैनाशिक नक्षत्र और पच्चीसवां पूर्वाभाद्रपद मानस नक्षत्र माना गया है।

अन्य नक्षत्रों में जन्म होने पर इसी क्रम से उपरोक्त नक्षत्रों का पता लगाया जा सकता है।

नक्षत्र पंचक

ज्योतिष शास्त्र में पांच नक्षत्रों को पंचक नक्षत्र की संज्ञा दी गयी है। इन नक्षत्रों में कुछ कार्यों को करने का निषेध है। जैसे–आवास निर्माण के लिए लकड़ी आदि का क्रय या संग्रह, दक्षिण दिशा की यात्रा, मृतक का दाह, घर छवाना या छत डालना, खाट बुनवाना, चूल्हा बनाना, झाड़ू खरीदना आदि।

ये पांच नक्षत्र हैं–

1. धनिष्ठा, 2. शतभिषा, 3. पूर्वाभाद्रपद, 4. उत्तराभाद्रपद, 5. रेवती। इनमें हानि या लाभ पाँच गुना होता है।

नक्षत्र एवं रोग

नक्षत्र के कारण व्यक्ति रोगादि से भी पीड़ित होता है तथा उसके निवारण के लिए जड़ी–विशेष को शरीर पर धारण करने एवं नक्षत्र के देवता का मंत्र जाप करने से रोग दूर हो जाते हैं, ऐसा विश्वास है।

पाठकों के लाभार्थ यहाँ सारांश में प्रस्तुत है, विभिन्न नक्षत्रों के पीड़ित होने के कारण हो सकने वाले रोग आदि एवं निवारण के उपाय:–

अश्विनीः

वायु प्रकोप, अनिद्रा, मतिभ्रम, बुखार।

उपचारः चिरचिटे की जड़ को चौहरा कर भुजदंड में बांधने से लाभ।

मंत्रः *ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्।* ॐ अश्विनीकुमाराभ्यो नमः

जप संख्याः 5,000 बार।

भरणीः

आलस्य, तीव्र ज्वर, शरीर–प्रकंपन।

उपचारः आक के पेड़ की जड़ को तिहरा कर पहनने से लाभ।

मंत्रः *ॐ यमाय त्वा मरखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपते देवस्त्वा सविता मध्वा नक्तु।*

पृथिव्या स्पशुस्पाहि अर्चिरसि शोचरसि तपोसि। ॐ यमाय नमः।

जप संख्याः 10,000 बार।

कृत्तिकाः

नेत्र पीड़ा, अनिद्रा, शरीर में जलन, घुटने में दर्द।

उपचारः कपाल की जड़ तिहरा कर भुजदंड में बांधे।

मंत्रः *ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति। ॐ अग्नये नमः।*

जप संख्याः 10,000 बार।

रोहिणीः

ज्वर, सिरदर्द, घबराहट।

उपचारः चिरचिटे की जड़ को तिहरा बनाकर बांह में पहनें।

मंत्रः *ॐ ब्रह्मज्ज्ञानं प्रथम पुरस्ता द्विसीमत; सुरुचो वेन आवः।*
सुबुधन्या उपमा अस्यविष्ठा संतश्च योनिमतश्च विवः
ॐ ब्रह्मणे नमः

जप संख्याः 5,000 बार।

मृगशिराः

नजला, जुकाम, खांसी, ताप, मलेरिया, जलभय।

उपचारः जयंती घास की जड़ को चौहरा कर पहनें।

मंत्रः *ॐ इमं देवा असपत्नं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाव महते जानराज्यायेन्द्रास्येन्द्रियाथ।*
इम मनुष्य पुत्रमभ्रष्यै पुत्र मस्य विष एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्माणामां राजा। ॐ चंद्रमसे नमः

जप संख्याः 10,000 बार।

आर्द्राः

ज्वर, नजला, अनिद्रा, आधाशीशी का दर्द,

उपचारः चंदन का लेप, पीपल की जड़ दुहरी कर दाये हाथ में बांधे।

मंत्रः *ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः।*

बाहुभ्यामुत ते नमः। ॐ रूद्राय नमः।

जप संख्याः 10,000 बार

पुनर्वसुः

बुखार, सिर–कमर में दर्द,

उपचारः आक के पौधे को रविवार को पुष्य नक्षत्र में उखाड़कर चौहरा कर भुजदंड में बांधें।

मंत्रः *ॐ अदितिधौरदितिरन्तरिक्षमद्रितिर्माता स पिता स पुत्रः*

विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदिति जातमदिरर्जनित्वम्

ॐ अदित्याय नमः

जपसंख्याः 10,000 बार

पुष्यः

तीव्र ज्वर, शूल, दर्द–कष्ट

उपचारः कुश की जड़ को चौहरा कर भुजाओं में बांधें।

मंत्रः ॐ बृहस्पते अतियदर्योअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।

पद्दीदयच्छव स ऋतुप्रजातदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम।

ॐ गुरवे नमः

जप संख्याः 10,000 बार।

आश्लेषाः

रोगों का आधिक्य। सर्वांग पीड़ा। सर्प भय, विष भय।

उपचारः पटोलमूल को पंचहेरी कर भुजाओं में बांधे।

मंत्रः *ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथेवीमनु ये अंतरिक्षे ये दिवि तेभ्यः*

सर्पेभ्यो नमः। ॐ सर्पेभ्यो नमः।

जप संख्याः 10,000 बार।

मघाः

आधाशीशी का दर्द।

उपचारः भृंगराज की जड़ को चौहरा कर दोनों भुजाहों में बांधें।

मंत्रः *ऊँ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधाविभ्यः स्वाधा नमः।*

प्रपितामहेभ्य स्वाधायिभ्यः स्वधा नमः, अक्षन्न पितरोमीमदंत पितरोऽती तृपंतंपितरः पितरः शुन्धध्वम्। ऊँ पितरेभ्यो नमः।

जप संख्याः 10,000 बार।

पूर्वा फाल्गुनीः

बुखार, खांसी, नजला, पसली चलना।

उपचारः नीले फूल की कटैली की जड़ को तिहरा कर भुजाओं में बांधे।

मंत्रः *भगप्रणेतर्भगसत्य राधो भगे मां धियमुदवाददन्नः भगणोजनगो गोभिरश्वैर्भगप्रनृभिनृर्वतेस्याम। ऊँ भगाय नमः।*

जप संख्याः 10,000 बार।

उत्तरा फाल्गुनीः

बुखार, सिरदर्द, वायु प्रकोप। पितृ पीड़ा।

उपचारः श्वेत आक की जड़ भुजाओं में बांधें।

मंत्रः *देव्यावहवर्यू आगतं रथेन सूर्यत्वचा। मध्वा यज्ञ समंजाये तं प्रत्नया यं वेनचित्रम देवानाम।। ऊँ अर्यम्णे नमः।*

जप संख्याः 10,000 बार। (कुछ विद्वान इसकी संख्या 5000 भी मानते हैं।)

हस्तः

उदर दर्द, पैरों में दर्द, पसीने का आधिक्य।

उपचारः जावित्री की जड़ भुजाओं में बांधें।

मंत्रः *ऊँ विभ्राड़बृहस्पतिबतु सौम्यं मज्वायुर्दधंद्यज्ञपतावविहुँतम वातजूतो यो अभि रक्षतित्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा विराजति।*

ऊँ सवित्रे नमः।

जप संख्याः 5,000 बार।

चित्राः

अनेक रोगों की आशंका।

उपचारः असगंध की जड़ भुजाओं में धारण करें।

मंत्रः *ऊँ त्वष्टानुरोयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धना द्विपदाच्छन्दऽइन्द्रयमक्षा गौनविमोदधु। ऊँ विश्वकर्मणे नमः।*

जप संख्याः 10,000 बार। (कुछ विद्वजन 5000 भी मानते हैं)

स्वातिः

वायु प्रकोप, पेट में अफारा, टांगों में दर्द।

उपचारः जावित्री की जड़ भुजदंड में बांधें।

मंत्रः *ऊँ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि मित्युत्वान सोम पीतये। ऊँ वायवे नमः।*

जप संख्याः 10,000 बार। (कुछ विद्वजन 5000 भी मानते हैं)

विशाखाः

पूरे शरीर में दर्द। फोड़े–फुंसी आदि।

उपचारः चौटली की जड़ को भुजदंड में बांधे।

मंत्रः *ऊँ इंद्राग्नी आगतं सुतं गीर्भिर्नमो वरेण्यम् अस्पातं धियेषिता। ऊँ इन्द्राग्निभ्यां नमः*

जप संख्याः 10,000 बार।

अनुराधाः

तेज बुखार, सिर–दर्द।

उपचारः गुलाब की जड़ भुजदंडों में बांधें।

मंत्रः *ऊँ नमो मित्रंस्य वरुणस्य चक्षसे महादेवाय तदृतं सर्पयतं दूरदृशे देवजाताय केतवे, दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत। ऊँ मित्राय नमः।*

जप संख्याः 10,000 बार।

ज्येष्ठाः

पित्त प्रकोप, चित्त में व्याकुलता।

उपचारः चिरचिटे की जड़ चौहरी कर बांधें।

मंत्रः *ऊँ त्रातारभिन्द्रमवितारमिंद्रं हवे हवे सुहवं शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र स्वस्ति नो मधवा धात्विन्द्रः। ऊँ शक्राय: नमः*

जप संख्याः 10,000 बार। (कुछ विद्वान 5000 भी मानते हैं)

मूलः

सन्निपात ज्वर, उदर दर्द, मंद रक्तचाप।

उपचारः मंदार की जड़ हाथ में बांधे।

मंत्र: *ॐ मातेव पुत्रं पृथ्वी पुरीष्यमग्नि स्वे योनावभारखा, ता विश्वदेव ऋतुभि: संवदानप्रजापतिर्विश्व कर्म विमञ्चतु।*
ॐ निऋतये नम:
जप संख्या: 7,000 बार।

पूर्वाषाढ़ा:

सिर में दर्द, शरीर में पीड़ा, कंपन।
उपचार: कपास की जड़ भुजदंड में धारण करें।
मंत्र: *ॐ अबाधमपकिल्विषमपकृत्यामपोरप: अपामार्गत्वमस्भदषदु:ष्वप्यं सुव।*
ॐ अद्भ्यो नम:।
जप संख्या: 5,000 बार।

उत्तराषाढ़ा:

कटि पीड़ा, गठिया, प्रलाप की मन:स्थिति।
उपचार: कपास की जड़ चौहरी कर हाथ में बांधें।
मंत्र: *ॐ विश्वेदेवा श्रृणुतेमं हवं ये मे अंतरिक्षेय उपद्यविष्ठा ये अग्निजिव्हा उतवा य जत्रा आसद्यास्भिन यज्ञे वर्हिषि मादयध्वम्।*
ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नम:
जप संख्या: 10,000 बार।

श्रवण:

अतिसार, ज्वर, अनेक पीड़ाएं।
उपचार: चिरचिटे की जड़ चौहरी कर भुजदंड में बांधें।
मंत्र: *ॐ विष्णो रराटमसि विष्णो: श्नपत्रेस्थोविष्णो: स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवम सि विष्णवे त्वा ॐ विष्णवे नम:*
जप संख्या: 10,000 बार।

धनिष्ठा:

रक्तातिसार, ज्वरादि।
मंत्र: *ॐ वसो: पवित्रमसि शतधारं वसो: पवित्रमसि सहस्त्र धारम्।*
देवस्त्वा सविता पुनातु वसो: पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्ष।
ॐ वसुभ्यो नम:।
जप संख्या: 10,000 बार।

शतभिषाः

सन्निपात ज्वर, वातप्रकोप, ज्वर आदि।

मंत्र: ॐ *वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जवीस्यो वरुणस्य ऋतऽसदन्यसि वरुणस्य ऋतमदनमसि वरुणास्य ऋतस्मदनमासीद। ॐ वरुणाय नमः।*

जप संख्याः 10,000 बार।

पूर्वाभाद्रपदः

वमन, चित्त की व्याकुलता।

उपचारः भृंगराज की जड़ हाथों में बांधे।

मंत्रः ॐ *उत नोऽहिर्बुध्न्य श्रणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः। विश्वेदेवा ऋतावधीन वहुवानः स्तुता मंत्रा कविंशस्ता अवन्तु। ॐ अजैकादे नमः।*

जप संख्याः 10,000 बार। (कुछ विद्वजन 5000 भी मानते हैं)

उत्तराभाद्रपदः

अतिसार, पीलिया आदि

उपचारः पीपल की जड़ हाथ में बांधें।

मंत्रः ॐ *शिवो नामासि स्वधितिते पिता नमस्ते अस्तु मामाहिंसीः निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाथ सुप्रजास्त्वाय युवीर्याप। ॐ अहिर्बुध्न्यायः नमः।*

जपसंख्याः 10,000 बार।

रेवतीः

पैरों में पीड़ा, वायु प्रकोप, मतिभ्रम।

उपचारः पीपल की जड़ को तिहरा कर हाथ में बांधे।

मंत्रः ॐ *पूषनतवव्रते वयं नं रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इहस्मसि। ॐ पूष्णे नमः।*

जपसंख्याः 5,000 बार। (कुछ विद्वजन 10,000 भी मानते हैं)

अश्विनी

राशियों में अश्विनी नक्षत्र की स्थिति 0.00 अंशों से 13.20 अंशों तक मानी गयी है।

अश्विनी के भारतीय ज्योतिष शास्त्र में पर्यायवाची नाम हैं, तुरंग, दस्र एवं हय।

यूनानी अथवा ग्रीक उसे 'कैस्टर–पोलक्स' कहते हैं, जबकि अरबी में 'अश शरातन'। चीनी इस नक्षत्र को 'लियू' कहते हैं।

अश्विनी नक्षत्र में तारों की संख्या में मतभेद है। यूनानी, अरबी उसमें दो तारों की स्थिति मानते हैं, जबकि भारतीय ज्योतिष के अनुसार तीन तारों को मिलाकर इस नक्षत्र की रचना की गयी है।

अश्विनी की आकृति अश्व अथवा घोड़े के समान कल्पित की गयी, इसीलिए इस नक्षत्र को यह नाम दिया गया। यों बाद में इनका संबंध देवगण के वैद्य द्वय अश्विनी कुमारों से भी जोड़ दिया गया। अश्विनी नक्षत्र से एक पौराणिक कथा भी जुड़ी हुई है, उसकी आगे चर्चा।

सर्वप्रथम अश्विनी नक्षत्र का ज्योतिषीय परिचयः

अश्विनी नक्षत्र के देवता हैं–अश्विनी कुमार, जबकि स्वामी केतु माना गया है। (केवल विंशोत्तरी दशा में)

गणः देव, योनिः अश्व एवं नाड़ीः आदि है।

नक्षत्र के चरणाक्षर हैं–चू, चे, चो, ला।

यह नक्षत्र प्रथम राशि मेष का प्रथम नक्षत्र है।

(मेष राशि में अन्य नक्षत्र हैं–भरणी के चारों चरण तथा कृत्तिका का एक चरण) यह गंडमूल नक्षत्र कहलाता है।

अश्विनी नक्षत्र से जुड़ी हुई कुछ कथाएं भी हैं। एक कथा के अनुसार सृष्टि के प्रारंभ में ब्रह्मा ने स्वयं को बहुत एकाकी पाया। अपने इसी एकाकीपन को दूर करने के लिए उन्होंने देवों की रचना की। ब्रह्मा द्वारा जिस सर्वप्रथम देव की रचना की गयी, वही अश्विनी है, जिसके दो हाथ हैं।

एक अन्य कथा सूर्य को अश्विनी का पिता मानती है। सूर्य की पत्नी का नाम संज्ञा था। सूर्य की किरणों का ताप न सह सकने के कारण वह भाग कर आर्कटिक प्रदेश में जाकर एक मादा–अश्व के रूप में विचरने लगी। सूर्य ने भी एक अश्व का रूप धर कर संज्ञा का पीछा किया। संज्ञा उसे आर्कटिक प्रदेश में मिली। यहीं दोनों के संयोग से अश्विनी कुमारों का जन्म हुआ। यही अश्विनी कुमार बाद में देवताओं के वैद्य बने।

यह कथा इस एक ज्योतिषीय धारणा को भी पुष्ट करती है कि सृष्टि के प्रारंभ में अपने अक्ष पर घूमती पृथ्वी पर सूर्य किरणें ध्रुवों तक पहुँचा करती। उस समय वसंत संपात अश्विनी नक्षत्र में था। उसी समय पृथ्वी पर जीवन का भी प्रारंभ हुआ।

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे जातक/जातिका

अश्विनी नक्षत्र को समूची मेष राशि का प्रतिनिधित्व करने वाला नक्षत्र माना गया है। मेष राशि का स्वामित्व मंगल को दिया गया है।

'जातक पारिजात' में कहा गया है–

अश्विन्यामति बुद्धिवित विनय प्रज्ञा यशस्वी सुखी

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में जन्म लेने का फल है : अति बुद्धिमान, धनी, विनयान्वित, अति प्रज्ञा वाला यशस्वी और सुखी।

इसकी व्याख्या करते हुए स्व. पं. गोपेश कुमार ओझा लिखते हैं–'अति प्रारंभ में आया है, इस कारण 'अति' सब विशेषणों के पहले अतिधनी भी जुड़ सकता है। मूल में प्रज्ञा यशस्वी शब्द आया है, जिसके दो अर्थ हो सकते हैं–1. प्रज्ञावान तथा यशस्वी, 2. अपनी प्रज्ञा के कारण यशस्वी (और अर्थान्तर में सुखी भी)। बुद्धि और प्रज्ञा साधारणतः एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं परंतु यहाँ ग्रंथकार ने बुद्धि और प्रज्ञा दोनों शब्दों का प्रयोग किया है। बुद्धि की परिभाषा है, संकल्प–विकल्पात्मकं मन विश्लयात्मकं बुद्धिः। प्रज्ञा का अर्थ होगा प्रकृष्ट–ज्ञा नीतिज्ञ में प्रज्ञा विशेष मात्रा में होती है।

अश्विनी नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातकों का व्यक्तित्व सुंदर, माथा चौड़ा, नासिका कुछ बड़ी तथा नेत्र बड़े एवं चमकीले होते हैं।

यद्यपि ऐसे जातक प्रत्यक्ष में बेहद शांत और संयत दिखायी देते हैं तथापि अपने निर्णय से कभी वे टस से मस नहीं होते। इसका कारण यह है कि वे कोई भी निर्णय जल्दबाजी में नहीं करते। वे उसके हर अच्छे–बुरे पहलू पर विचार करने के बाद ही निर्णय करते हैं। इसीलिए एक बार निर्णय करने पर वे उससे पीछे नहीं हटते।

अपने निर्णयों में वे किसी से प्रभावित भी नहीं होते। फलतः उन्हें हठी भी मान लिया जाता है। ऐसे जातकों के बारे में कहा गया है कि यमराज भी उन्हें अपने निर्णय से नहीं डिगा सकते।

लेकिन वे व्यवहार–कुशल भी होते हैं तथा अपना इच्छित कार्य इस खूबी से करते हैं कि न तो किसी को पता चलता है, न महसूस होता है।

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे जातक 'यारों के यार' अर्थात् श्रेष्ठ मित्र सिद्ध होते हैं। उनकी मानसिकता समझने में समर्थ लोगों के लिए वे सर्वोत्तम मित्र ही सिद्ध होते हैं। इस नक्षत्र में जन्मे जातक जिन्हें चाहते हैं, उनके लिए वे सर्वस्व होम देने के लिए भी तत्पर रहते हैं। यही नहीं, वे किसी को पीड़ित देखकर उसे सांत्वना बंधाने में भी आगे होते हैं।

ऐसे जातकों के चरित्र की एक विशेषता यह होती है कि यद्यपि वे घोर से घोर संकट के समय भी अपार धैर्य का परिचय देते हैं तथापि यदि किसी कारणवश उन्हें क्रोध आ जाए तो फिर उन्हें संभालना मुश्किल होता है।

इसी तरह एक ओर वे अतिशय बुद्धिमान होते हैं तो दूसरी ओर कभी–कभी 'तिल' का भी 'ताड़' बना देते हैं, अर्थात् छोटी–छोटी बातों को तूल देने लगते हैं। फलतः उनका मन भी अशांत हो उठता है।

वे ईश्वर पर आस्था रखते हैं लेकिन धार्मिक पाखंड को रंचमात्र भी नहीं पसंद करते। परंपराप्रिय होते हुए भी उन्हें आधुनिकता से कोई बैर नहीं होता।

वे स्वच्छताप्रिय भी होते हैं तथा अपने आसपास हर वस्तु को करीने से रखना उनकी आदत होती है।

शिक्षा एवं आयः अश्विनी नक्षत्र में जन्मे जातकों को 'हरफन मौला' कहा जा सकता है अर्थात् सभी बातों में उनकी कुछ न कुछ पैठ होती है। शिक्षा के क्षेत्र में उन्हें पर्याप्त सफलता मिलती है। वे चिकित्सा, सुरक्षा एवं इंजीनियरिंग क्षेत्रों में जा सकते हैं। साहित्य एवं संगीत के प्रति उन्हें खासा लगाव होता है। उनकी आय के साधन भी पर्याप्त होते हैं पर प्रदर्शन–प्रियता पर व्यय के कारण वे अभाव भी अनुभव करते हैं।

कहा गया है कि अश्विनी नक्षत्र में जातकों को तीस वर्ष की अवस्था

तक पर्याप्त संघर्ष करना पड़ता है। कभी-कभी उनके छोटे-छोटे काम भी रुक जाते हैं।

ऐसे जातक अपने परिवार को बेहद प्यार करते हैं। लेकिन कहा गया है कि ऐसे जातकों को पिता से न पर्याप्त प्यार मिलता है, न कोई सहायता। हाँ, मातृपक्ष के लोग उसकी सहायता के लिए तत्पर होते हैं। उन्हें परिवार से बाहर के लोगों से भी पर्याप्त सहायता मिलती है।

ऐसे जातकों का वैवाहिक जीवन प्रायः सुखी होता है। आम तौर पर सताइस से तीस वर्ष के मध्य उनके विवाह का योग बनता है। इसी तरह पुत्रियों की अपेक्षा पुत्र अधिक होने का भी योग बताया गया है।

अश्विनी नक्षत्र के विभिन्न चरणों के स्वामी इस प्रकार हैं—प्रथम : मंगल, द्वितीय : शुक्र, तृतीय : बुध और चतुर्थ : चंद्रमा।

अश्विनी नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं

अश्विनी नक्षत्र में जन्मी जातिकाओं में प्रायः उपरोक्त चारित्रिक विशेषताएं होती हैं। अश्विनी नक्षत्र में जन्मी जातिकाओं के व्यक्तित्व में एक चुम्बकीय आकर्षण होता है। जातकों की तुलना में उनके नेत्र मीन की भांति छोटे एवं चमकीले होते हैं।

अश्विनी नक्षत्र में जातिकाएं धैर्यवान, शुद्ध हृदय और मीठी वाणी की धनी होती हैं। वे परंपराप्रिय, बड़ों का आदर करने वाली तथा विनम्र भी होती हैं। ऐसी जातिकाओं में काम भावना कुछ प्रबल पायी जाती है।

ऐसी जातिकाएं यदि अच्छी शिक्षा पा जाएं तो वे एक कुशल प्रशासक भी बन सकती हैं। लेकिन वे परिवार के लिए अपनी नौकरी त्यागने में भी नहीं हिचकतीं। परिवार का कल्याण, उसका सुख ही उनकी प्राथमिकता होती है।

विवाहः कहा गया है कि ऐसी जातिकाओं का विवाह तेइस वर्ष के बाद ही करना चाहिए अन्यथा दीर्घ अवधि के लिए पति से विछोह, या तलाक अथवा पति के चिरवियोग के भी फल बताये गये हैं।

संतानः ऐसी जातिकाओं को पुत्रों की अपेक्षा पुत्रियां अधिक होती हैं। वे अपनी संतान का पर्याप्त श्रेष्ठ रीति से पालन-पोषण करती हैं।

एक फल यह कहा गया है कि यदि अश्विनी के चतुर्थ चरण में स्थित शुक्र पर चंद्रमा की दृष्टि पड़े अर्थात् चंद्रमा तुला राशि में हो तो संतानें तो अधिक होती हैं, पर बच कम पाती हैं।

स्वास्थ्यः ऐसी जातिकाओं का स्वास्थ्य प्रायः ठीक ही रहता है। जो भी

व्याधियां होती हैं– वे अनावश्यक चिंता एवं मानसिक अशांति के कारण। ऐसी स्थिति निरंतर बनी रहने पर मस्तिष्क विकार की भी आशंका प्रबल रहती है।

ऐसी जातिकाओं को रसोईघर में भोजन बनाते वक्त आग से कुछ ज्यादा सावधान रहने की चेतावनी भी दी जाती है। वे शीघ्र ही दुर्घटनाग्रस्त भी हो सकती हैं।

अश्विनी नक्षत्र में विभिन्न ग्रहों की स्थिति के फल

अश्विनी नक्षत्र में स्थित होकर ग्रह कैसा फल देते हैं, जातक / जातिका के जीवन पर कैसा प्रभाव डालते हैं, यहाँ प्रस्तुत है, इसका विवरण। सर्वप्रथम अश्विनी नक्षत्र के विभिन्न चरणों के स्वामी:

प्रथम चरण: मंगल, द्वितीय चरण : शुक्र, तृतीय चरण: बुध एवं चतुर्थ चरण: चंद्र।

अन्य नक्षत्रों के चरणों का स्वामित्व भी इस प्रकार विभिन्न ग्रहों को दिया गया है।

इसका बड़ा महत्त्व है, क्योंकि हम देखते हैं कि कभी–कभी कोई ग्रह किसी नक्षत्र विशेष के भिन्न–भिन्न चरणों में भिन्न–भिन्न फल, यहाँ तक कि विरोधाभासी फल देता है। इसका कारण चरण–विशेष के स्वामी ग्रह से उस ग्रह विशेष की मित्रता, शत्रुता या सम संबंध हो सकते हैं।

आगे भी जब पाठक अन्य नक्षत्रों के चरणों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलों को पढ़ें तो उस चरण के स्वामी ग्रह को भी समझने की चेष्टा करें। इससे फलों का आधार बहुत कुछ समझा जा सकता है।

अश्विनी नक्षत्र में सूर्य

अश्विनी नक्षत्र मेष राशि का प्रथम नक्षत्र है। मेष का स्वामी मंगल माना गया है तथा मेष को सूर्य की उच्च राशि का भी दर्जा दिया गया है। अश्विनी के चारों चरणों में सूर्य कैसे फल देता है, इसे देखें।

प्रथम चरण: अश्विनी के प्रथम चरण में जन्मे जातक हृष्ट–पुष्ट, आत्म–विश्वास से भरपूर तथा तर्क–शक्ति में प्रवीण होते हैं। पारिवारिक जीवन में संतान से सुख भरपूर मिलता है। वे दीर्घायु, धनी–मानी भी होते हैं। मंगल एक तप्त ग्रह है। सूर्य भी तप्त है। अतः स्वास्थ्य की दृष्टि से यहाँ सूर्य की स्थिति पित्त एवं रक्त–विकार की संभावना प्रबल बनाती है। ग्रह

संकेत करते हैं और यदि हम इन संकेतों को समझकर सावधान रहें तो कोई कारण नहीं कि हम उनके दुष्प्रभाव को कम न कर सकें।

द्वितीय चरणः इस चरण में स्थित सूर्य उतने अच्छे फल नहीं देता, जितना कि प्रथम अथवा चतुर्थ चरण में। अश्विनी के द्वितीय चरण में सूर्य की स्थिति आयु की दृष्टि से अशुभ मानी गयी है। यदि सूर्य के साथ चंद्र की युति हो जाए तो अशुभ फलों में वृद्धि होती है। हाँ, सूर्य पर मंगल की दृष्टि या उससे युति शुभ परिणाम देती है।

तृतीय चरणः यहाँ सूर्य की स्थिति जातक को वैभव प्रदान करती है। लेकिन अकेला धन या वैभव ही पर्याप्त सुख प्रदान नहीं करता। इस चरण में सूर्य की स्थिति के दो फल बतलाये गये हैं। एक तो जातक की बुद्धि कुटिल हो सकती है। दूसरे, उसका स्वभाव उग्र और कभी–कभी हिंसक भी हो सकता है। इन सब बातों का उसके स्वास्थ्य पर भी घातक असर पड़ता है। पित्त विकार, रक्त विकार उसे ग्रस्त कर सकते हैं।

चतुर्थ चरणः इस चरण में सूर्य यदि 10 अंश से 11 अंश के बीच होता है तो फल बहुत अच्छे बताये गये हैं। जैसे, जातक कुशाग्र बुद्धि, प्रसिद्ध तथा नेतृत्व के गुणों से युक्त होता है। यदि वह सेना या सुरक्षा सेवाओं में हो तो उच्च पद प्राप्त करता है और यदि सामाजिक क्षेत्र में है तो वहाँ नेतृत्व की जिम्मेदारी बखूबी निभाता है। अपनी समस्त जिम्मेदारियां वह अत्यंत निष्ठा से पूरी करता है। इसका एक कारण यह भी है कि सूर्य की ऐसी स्थिति वाले जातक निर्मल हृदय, धार्मिक वृत्ति के होते हैं। जैसे–जैसे उनकी जीवन यात्रा आगे बढ़ती है, उन पर सौभाग्य की वर्षा होने लगती है।

इस तरह हम देखते हैं कि अश्विनी के प्रथम चरण अर्थात् 00.00 अंश से 3.20 अंश एवं चतुर्थ चरण 10.00 अंश से 13.20 अंश, इसमें भी 10.00 एवं 11.00 अंशों में सूर्य की स्थिति शुभ फल देती है।

अश्विनी स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि के फल

ग्रहों की शुभ–अशुभ दृष्टि भी ग्रह–विशेष के फलों को प्रभावित करती है। प्रस्तुत हैं, अश्विनी स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि के फलः–

चंद्र के फल की पहले चर्चा की गयी है। आयु के लिए यह अशुभ हो सकती है।

मंगल की दृष्टि के कारण जातक क्रूर हृदय हो सकता है। कारण सूर्य भी तप्त ग्रह है और मंगल भी। जातक के नेत्र भी लालिमा लिये हो सकते हैं।

बुध की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होता है। जीवन भी सुख–सुविधा से पूर्ण होता है तथापि चालीस वर्ष की आयु के बाद अर्थाभाव की स्थिति बन सकती है।

गुरु शुभ ग्रह है। सूर्य पर उसकी दृष्टि भी शुभ प्रभाव डालती है। जातक उदार हृदय, सत्ता से जुड़ा होता है।

शुक्र की दृष्टि जातक में काम भावना को कुछ ज्यादा ही बढ़ाती है। वह काम वासना की पूर्ति के लिए जोड़–तोड़ में लगा रहता है।

शनि की दृष्टि का फल अशुभ बताया गया है। सूर्य एवं शनि पिता–पुत्र होते हुए भी एक दूसरे के घोर शत्रु माने गये हैं। शनि की दृष्टि जातक को दरिद्रता की ओर ढकेलती है।

अश्विनी के विभिन्न चरणों में चंद्र

अश्विनी स्थित चंद्र के शुभ फल प्राप्त होते हैं। अश्विनी में चंद्र का अर्थ है, इसी नक्षत्र में उसका जन्म। अश्विनी नक्षत्र में जन्मे जातक/जातिकाओं की चारित्रिक विशेषताओं के संबंध में हम प्रारंभ में ही पढ़ चुके हैं। यहाँ अश्विनी के विभिन्न चरणों में चंद्र की स्थिति के फलः–

प्रथम चरणः यदि चंद्रमा अश्विनी के प्रथम चरण में हो तो जातक का व्यक्तित्व शानदार होता है। वह विद्वानों, विशेषज्ञों की संगति पैदा करता है। उनसे ही विचारों के आदान–प्रदान में उसे आनंद आता है। ऐसा जातक चाहे निजी संस्थान में हो अथवा सरकारी सेवा में, उच्च पद पर आसीन होने की क्षमता रखता है। तथापि उसकी कार्यशैली से अधीनस्थ कर्मचारियों में थोड़ा–बहुत असंतोष व्याप्त रहता है।

कहा गया है कि लग्नस्थ अश्विनी में चंद्र की गुरु के साथ युति हो तो जातक 83 वर्ष तक तो जीवित रहता ही है।

द्वितीय चरणः यहाँ स्थित चंद्रमा जातक को विलासिता की ओर ले जाता है। खान–पान का आनंद ही उसे प्रिय लगता है। ऐसा जातक व्यवहार–चतुर भी होता है।

तृतीय चरणः यहाँ चंद्र की स्थिति हो तो जातक अत्यंत बुद्धिमानी, सोत्साही और सक्रिय होता है। विज्ञान के अतिरिक्त धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन में भी उसकी पर्याप्त रुचि होती है। ऐसा जातक अपने मित्रों के आड़े वक्त में भी काम आता है।

चतुर्थ चरणः अश्विनी के अंतिम चरण में चंद्र स्थित हो तो जातक अपने ही प्रयत्नों से उच्च शिक्षण के अलावा विज्ञान की विभिन्न शाखाओं

में निष्णात होता है। 12.00 से 13.20 अंशों के मध्य जन्मे जातक चिकित्सा के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित कर सकते हैं। यदि वे प्रशासनिक सेवा में जाना चाहें तो वे वहाँ भी सफल होते हैं।

अश्विनी स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को उदार एवं परोपकारी बनाती है। उसे सत्ता पक्ष से भी अधिकार एवं अन्य बातों का लाभ मिलता है।

मंगल की दृष्टि जातक के जीवन को परावलम्बी बना सकती है। उसे दंत एवं कर्ण पीड़ा भी हो सकती है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक का जीवन सुखी, धन–धान्य एवं यश से परिपूर्ण रहता है।

गुरु की दृष्टि हो तो जातक अत्यंत विद्वान ही नहीं, श्रेष्ठ गुरु भी सिद्ध होता है। समाज में उसकी काफी ऊँची प्रतिष्ठा होती है तथा उसके अधीनस्थ कई लोग काम करते हैं।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक धनी एवं अनेक स्त्रियों की संगति भी पाता है।

शनि की दृष्टि जातक के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती है। वह अनुदार भी होता है, साथ ही अच्छी संतान के सुख से वंचित भी।

अश्विनी के विभिन्न चरणों में मंगल

अश्विनी में मंगल की स्थिति का दूसरा अर्थ है, मंगल का स्वराशिस्थ भी होना। कारण अश्विनी मेष राशि का प्रथम नक्षत्र है और मेष राशि का स्वामी मंगल माना गया है। अतः अश्विनी में स्थित मंगल सामान्यतः शुभ फल ही देता है तथापि अश्विनी के द्वितीय चरण में मंगल की स्थिति के अशुभ फल दर्शाये गये हैं।

प्रथम चरण: यदि मंगल अश्विनी के प्रथम चरण में हो तो जातक/जातिका गणित, इंजीनियरिंग एवं सैन्य सेवाओं में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। उत्तम स्वास्थ्य से युक्त ऐसे लोग समाज में भी उच्च प्रतिष्ठा पाते हैं। अपने कार्य क्षेत्र में तो वे प्रतिष्ठित होते ही हैं।

द्वितीय चरण: यहाँ मंगल की स्थिति के अशुभ फल वर्णित हैं, यथा दरिद्रतापूर्ण जीवन, निःसंतान होने की पीड़ा आदि। ऐसे लोगों में प्रतिहिंसा की भी भावना होती है।

तृतीय चरण: वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन के सुख की दृष्टि से इस

चरण में मंगल की स्थिति शुभ मानी गयी है। जातक को यायावरी वाली नौकरी या व्यवसाय फलप्रद होता है। ऐसे व्यक्तियों में कामभावना का भी अतिरेक बताया गया है।

चतुर्थ चरण: यदि जातक/जातिका का जन्म 12 से 13 अंशों के मध्य हो तो वे निस्संदेह एक सफल–कुशल इंजीनियर बन सकते हैं। उन्हें अच्छी संतान का सुख प्राप्त होता है।

अश्विनी स्थित मंगल पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक विद्वान, बुद्धिमान, मातृ–पितृ भक्त तथा धन–संपदा, पारिवारिक सुख से युक्त होता है।

चंद्र की दृष्टि वासना में वृद्धि करने वाली मानी गयी है। जातक परायी स्त्रियों में कुछ ज्यादा ही रुचि लेने लगता है।

बुध की दृष्टि भी काम भावना का अतिरेक करने वाली होती है। यदि अन्य ग्रहों की शुभ दृष्टि न हो तो जातक प्रदर्शन प्रिय होने के साथ–साथ वेश्यागामी भी हो सकता है।

गुरु की दृष्टि के शुभ फल होते हैं। जातक का समाज में, परिवार में मान–सम्मान होता है, वह धन के साथ–साथ सत्ता शक्ति का भी उपभोग करने वाला हो सकता है।

शुक्र की दृष्टि उसकी विलासप्रियता बढ़ाती है। परस्त्रियों में आसक्ति उसके लिए संकट उत्पन्न करती है। तथापि वह जातक को समाजसेवी भी बनाती है।

शनि की दृष्टि न हो तो जातक पारिवारिक सुख, यहाँ तक कि मातृ–स्नेह से भी वंचित रहता है।

अश्विनी के विभिन्न चरणों में बुध

अश्विनी के दो चरणों में बुध के शुभ फल मिलते हैं तथा दो में अशुभ। द्वितीय एवं तृतीय चरण में बुध की स्थिति लाभदायक होती है, जबकि प्रथम एवं चतुर्थ चरण में बुध हो तो जातक का जीवन दुखी ही बीतता है।

प्रथम चरण: यहाँ बुध जातक को नास्तिक बनाता है। ईश्वर पर से अनास्था उसकी छुद्र वृत्तियों को भी मुक्त कर देती है। वह सुरा–सुंदरी का शौकीन तथा अपने स्वार्थ के लिए दूसरों से विश्वासघात भी कर सकता है। आम तौर पर समाज में वह निम्न नजरों से देखा जाता है।

द्वितीय चरणः द्वितीय चरण में बुध हो तो जातक विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करता है। उसे अच्छा संतान सुख भी मिल जाता है।

लेकिन एक फल यह भी बताया गया है कि ऐसा जातक पैंतीस वर्ष की अवस्था के बाद संसार को त्याग संन्यासी भी बन सकता है।

तृतीय चरणः तृतीय चरण में स्थित बुध जातक को ईश्वरीय कृपा से लाभान्वित करता है। वह कर्त्तव्यनिष्ठ तथा सभी जिम्मेदारियां बखूबी निभाना जानता है। ऐसे जातकों को पुत्रों की संख्या अधिक बतायी गयी है। तृतीय चरण में बुध केवल स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं होता।

चतुर्थ चरणः यहाँ बुध की स्थिति के अशुभ फल कहे गये हैं, यथा व्यवसाय में असफलता, अभावपूर्ण जीवन, चारित्रिक दोषों का आधिक्य।

अश्विनी स्थित बुध पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि के शुभ फल मिलते हैं। जातक सत्यनिष्ठ, परिवार एवं संबंधियों में प्रिय तथा शासन पक्ष से लाभान्वित होता है।

चंद्र की दृष्टि जातक को ललित कलाओं के क्षेत्र में ले जाती है। संगीत के प्रति उसकी रुचि होती है। अपनी कला से वह धनोपार्जन भी कर सकता है। वह हर तरह से सुखी होता है।

मंगल की दृष्टि भी शुभ फल देती है, यद्यपि बुध मंगल को शत्रुता की दृष्टि से देखता है तथापि मंगल की दृष्टि के कारण वह सत्तासीन लोगों का कृपाभाजन बनकर लाभ उठा सकता है।

गुरु की दृष्टि के भी शुभ फल मिलते हैं। जातक को धन–सुख के अलावा परिवार का भी पूर्ण सुख मिलता है।

शुक्र की दृष्टि के फलस्वरूप उसे मान–सम्मान, यश, अर्थ सभी कुछ प्राप्त हो सकता है। अपने आचरण से वह सभी का प्रिय बनता है।

शनि की दृष्टि के दो फल मिलते हैं। यद्यपि जातक समाजोपयोगी कार्य करता है, तथापि परिवार के सदस्यों से विवाद, कलह बना रहता है।

अश्विनी स्थित गुरु के फल

अश्विनी नक्षत्र में स्थित गुरु जातक के लिए अत्यंत शुभ होता है। वह नक्षत्र के किसी भी चरण में स्थित हो, शुभ फल ही देगा। गुरु एक सात्विक, शुभ ग्रह है। परंपरा से गुरु को देवता का गुरु माना गया है, विवेक प्रदान करने वाला। अश्विनी नक्षत्र में गुरु अपने कारकत्व के अनुसार शुभ फल देने वाला कहा गया है।

प्रथम चरणः इस चरण में गुरु की स्थिति हो तो जातक के व्यक्तित्व में एक चुंबकीय आकर्षण होता है। विवेकपूर्ण वाणी का धनी ऐसा जातक अपने आसपास के लोगों को सहज ही प्रभावित करता है। अगर वह भाषण करे तो उसके विचारों को सुनने के लिए भीड़ एकत्र हो जाती है। जातक की अध्ययन में गहरी रुचि होती है। दार्शनिक, आध्यात्मिक क्षेत्र में उसकी गहरी पैठ होती है। एक विद्वान के रूप में समाज में प्रतिष्ठित ऐसा जातक भौतिक उन्नति भी करता है। इसमें मित्रों एवं अन्य लोगों की उसे पर्याप्त सहायता मिलती है। पैंतीस वर्ष की अवस्था के बाद उसका यश बढने लगता है।

द्वितीय चरणः यहाँ भी गुरु की स्थिति अच्छी मानी गयी है। जातक लेखन के क्षेत्र में प्रसिद्धि पा सकता है। उसका व्यक्तित्व आकर्षक, स्वभाव उदार एवं परोपकारी होता है। वह पूर्ण निष्ठा से हर कार्य करता है। फलतः सभी के स्नेह एवं आदर का पात्र भी बन जाता है। हाँ, धन के मामले मे उसे शायद अभावग्रस्त रहना पड़ सकता है।

तृतीय चरणः यहाँ भी गुरु जातक को बौद्धिक एवं भौतिक क्षेत्र र पर्याप्त उन्नति दिलाता है। जातक विद्वान एवं अधिकार संपन्न होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ गुरु जातक को **सर्वोत्तम** फल देता है। अर्थात् ए ओर जहाँ उसे अपार कीर्ति मिल सकती है तो दूसरी ओर उसे धन का अभाव नहीं रहता। उसे परिवार का भी पूर्ण सुख मिलता है। उसकी संता भी योग्य एवं आज्ञाकारी होती है।

अश्विनी स्थित गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को सदैव वैध कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। जातक अवैध कार्यों से डरता है। ईश्वर पर अगाध आस्था वाला सा जातक समाज में परोपकारी कार्य भी करना चाहता है।

चंद्र की दृष्टि के फलस्वरूप जातक धन, मान--सम्मान एवं य से युक्त होता है।

मंगल की दृष्टि जातक को सत्ता पक्ष से लाभ पहुँचाती है।ऐसा जातक स्वभाव से कुछ उग्र, और कभी-कभी क्रूर भी हो सकता है

बुध की दृष्टि उसे सद्व्यवहार करने वाला बनाती है लेकिनउसमें औरों के निरर्थक विवादों में जान-बूझकर फंसने की भी प्रवृत्ति हो है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक स्त्रियों का प्रिय होता है। स्यिों के उपयोग की सामग्री के व्यापार से वह लाभान्वित भी हो सकता है

शनि की दृष्टि उसका स्वभाव कुछ क्रूर बना देती है। जातक को परिवार का भी सुख नहीं मिलता।

अश्विनी नक्षत्र स्थित शुक्र के फल

अश्विनी नक्षत्र में स्थित शुक्र के फलस्वरूप जातक हृष्ट–पुष्ट, भाग्यवान होता है तथा उसमें कला, अभिनय के क्षेत्र में आशातीत सफलता प्राप्त करने के साथ उच्च कोटि के चिकित्सक या मैकेनिकल इंजीनियर बनने की भी क्षमता होती है।

प्रथम चरणः इस चरण में शुक्र हो तो जातक सदैव प्रसन्न रहने वाला तथा हृष्ट–पुष्ट होता है। उसमें एक अच्छा मैकेनिकल इंजीनियर बनने की भी क्षमता होती है। कुछ कारणों से प्रथम चरण में स्थित शुक्र को अल्पायु का द्योतक भी कहा गया है तथापि अन्य शुभ ग्रहों के कारण उसके दीर्घायु के योग भी बताये गये हैं।

द्वितीय चरणः जातक हस्ट–पुष्ट, मिलनसार एवं परिवार के दायित्वों को निभाने वाला होता है। उसमें लेखन–प्रतिभा होती है। भाग्य भी उसका साथ देता है।

तृतीय चरणः इस चरण में शुक्र हो तो जातक में एक श्रेष्ठ चिकित्सक बनने की क्षमता होती है। वह बौद्धिक प्रवृत्ति का, मिलनसार तथा सर्वप्रिय होता है।

चतुर्थ चरणः इस चरण में शुक्र जातक को कला के क्षेत्र में ले जाता है वह एक अच्छा अभिनेता या संगीतज्ञ भी बन सकता है।

अश्विनी स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि के कारण जातक शासन पक्ष से लाभान्वित होता है। उसका पारिवारिक जीवन, पत्नी से अनबन के कारण सुखी नहीं रहता। विशेषकर यदि शुक्र अश्विनी के चतुर्थ चरण अर्थात् 10.00 से 13.20 अंश के मध्य हो तो यह स्थिति और बनती है।

चंद्र की दृष्टि हो तो जातक उच्च पद पर होता है तथापि स्त्रियों की गलत संगति के कारण उसे अपयश का भागी बनना पड़ सकता है।

मंगल की दृष्टि अशुभ फल देती है यथा वैवाहिक जीवन में अनबन, परिवार से भी सहायता नहीं तथा धन का भी अभाव।

बुध की दृष्टि उसमें दूसरों की वस्तु हड़पने की प्रवृत्ति पैदा करती है।

गुरु की दृष्टि शुभ होती है। जातक को परिवार का, संतान का पूर्ण

सुख मिलता है। जीवन में उसे सारी सुख–सुविधाएं भी प्राप्त होती हैं।

शनि की दृष्टि के विभिन्न फल होते हैं। एक ओर वह तस्करी जैसे कार्यों में जुट सकता है तो दूसरी ओर उसमें अपने नहीं, दूसरों के धन को बांटने की प्रवृत्ति होती है। ऐसा जातक अपना धन छिपाकर रखता है।

अश्विनी स्थित शनि के फल

अश्विनी स्थित शनि के मिश्रित फल मिलते हैं। कुछ अच्छे, कुछ बुरे। जैसे प्रथम चरण में जातक का बचपन अभाव ग्रंस्त रहता है। लेकिन बाद में जीवन सुखी हो जाता।

प्रथम चरण: यद्यपि जातक दीर्घायु होता है तथापि जीवन प्रारंभ में दुखी रहता है। मध्य आयु के बाद जीवन में सुख और स्थिरता आती है। ऐसे जातकों की इतिहास में गहरी रुचि होती है। उनमें लेखन प्रतिभा मिलती है।

द्वितीय चरण: जातक वनों से संबंधित व्यावसायिक मामलों में दक्ष होता है लेकिन तुनुकमिजाजी और समय देखकर बात न करने की आदत उसे आर्थिक संकट में डाल सकती है। जातक का वर्ण श्यामल, शरीर कृशकाय होता है।

तृतीय चरण: जातक यात्रा–प्रिय होता है। व्यवसाय में वह चतुर ही नहीं होता वरन् अपने अधीनस्थ लोगों की सुख–सुविधाओं और हितों का भी पर्याप्त ध्यान रखता है।

चतुर्थ चरण: जातक में धार्मिक वृत्ति होती है, पारिवारिक जीवन भी प्रायः सुखी ही रहता है तथापि जुआरी वृत्ति के फलस्वरूप व्यवधान आ सकते हैं।

अश्विनी स्थित शनि पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि उसे पशु–पालन के व्यवसाय में ले जा सकती है। जातक सद्कार्यों में प्रवृत्त रहता है।

यह कहा गया है कि यदि किसी जातिका की कुंडली में अश्विनी के चतुर्थ चरण स्थित शनि पर सूर्य की दृष्टि है तो वह विवाह प्रतिबंधक योग बनाती है। यदि विवाह हो भी गया तो दुर्भाग्यपूर्ण ही सिद्ध होता है।

लेकिन यह फल पढ़कर एकाएक किसी निर्णय पर पहुँचना बुद्धिमानी नहीं होगी। यदि जातिका की कुंडली में अन्य ग्रहों के योग अच्छे हैं तो यह फल धूमिल भी सिद्ध हो सकता है।

चंद्रमा की दृष्टि के फल शुभ नहीं कहे गये हैं। जातक अभाव–ग्रस्त, क्रूर–मना, कुसंगति में रहने वाला कहा गया है।

मंगल की दृष्टि जातक को घोर स्वार्थी बनाती है। साथ ही दूसरों से अपनी विरुदावलि स्वयं गाने की प्रवृत्ति भी हो सकती है।

बुध की दृष्टि पारिवारिक सुख में न्यूनता लाती है। जातक अवैध मार्गों से संपत्ति अर्जित करने की ओर प्रवृत्त हो सकता है।

गुरु की दृष्टि के फल शुभ होते हैं। जातक शासन में उच्च पद पाने की योग्यता रखता है। उसे धन–संपत्ति, अच्छी पत्नी, अच्छे बच्चों का भी सुख मिलता है।

शुक्र की दृष्टि जातक में कामभावना तीव्र करती है। उसे यात्राएं करने में भी अतीव आनंद आता है।

अश्विनी स्थित राहु के फल

अश्विनी के तृतीय चरण अर्थात् 6.40 से 10.00 अंशों के मध्य न होने पर अन्य शेष चरणों में राहु प्रायः अच्छे फल ही प्रदान करता है।

प्रथम चरण में राहु स्थित हो तो जातक हृष्ट–पुष्ट, बुद्धिमान तथा पितृभक्त होता है। अपने वरिष्ठों से उसे समय–समय पर सहायता भी मिलती रहती है।

द्वितीय चरण में राहु हो तो जातक विदेशों में भ्रमण का इच्छुक होता है। यों वह धार्मिक परंपराओं का पालन करने वाला भी होता है लेकिन अपनी अस्थिर मनोवृत्ति के कारण भटकाव की स्थिति में रहता है।

तृतीय चरण में स्थित राहु घोर दरिद्रता का सूचक माना गया है। वैवाहिक जीवन भी कलहमय होता है। लेकिन अपनी दार्शनिक प्रवृत्ति के कारण वह इन सबसे असंपृक्त रहता है।

चतुर्थ चरण में स्थित राहु के फलस्वरूप जातक दुबली–पतली काया वाला होते हुए भी साहसी, निर्भीक होता है। यहाँ राहु हो तो जातक को अपच और वायु प्रकोप की शिकायत हो सकती है।

अश्विनी के विभिन्न चरणों में केतु

अश्विनी नक्षत्र का स्वामी केतु ही माना गया है। यहाँ स्वक्षेत्री होते हुए भी केतु मिले–जुले फल देता है।

प्रथम चरणः अन्य चरणों की अपेक्षा इस चरण में केतु से शुभ फल मिलते हैं। जैसे जातक अच्छी शिक्षा पाता है। वह लोकप्रिय एवं समृद्ध भी

होता है। यहाँ केतु हो तो जातक मैकेनिकल या इंजीनियरिंग के क्षेत्र में सफल हो सकता है।

द्वितीय चरण: यहाँ केतु हो तो जातक अनेक स्त्रियों से संबंधों की चेष्टा करता है। वह जन संपर्क में माहिर होता है।

तृतीय चरण: यहाँ केतु हो तो जातक को अभावग्रस्त जीवन बिताना पड़ सकता है, तथापि वह कृतघ्न नहीं होता। अपनी सहायता करने वालों को सदैव याद रखता है तथा जरूरत पड़ने पर उनकी मदद की भी यथाशक्ति चेष्टा करता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ भी केतु की स्थिति अशुभ फल देने वाली मानी गयी है। जातक का जीवन अभावमय होता है फलतः वह जन्मस्थल से कहीं दूर निकल जाने की फिराक में रहता है।

भरणी

भरणी द्वितीय नक्षत्र है और उसका अधिकार क्षेत्र 13.30 अंश से 26. 40 अंश तक है। भरणी में तीन तारे हैं और वे एक त्रिकोण की रचना करते हैं। भरणी का देवता यम को माना गया है। यम विवस्वत के पुत्र के रूप में भी वर्णित है। भरणी का स्वामी शुक्र है। भरणी राजस वृत्ति का नक्षत्र है और शरीर के भाग पर उसका अधिकार माना गया है।

गण: मँनुष्य, योनि: गज एवं नाड़ी: मध्य है।

चरणाक्षर हैं: ली, लू, ले, लो।

भरणी नक्षत्र में जन्मे जातक मध्यम कद के होते हैं। उनकी आँखें चमकीली, दांत सुंदर और माथा चौड़ा होता है। स्वभाव से ऐसे व्यक्ति उदार, शुद्ध ह्रदय, किसी का अप्रिय, अहित न करने वाले होते हैं। तिकड़मबाजी से दूर सदैव स्पष्ट तौर–तरीकों को अपनाने में विश्वास रखते हैं। वे अपनी अंतरात्मा के विरुद्ध कोई कार्य नहीं करते और फलतः उनकी साफगोई कभी–कभी औरों को बुरी भी लग जाती है। पर उन्हें इसकी चिंता नहीं होती। भले उनके संबंध खराब हो जाएं और ऐसी स्थिति में वे संबंधों की चिंता नहीं करते। ऐसे जातक किसी के सामने झुकना पसंद नहीं करते। अपने स्वभाव के कारण औरों से उनके स्थायी संबंध बहुत कम बन पाते हैं। अगर ऐसे जातक व्यर्थ के वाद–विवाद, तर्क से बचें तो अच्छा है क्योंकि उनकी मूल प्रवृत्ति येन–केन अपना वर्चस्व बनाये रखने की होती है। कभी–कभी वे अपनी कार्य सिद्धि के लिए अफवाहें भी फैलाने से बाज नहीं आते। विशेषकर यदि जन्म के समय भरणी की स्थिति अशुभ है तो व्यक्ति दूसरों को धोखा देने से भी परहेज नहीं करता। भरणी की ऐसी स्थिति उसे निम्न कार्य करने वाला बना देती है। भरणी का स्वामी शुक्र है। शुक्र एक

शुभ ग्रह है। अतः इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति सौंदर्य–प्रिय, भौतिकवादी होता है। कला, गायन, खेल कूद में उसकी रुचि होती है। वह चतुर, शत्रु पर अप्रत्याशित आक्रमण करने में कुशल तथा महत्त्वाकांक्षी होता है। इन नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति चित्रकार बन सकते हैं।

स्त्रियों के लिए भरणी नक्षत्र शुभ माना गया है। वह उनमें (शुक्र के प्रभाव के कारण) स्त्रियोचित गुण बढ़ाता है। भरणी नक्षत्र में जन्मी लड़कियों का व्यक्तित्व आकर्षक होता है। वे निर्भीक, आशावादी, अपनी इच्छानुसार कार्य करने वाली होती हैं तथापि वे माता–पिता और बड़ों का आदर करने वाली भी होती हैं। वे अपनी आजीविका स्वयं कमाने में भी समर्थ होती है। वे अवसरों की प्रतीक्षा नहीं करतीं, वरन् स्वयं अवसरों की तलाश में निकल पड़ती हैं। उनका पारिवारिक जीवन सुखी होता है। वे पति की न केवल प्रिय होती हैं, वरन् अपने गुणों के कारण उस पर शासन भी करती हैं। फलतः परिवार के अन्य व्यक्तियों से उनकी अनबन हो ही जाती है।

भरणी के चरणों के स्वामी हैं–**प्रथम चरणः** सूर्य, **द्वितीय चरणः** बुध, **तृतीय चरणः** शुक्र, **चतुर्थ चरणः** मंगल

भरणी के विभिन्न चरणों में सूर्य

भरणी के प्रथम दो चरणों में सूर्य की स्थिति शुभ मानी गयी है, जबकि शेष अंतिम दो में मिश्रित फल प्राप्त होते हैं।

प्रथम चरणः इस चरण में सूर्य जातक को विद्वान, उदार, व्यवहार–कुशल और भाग्यशाली बनाता है। ज्योतिष में उसकी रुचि होती है। वह चिकित्सा, पशु चिकित्सा अथवा विधि (कानून) के क्षेत्र में यशस्वी होता है।

द्वितीय चरणः इस चरण में स्थित सूर्य जातक को सुख–सम्पन्न बनाता है। उसे लाटरी, विरासत या अन्य किसी कारण से अनायास ही धन प्राप्त हो सकता है। ऐसे जातक का पारिवारिक जीवन बहुत सफल, समृद्ध और सुखी होता है। उसे संतान से भी संतुष्टि मिलती है।

तृतीय चरणः यहाँ सूर्य की स्थिति अच्छी नहीं मानी गयी है। यद्यपि जातक पर्याप्त संपत्ति अर्जित करता है तथापि उसे गवां भी देता है।

चतुर्थ चरणः इस चरण में स्थित सूर्य जातक का बाल्यकाल दुखी और अभावग्रस्त बना देता है। यदि ऐसे सूर्य पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हुई तो जातक दरिद्र नहीं होता अन्यथा ऐसा सूर्य भीख तक मंगवा सकता है।

भरणी स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

चंद्र की दृष्टि जातक को उदार–परोपकारी बनाती है।

मंगल की दृष्टि निर्दयी और क्रूर साथ ही परोपकारी भी बनाती है। शासन अथवा राजनीति में उसे प्रभावपूर्ण पद भी प्राप्त होता है।

गुरु की दृष्टि जातक को संपन्न, राजनीति में प्रसिद्ध और दानी प्रवृत्ति का बनाती है।

शुक्र की स्थिति उसे धनहीन और अच्छे मित्रों से हीन बनाती है।

शनि की दृष्टि जातक को आलसी बना देती है।

भरणी के विभिन्न चरणों में चंद्र

भरणी के प्रथम तीन चरणों–प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चरण में चंद्र की स्थिति शुभ फल देती है। चतुर्थ चरण स्थित चंद्रमा अशुभ माना गया है।

प्रथम चरण: इस चरण में चंद्रमा जातक को बहुत धनी तो बनाता है, पर ऐसा व्यक्ति केवल वर्तमान पर ध्यान देता है, भविष्य पर नहीं, फलतः शीघ्रता से किये गये नियमों से उसे हानि भी होती है।

द्वितीय चरण: इस चरण में स्थित चंद्र व्यक्ति को आजीवन सुखी बनाता है। उसे विरासत में धन भी मिल सकता है। वह सुशिक्षित होता है और विद्वानों का सामीप्य भी पाता है।

तृतीय चरण: इस चरण में चंद्रमा की स्थिति अशुभ मानी गयी है। ऐसे व्यक्ति को लोग 'धूर्त' कह कर पुकारते हैं–यह स्थिति उसका अपना चरित्र ही उत्पन्न करता है।

चतुर्थ चरण: इस चरण में चंद्र हो तो जातक में कुटिल बुद्धि का प्राबल्य हो सकता है। उसके जल से संबंधित कार्यों में संलग्न होने का फल भी मिलता है।

भरणी स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि उसे औरों का सहायक तो बनाती है पर वह क्रूर भी बन जाता है। सजा भी दे सकता है।

मंगल की दृष्टि से उसे विष भय, अग्नि भय और पक्षाघात का भय होता है। वह परावलंबी भी होता है।

बुध की दृष्टि शुभ होती है। जातक विद्वान, प्रसिद्ध और धनी होता है।

गुरु की दृष्टि भी उसे धनी और तंदुरुस्त बनाती है। उस पर अपने वरिष्ठ अधिकारियों की कृपा भी बनी रहती है।

शुक्र की दृष्टि के कारण उसे अच्छी पत्नी, अच्छी संतान मिलती है। उसका जीवन सुखी रहता है।

शनि की दृष्टि मिथ्याभाषी, आलसी, अभावग्रस्त और क्रूर बनाती है।

भरणी के विभिन्न चरणों में मंगल

भरणी के प्रथम तीन चरणों में स्थित मंगल शुभ फल नहीं देता। दुर्घटना भय और रोग उसे बना ही रहता है।

प्रथम चरण: ऐसे व्यक्ति की मध्य आयु बतायी गयी है। वह परदेश में अल्प बीमारी के कारण नश्वर शरीर त्याग सकता है। ऐसे व्यक्ति को स्वयं कोई वाहन न चलाने का परामर्श भी दिया गया है।

द्वितीय चरण: यहाँ मंगल की स्थिति जातक को बुद्धिमान, परिश्रमी लेकिन साथ ही क्षीणकाय, दुर्बल और चर्म रोगों का शिकार बनाती है। कामासक्ति के कारण उसे गंभीर रोग हो सकते हैं।

तृतीय चरण: यहाँ मंगल की स्थिति बेहद अशुभ मानी गयी है। बाल्यकाल से पचास वर्ष तक उसका जीवन अभाव ग्रस्त तथा घोर विपन्नता से बीतता है लेकिन उत्तरार्द्ध में वह सुखी–संमृद्ध होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ मंगल जातक को यौन रोगों का सफल चिकित्सक बना सकता है। कहा गया है कि भरणी के चतुर्थ चरण में स्थित मंगल जातक को देश के उच्चतम पद पर आसीन भी करवा सकता है।

भरणी स्थित मंगल पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को धनी–मानी, विनम्र और बुद्धिमान बनाती है।

चंद्रमा की दृष्टि स्त्रियों का शौकीन और क्रूर, हृदय हीन कर देती है। बुध की दृष्टि के कारण वह प्रदर्शन–प्रिय और परस्त्रीगामी बनता है।

बुध की दृष्टि जातक को प्रदर्शन–प्रिय, परस्त्रियों में आसक्त और चौर्य वृत्ति का भी बना सकती है।

गुरु की दृष्टि उसे गुस्सैल पर संपत्तिवान बनाती है। परिवार में सब उसकी बात मानते हैं।

शुक्र की दृष्टि के कारण भी वह परस्त्रीगामी बनता है। तथापि वह अपने परिवार ही नहीं, समाज के प्रति अपने दायित्वों का भी निर्वाह करता है।

शनि की दृष्टि उसे दुर्बल बनाती है और परिवार से विछोह का भी कारण बनता है।

भरणी के विभिन्न चरणों में बुध

भरणी में बुध की स्थिति आयु की दृष्टि से शुभ नहीं मानी गयी है। तीसरे चरण में दीर्घायु का फल मिलता है।

प्रथम चरण: बुध की स्थिति बालारिष्ट योग बनाती है। अर्थात् जातक के बचपन में ही काल कवलित होने का भय बना रहता है तथापि यदि यह

योग निष्प्रभावी हो जाए तो व्यक्ति दीर्घायु होता है। बुध की यह स्थिति जातक को सफल लेखक बनाती है।

द्वितीय चरणः बुध जातक को मध्य आयु प्रदान करता है। वह औरों के प्रति उदार होता है, लेकिन उसकी पिता से नहीं बनती। ऐसा व्यक्ति एक साथ कई कार्य हाथ में लेता है, पर उसे उनका लाभ कम ही मिलता है।

तृतीय चरणः बुध शुभ फल प्रदान करता है। ऐसा व्यक्ति विद्वान, उदार पत्नी के मामले में बेहद सौभाग्यशाली होता है। ठेकेदार और मैकेनिकल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ बुध जातक को सरकारी नौकर ही बनाता है। ऐसा व्यक्ति इंजीनियर भी बन सकता है। 45–50 वर्ष तक उसे जीवन का सुख मिलता है। उसे मिरगी अथवा पक्षघात होने की आशंका बनी रहती है।

भरणी स्थित बुध पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि नहीं पड़ती।

चंद्र की दृष्टि उसे ललित कला निपुण स्त्री–सुख से लाभान्वित तथा धन–धान्य, वाहन भवनादि से युक्त बनाती है।

मंगल की दृष्टि से वरिष्ठ अधिकारियों का कृपा पात्र बनाती है। उनके कारण उसे आर्थिक लाभ भी मिलता है।

मंगल की दृष्टि स्वभाव से उसे झगड़ालू बना देती है।

गुरु की दृष्टि उसके जीवन को सुखी बनाती है। पत्नी अच्छी मिलती है और इसी तरह संतान भी उसे सुख–संतोष प्रदान करती है।

शनि की दृष्टि के कारण वह झगड़ालू, आलसी, अनैतिक और क्रूर स्वभाव वाला बन जाता है।

भरणी के विभिन्न चरणों में गुरु

भरणी स्थित गुरु प्रायः शुभ फल देता है। वह जातक को सुखी–संपन्न और सफल बनाता है।

प्रथम चरणः यहाँ गुरु जातक को सत्य–प्रिय, ओजस्वी वक्ता, लोकप्रिय व पितृभक्त बनाता है। वह किसी कारखाने या वित्तीय संस्था–विभाग प्रमुख हो सकता है। एक से अधिक पत्नी होने का योग भी बताया गया है।

द्वितीय चरणः यहाँ गुरु जातक को धार्मिक विचारों का बनाता है। उसे पुत्र–पौत्रादि का सुख भी मिलता है। वह अपराध–विशेषज्ञ भी बन सकता है।

तृतीय चरणः यहाँ गुरु व्यक्ति को यात्रा–प्रिय, विलासी बनाता है। वह

दुर्घटनाओं का शिकार भी होता है, पर उसकी प्राण-हानि नहीं होती। वह किसी भी प्रतिस्पर्धा से सफल हो सकता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ गुरु जातक को कृषि कार्यों में निपुण होने के अतिरिक्त तांत्रिक–मांत्रिक भी बनाता है। ऐसा व्यक्ति चतुर और अपना काम निकालने में चतुर होता है।

भरणी स्थित गुरु पर अन्य ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि व्यक्ति को सत्य वक्ता समाजसेवी, भाग्यशाली और प्रसिद्ध बनाती है।

चंद्र की दृष्टि प्रसिद्ध, शांति–प्रिय और परोपकारी स्वभाव देती है।

मंगल की दृष्टि उसे निर्मम, अपकारी बनाती है किंतु उसके अधीन व्यक्ति कार्य करते हैं।

बुध की दृष्टि का फल अशुभ है। ऐसा व्यक्ति झगड़ालू, मिथ्याभाषी और प्रदर्शन प्रिय होने के साथ–साथ स्त्रियों का विलासी होता है।

शुक्र की दृष्टि उसे जीवन में हर सुख प्रदान करती है। उसे स्त्री–सुख, शैय्या सुख, वाहन, निजी मकान का सुख मिलता है।

शनि की दृष्टि दुर्भाग्य सूचक मानी गयी है। वह जातक को पत्नी और संतति सुख से वंचित रखती है। ऐसा व्यक्ति क्रूर हृदय और सदैव सलाह देने वाला होता है।

भरणी के विभिन्न चरणों में शुक्र

भरणी में शुक्र की स्थिति के प्रायः शुभ फल मिलते हैं पर ऐसे व्यक्तियों को नेत्र रोग की अथवा नेत्रों के ऊपर चोट लगने की आशंका बलवती होती है।

प्रथम चरणः यहाँ शुक्र व्यक्ति को संगीतज्ञ, ओजस्वी वक्ता और सबका प्रिय बनाता है। ऐसा व्यक्ति भोग–विलास का भी शौकीन होता है। उसे आँख के ऊपर चोट लगने का भय होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ शुक्र व्यक्ति को विलासी और परस्त्रीगामी बनाता है। उसे गुप्त रोग भी हो सकते हैं। यहाँ आँखों के ऊपर चोट लगने का भय होता है।

तृतीय चरणः यहाँ शुक्र के कारण बेहद सुंदर पत्नी मिलती है। ऐसा व्यक्ति कर्त्तव्यनिष्ठ भी होता है। यहाँ भी आँखों के ऊपर चोट लगने के संकेत बतलाये गये हैं।

चतुर्थ चरणः यहाँ शुक्र जातक को प्रवासी और धार्मिक बनाता है। अक्सर वह मठ–मंदिर या गिरजाघर अथवा मस्जिद में धार्मिक ग्रंथों का पाठ करने में निष्णात होता है।

भरणी स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि से शासन से लाभ मिलता है। उसे अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा का भी पुरस्कार मिलता है लेकिन ऐसे व्यक्ति को पत्नी के विश्वासघात का दुःख भी उठाना पड़ सकता है।

चंद्रमा की दृष्टि उसे एक ओर समाज में उच्च पद दिलाती है, लेकिन परनारियों के प्रति अपनी कामासक्ति के कारण वह आलोचना का पात्र भी बनता है।

मंगल की दृष्टि उसे हर सुख से वंचित एवं अवसादग्रस्त बनाती है।

बुध की दृष्टि जीवन में तरह–तरह की बाधाएं उत्पन्न करती है।

गुरु की दृष्टि का फल शुभ मिलता है। उसे जीवन में प्रत्येक सुख मिलता है। पत्नी एवं संतान के मामले में ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली होता है।

शनि की दृष्टि प्रायः अशुभ फल देती है लेकिन भरणी स्थित शुक्र पर शनि की दृष्टि जातक को शांतिप्रिय और उदार तथा औरों को सहायक बनाती है। पर ऐसा व्यक्ति गलत तरीकों से धनार्जन करता है।

भरणी के विभिन्न चरणों में शनि

भरणी के विभिन्न चरणों में स्थित शनि के लगभग शुभ फल मिलते हैं।

प्रथम चरणः यहाँ शनि जातक को धार्मिक ग्रंथों का अध्येता बनाता है। वह बुद्धिमान, मृदुभाषी और सबके आदर का पात्र होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ शनि व्यक्ति को बेहद बुद्धिमान बनाता है। उसका जीवन सुखी रहता है।

तृतीय चरणः यहाँ शनि सामान्यतः परावलंबी बनाता है और उसे दो–दो पृथक अभिभावकों का संरक्षण मिलता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ शनि के फलस्वरूप व्यक्ति का 35 वर्ष की आयु तक का जीवन संघर्षपूर्ण होता है। ऐसा व्यक्ति पुलिस अथवा सेना में सफल होता है।

भरणी स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि के फलस्वरूप व्यक्ति पशुपालन अथवा कृषि कार्य से अर्थ लाभ करता है। वह उदार भी होता है।

चंद्रमा की दृष्टि का फल अशुभ है। वह उसे क्रूर और कुसंगति करने वाला बनाती है।

मंगल की दृष्टि उसे कृतघ्न, अनैतिक और पग–पग पर बाधाओं का शिकार बनाती है।

बुध की दृष्टि तो और भी अशुभ प्रभाव डालती है। उसके कारण व्यक्ति मिथ्याभाषी और चोर भी बन जाता है।

गुरु की दृष्टि का फल शुभ है। एक ओर वह समृद्धिपूर्ण जीवन बिताता है तो दूसरी ओर राजनीति के क्षेत्र में भी सफलता पाता है।

शुक्र की दृष्टि उसे यायावर बनाती है। वह कामतृप्ति के लिए बांझ स्त्रियों के पीछे भागने से भी बाज नहीं आता।

भरणी के विभिन्न चरणों राहु

भरणी के विभिन्न चरणों में स्थित राहु के प्रायः शुभ फल मिलते हैं।

प्रथम चरणः यहाँ राहु की स्थिति जातक को शक्तिशाली, प्रसिद्ध और धनी बनाती है परंतु उसकी मृत्यु विपन्न अवस्था में होती है।

द्वितीय चरणः यहाँ राहु व्यक्ति को बेहद मान–सम्मान और यश देता है। उसे चर्मरोग का भय होता है।

तृतीय चरणः यहाँ राहु काव्य रचयिता बनाता है। इसमें जातक को यश भी मिलता है। पुलिस और सेना में भी उसे सफलता मिलती है।

चतुर्थ चरणः यहाँ राहु की स्थिति व्यक्ति को उदार बनाती है। दुग्ध व्यवसाय से उसे लाभ मिलता है।

भरणी के विभिन्न चरणों में केतु

भरणी के प्रथम दो चरणों में केतु की स्थिति के अच्छे फल नहीं मिलते। शेष दो में केतु की स्थिति शुभ मानी गयी है।

प्रथम चरणः यहाँ केतु आयु के लिए अशुभ माना गया है।

द्वितीय चरणः यहाँ केतु अच्छी आयु प्रदान करता है। पर जातक को मिर्गी अथवा मस्तिष्क के किसी रोग की आशंका बनी रहती है।

तृतीय चरणः इस चरण में स्थित केतु व्यक्ति को योग विद्या में पारंगत बनाता है। वह स्पर्श चिकित्सक भी होता है।

चतुर्थ चरणः इस चरण में स्थित केतु दीर्घायु कारक माना गया है। ऐसा जातक आर्किटेक्ट हो सकता है। उसे चर्मरोग या गुप्त रोग का भी भय बना रहता है।

कृत्तिका

कृत्तिका नक्षत्र राशि फल में 26.40 से 40.00 अंशों के मध्य स्थित है। कृत्तिका के पर्यायवाची नाम हैं–हुताशन, अग्नि, बहुला। अरबी में इसे 'अथ थुरेया' कहते हैं। इस नक्षत्र में छह तारों की स्थिति मानी गयी है। देवता अग्नि एवं स्वामी गुरु सूर्य है। कृत्तिका प्रथम चरण मेष राशि (स्वामी : मंगल) एवं शेष तीन चरण वृष राशि (स्वामी : शुक्र) में आते हैं।

गणः राक्षस, योनिः मेष एवं नाड़ीः अंत है।

चरणाक्षर हैं: अ, इ, उ, ए।

कृत्तिका नक्षत्र में जन्मे जातक मध्यम कद, चौड़े कंधे तथा सुगठित मांसपेशियों वाले होते हैं। ऐसे जातक अत्यंत बुद्धिमान, अच्छे सलाहकार, आशावादी, कठिन परिश्रमी तथा एक तरह हठी भी होते हैं। वे वचन के पक्के तथा समाज की सेवा भी करना चाहते हैं। वे येन–केन–प्रकारेण अर्थ, यश नहीं प्राप्त करना चाहते, न तो अवैध मार्गों का अवलंबन करते हैं, न किसी की 'दया' पर आश्रित रहना चाहते हैं। उनमें अहं कुछ अधिक होता है, फलतः वे अपने किसी भी कार्य में कोई त्रुटि नहीं देख पाते। वे परिस्थितियों के अनुसार ढलना नहीं जानते। तथापि ऐसे जातक का सार्वजनिक जीवन यशस्वी होता है। लेकिन अत्यधिक ईमानदारी भरा व्यवहार उनके 'पतन' का कारण बन जाता है।

ऐसे जातकों को सत्तापक्ष से लाभ मिलता है। वे चिकित्सा या इंजीनियरिंग के अलावा ट्रेजरी विभाग में भी सफल हो सकते हैं, विशेषकर सूत निर्यात, औषध या अलंकरण वस्तुओं के व्यापार में। सामान्यतः जन्मभूमि से दूर ही उनका उत्कर्ष होता है।

ऐसे जातकों का वैवाहिक जीवन सुखी बीतता है। पत्नी गुणवती, गृह कार्य में दक्ष तथा सुशील होती है। प्रायः उनकी पत्नी उनके परिवार की पूर्व परिचित ही होती है। प्रेम–विवाह के भी संकेत मिलते हैं।

ऐसे जातकों का स्वास्थ्य भी सामान्यतः ठीक ही रहता है तथापि उन्हें दंत-पीड़ा, नेत्र-विकार, क्षय, बवासीर आदि रोग जल्दी ही पकड़ सकते हैं।

कृत्तिका नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं मध्यम कद की बहुत रूपवती तथा साफ–सफाई पसंद होती हैं। वे अनावश्यक रूप से किसी से 'दबना' पसंद नहीं करतीं, फलतः जाने–अनजाने उनका स्वभाव कलह पैदा करने वाला बन जाता है। उनमें संगीत, कला के प्रति रुचि होती है तथा वे शिक्षिका का कार्य बखूबी कर सकती हैं। कृत्तिका के प्रथम चरण में जन्मी जातिकाएं उच्च अध्ययन में सफल होती हैं तथा प्रशासक, चिकित्सक, इंजीनियर आदि भी बन सकती हैं।

कृत्तिका नक्षत्र में जन्मी जातिकाओं का वैवाहिक जीवन पूर्णतः सुखी नहीं रह पाता। पति से विलगाव या कभी–कभी प्रजनन क्षमता की हीनता भी इसका एक कारण हो सकती है।

कृत्तिका के विभिन्न चरणों के स्वामी इस प्रकार हैं: प्रथम एवं चतुर्थ चरण–**गुरु**, द्वितीय एवं तृतीय चरण–**शनि**।

कृत्तिका नक्षत्र में सूर्य के फल

कृत्तिका के द्वितीय चरण में ही सूर्य की स्थिति के शुभ फल मिलते हैं।

प्रथम चरणः अन्य शुभ ग्रहों की युति हो तो अधिक संतानें तथापि दरिद्र जीवन। सेना या पुलिस विभाग में सेवा के अवसर। जातक की ज्योतिष शास्त्र में भी रुचि होती है।

द्वितीय चरणः सुखी जीवन के संकेत। जातक दीर्घायुष्य एवं संतति सुख से पूर्ण होता है। जातक की संगीत में भी रुचि होती है। प्रौढ़ावस्था के बाद संपन्नता के अवसर।

तृतीय चरणः सूर्य की स्थिति यहाँ शुभ नहीं होती। जातक को दरिद्रतापूर्ण जीवन बिताना पड़ता है। कोई रोग भी घेर सकता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ भी सूर्य की स्थिति अच्छे फल नहीं देती। जातक क्रूर–मना, गैर–जिम्मेदार तथा दुर्बल स्वास्थ्य वाला होता है।

कृत्तिका स्थिति सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

मंगल की दृष्टि हो तो जातक साहसी, रणनीति–निपुण एवं धनी तथा यशस्वी होता है।

बुध की दृष्टि उसे संगीत में निपुण बनाती है। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक एवं जीवन सुखी होता है।

गुरु की दृष्टि हो तो जातक परिवार में श्रेष्ठ तथा राजनीति में हो तो बेहद सफल हो मंत्रीपद तक पहुँच सकता है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक सुंदर व्यक्तित्व वाला तथा यशस्वी होता है।

शनि की दृष्टि शुभ फल नहीं देती। जातक का जीवन कलह से भरा होता है। स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता।

कृत्तिका नक्षत्र में चंद्र

प्रथम चरण: यहाँ चंद्र हो तो जातक को स्त्रियों से कष्ट मिलता है। उसकी मंत्र शास्त्र एवं टोने–टोटकों में भी रुचि होती है।

द्वितीय चरण: यहाँ चंद्र की स्थिति के शुभ फल मिलते हैं। जातक सुंदर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, विद्वानों की संगति करने वाला तथा शक्ति संपन्न होता है।

तृतीय चरण: यहाँ चंद्र हो तो जातक लंबा, चतुर तथापि अभावों से घिरा रहता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ चंद्र की स्थिति के शुभ फल मिलते हैं। जातक अत्यंत विद्वान तथा विभिन्न विषदों का ज्ञाता होता है।

कृत्तिका स्थिति चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि के शुभ फल मिलते हैं। जातक भूस्वामी तथा धनी होता है। उसे कृषि कार्य से लाभ मिलता है।

मंगल की दृष्टि कामाधिक्य की सूचना देती है। फलस्वरूप उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

बुध की दृष्टि से जातक बुद्धिमान, उदार एवं परोपकार में रत होता है।

गुरु की दृष्टि के भी ऐसे ही शुभ फल मिलते हैं।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक का जीवन सुखी बीतता है।

शनि की दृष्टि अशुभ सिद्ध होती है। यदि द्वितीय चरण स्थित चंद्र पर शनि की दृष्टि हो तो उसे माता के लिए घोर अशुभ कहा गया है।

कृत्तिका नक्षत्र स्थित मंगल

प्रथम चरण: यहाँ मंगल जातक को तार्किक एवं प्रशासनिक क्षमता से युक्त करता है फलतः वकालत, सेना या पुलिस सेवा में उसे विशेष सफलता प्राप्त हो सकती है। मंगल एवं सूर्य की महादशाओं, अंतर्दशाओं में जातक शीर्षस्थ पद पर पहुँचने के लिए संघर्ष तेज करता है। जातक में पर–स्त्रियों के प्रति आसक्ति पायी जाती है।

द्वितीय चरण: यहाँ मंगल हो तो जातक उदार, बेहतर मेहमान–नवाज तथापि प्रतिहिंसा की भावना से भी युक्त होता है।

तृतीय चरण: यहाँ मंगल जातक को सत्तापक्ष से अधिकाधिक लाभान्वित करवाता है। वह इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी जा सकता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ मंगल स्थित हो तो जातक जीवन में संपूर्ण सुखों का भोग करता है। विवाह के बाद जीवन तपस्वी होता है। बच्चे भी आज्ञाकारी और कर्त्तव्यनिष्ठ होते हैं। जातक औषध या विस्फोटक सामग्री के विक्रय से विशेष लाभान्वित होता है।

कृत्तिका स्थित मंगल पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो पत्नी लोभी मिलती है। जातक की वन प्रांतर में रहने की प्रवृत्ति होती है।

चंद्र की दृष्टि जातक को मातृ विरोधी बना देती है। बहुपत्नीत्व के भी संकेत कहे गये हैं।

बुध की दृष्टि जातक को धार्मिक, मितभाषी, धनी एवं ललितकला प्रिय बनाती है।

गुरु की दृष्टि भी जातक को संगीत एवं ललित कलाओं में निपुण बनाती है। जातक की परिवार में घोर आसक्ति होती है।

शुक्र की दृष्टि से जातक सैन्य सेवा में उच्च पद पर कार्य करता है।

शनि की दृष्टि भी शुभ फल देती है। जातक धनी, स्वस्थ एवं सबके आदर का पात्र बनता है।

कृत्तिका नक्षत्र स्थित बुध के फल

प्रथम चरण: इस चरण में बुध हो तो जातक शासकीय सेवा में रत रहता है। व्यवसाय में हो तो उसे सत्तापक्ष से लाभ मिलता है। जातक समाज में भी आदर पाता है। उसमें ललित कलाओं एवं अभिनय के प्रति भी रुचि होती है। वह सुरा–सुंदरी का भी शौकीन होता है।

द्वितीय चरण: इस चरण में बुध हो तो जातक हृष्ट–पुष्ट, धनी तथा प्रसन्नचित्त होता है। एकाधिक विवाह के योग भी मिलते हैं। चालीस वर्ष की अवस्था के बाद जातक में संन्यास के प्रति रुझान बढ़ सकता है।

तृतीय चरण: यहाँ स्थित बुध शुभ फल देता है। जातक दृढ़ निश्चयी और जीवन में व्यावहारिक बुद्धि से काम लेता है। शनि के साथ बुध की युति जातक को वैज्ञानिक एवं बौद्धिक ज्ञान अर्जन के लिए प्रवृत्त करती है।

चतुर्थ चरण: इस चरण में बुध जातक को व्यावहारिक, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं सौंपी गयी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाने वाला बनाता है। जातक में नेतृत्व के भी गुण होते हैं। पुत्रों की संख्या ज्यादा होती है।

कृत्तिका नक्षत्र स्थित बुध पर अन्य ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि का फल शुभ नहीं होता। जातक के दरिद्र एवं रोगमुक्त होने के फल कहे गये हैं।

चंद्र की दृष्टि जातक को कठोर परिश्रमी, धनी एवं प्रसिद्ध बना देती है।

मंगल की दृष्टि अशुभ फल देती है। जातक के सत्ता पक्ष से दंडित होने की आशंका रहती है।

गुरु की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक बुद्धिमान एवं नेतृत्व के गुणों से युक्त होता है।

शुक्र की दृष्टि जातक में स्त्रियों के प्रति विशेष आकर्षण पैदा करती है।

शनि की दृष्टि पारिवारिक जीवन को दुःखमय बनाती है। पत्नी एवं संतानों से कलह होती रहती है।

कृत्तिका स्थित गुरु के फल

प्रथम चरण: यहाँ गुरु जातक को ज्ञान–पिपासु बनाता है। जातक शुद्ध हृदय एवं यात्रा–प्रिय भी होता है। वह जीवन जीना जानता है। एक ओर उसकी इतिहास एवं साहित्य के अध्ययन में रुचि होती है तो दूसरी ओर सुरा–सुंदरी का सेवन भी उसे भाने लगता है।

द्वितीय चरण: यहाँ गुरु जातक को लंबे कद का, मातृभक्त तथा धार्मिक कार्यों के कारण प्रसिद्धि दिलाता है। युवतियों के प्रति वह एक विशेष कमजोरी लिए होता है।

तृतीय चरण: यहाँ गुरु हो तो जातक का व्यक्तित्व भव्य होता है। वह

अनुशासन–प्रिय, परामर्श देने में कुशल तथा लोगों का स्नेह एवं आदर अर्जित करता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ गुरु हो तो जातक न्यायप्रिय होता है। पत्नी भी कामकाजी मिलती है।

कृत्तिका स्थित गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को रणकौशल प्रदान करती है।

चंद्र की दृष्टि हो तो जातक सत्यनिष्ठ एवं सौभाग्यशाली होता है।

मंगल की दृष्टि हो तो जातक ललित कलाओं के क्षेत्र में सम्मान पाता है। नौकरशाही से लाभ होता है। बच्चे भी अच्छे होते हैं।

बुध की दृष्टि के फलस्वरूप जातक मंत्र सिद्धि कर सकता है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक जीवन में तमाम सुखों का उपभोग करता है।

शनि की दृष्टि भी शुभ फल देती है। पत्नी एवं बच्चों से उसे पूर्ण सुख मिलता है। जातक समाज में भी आदर पाता है।

कृत्तिका नक्षत्र स्थित शुक्र के फल

प्रथम चरण: यहाँ शुक्र जातक में नारी सुलभ एवं जातिका में पुरुषोचित्त शरीर का भास कराता है। ऐसे लोगों का वैवाहिक जीवन सुखी नहीं होता।

प्रथम चरण स्थित शुक्र पर सूर्य की दृष्टि शीघ्र विवाह एवं विरासत में लाभ मिलने का संकेत करती है। किसी जातिका की कुंडली में प्रथम चरण में स्थित शुक्र पर चंद्र की दृष्टि अधिक संततियों का योग दर्शाती है।

द्वितीय चरण: यहाँ शुक्र हो तो जातक नौसेना या समुद्र से संबद्ध किसी कार्य में संलग्न होता है।

तृतीय चरण: यहाँ शुक्र जातक को उदार एवं कला तथा अभिनय प्रेमी बनाता है। एकाधिक पत्नियों के भी योग कहे गये हैं।

चतुर्थ चरण: यहाँ शुक्र जातक को संगीत या कलाओं के माध्यम से धन उपलब्ध कराता है। उसकी अभिनय में भी रुचि होती है। अनायास विरासत से लाभ के भी संकेत मिलते हैं।

कृत्तिका स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि का शुभ फल होता है। जातक सौभाग्यशाली तथा स्त्रियों से सुख पाता है।

चंद्र की दृष्टि जातक में कामभावना बढ़ाती है। यों जातक शुद्ध हृदय तथा परिवार में प्रतिष्ठित होता है।

मंगल की दृष्टि का अशुभ फल होता है। जातक सुखों से वंचित रहता है।

बुध की दृष्टि हो तो व्यक्तित्व आकर्षक एवं स्वभाव साहसी होता है।

गुरु की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक को सभी सुख मिलते हैं।

शनि की दृष्टि का फल ठीक नहीं होता। जातक दुर्बल स्वास्थ्य वाला तथा परिवार की प्रतिष्ठा का नाशक कहा गया है।

कृत्तिका नक्षत्र स्थित शनि के फल

प्रथम चरण: यहाँ शनि हो तो जातक का प्रारंभिक जीवन दुःखी लेकिन बाद की जिंदगी सुखी होती है। जातक पिता के प्रति आदरभाव नहीं रखता। उसे विभिन्न रोग भी घेर सकते हैं—जैसे अपच से संबंधित रोग। जातक में ईर्ष्या भी कुछ अधिक होती है।

द्वितीय चरण: यहाँ शनि आजीवन असंतुष्ट रखता है। पारिवारिक जीवन भी दुखी रखता है। जातक अपने से बड़ी आयु की स्त्री से विवाह करता है या यौन संबंध रखता है।

तृतीय चरण: यहाँ शनि हो तो जातक को कृषि कार्य से लाभ होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ स्थित शनि पर यदि चंद्र की दृष्टि हो तो जातक स्त्रियों के सहयोग से सफलता एवं धन अर्जित करता है। जातिकाओं के बारे में ऐसी दृष्टि उन्हें असुंदर एवं चरित्रहीनता की सीमा तक ले जाने वाली कही गयी है।

कृत्तिका नक्षत्र स्थित शनि पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक शांतिप्रिय, व्यवहार चतुर तथापि पराश्रित होता है।

चंद्र की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक धनी एवं सत्तापक्ष एवं स्त्रियों की संगति से लाभान्वित होता है।

मंगल की दृष्टि जातक को सुखी तथापि वाचाल बनाती है।

बुध की दृष्टि स्त्रियों में जातक की आसक्ति बढ़ाती है। वह कुसंगति का भी शिकार हो सकता है।

गुरु की दृष्टि का शुभ फल होता है। जातक परोपकारी तथा समाज में समादृत होता है।

शुक्र की दृष्टि जातक को सभी सुख एवं आमोद–प्रमोद के साधन उपलब्ध कराती है। जातक सत्ता पक्ष के भी निकट होता है।

कृत्तिका नक्षत्र में स्थित राहु के फल

प्रथम चरण: यहाँ राहु हो तो जातक बुद्धिमान, तंदुरूस्त तथापि अत्यधिक कामी होता है। विवाह के बाद भी वह अनेक स्त्रियों से संबंध रखता है।

द्वितीय चरण: यहाँ राहु जातक को आध्यात्मिक प्रवृत्ति वाला बना देता है। तथापि जीवन संपन्नता से शून्य होता है। जातक की पर स्त्रियों में भी आसक्ति होती है।

तृतीय चरण: यहाँ राहु जातक को घोर आलसी फलतः दरिद्र बनाये रखता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ भी राहु शुभ फल नहीं देता। जातक बेहद गैर–जिम्मेदार तथा पारिवारिक दायित्व का भी वहन न करने वाला होता है।

कृत्तिका नक्षत्र स्थित केतु के फल

प्रथम चरण: इस चरण में केतु हो तो जातक के नौकरी–जीवन में समस्याएं ही बनी रहती हैं। उसे निराशा का भी सामना करना पड़ता है।

द्वितीय चरण: इस चरण में केतु हो तो जातक घर से दूर जीवन बिताता है। संपत्ति से शून्य ऐसे जातक की स्त्रियों में भी गहरी रुचि बनी रहती है।

तृतीय चरण: इस चरण में केतु सट्टे–फाटके में हानि करवाता है। सत्ता पक्ष से दंडित होने का भी भय बना रहता है।

चतुर्थ चरण: इस चरण में केतु हो तो जातक को नौकरी में बाधाओं का सामना करना पड़ता है। विवाह विलंब से होता है। हुआ भी तो परेशानियां ही बढ़ती हैं। तथापि जातक सुख–सुविधापूर्ण जीवन बिताने में सफल रहता है।

रोहिणी

राशिफल में रोहिणी नक्षत्र 40.00 अंशों से 53.20 अंशों के मध्य स्थित हैं। रोहिणी के पर्यायवाची नाम हैं–विधि, विरंचि, शंकर। अरबी में इसे अल्दे वारान कहते हैं।

रोहिणी नक्षत्र के साथ अनेक पौराणिक कथाएं जुड़ी हुई हैं। कहीं उसे कृष्ण के अग्रज बलराम की मां कहा गया है तो कहीं लाल रंग की गाय। उसे कश्यप ऋषि की पुत्री, चंद्रमा की पत्नी भी माना गया है।

रोहिणी की आकृति रथ की भांति आंकी गयी है।

उसमें कितने तारे हैं, इस विषय में मतभेद हैं। सामान्यतः रोहिणी नक्षत्र में पांच तारों की स्थिति मानी गयी है। दक्षिण भारत के ज्योतिषी रोहिणी में बियालिस तारों की उपस्थिति मानते हैं। उनके लिए रोहिणी वट वृक्ष स्वरूप का है।

यह नक्षत्र वृष राशि (स्वामी : शुक्र) के अंतर्गत आता है।

रोहिणी के देवता ब्रह्मा हैं और अधिपति ग्रह–चंद्र।

गणः मनुष्य, योनिः सर्प व नाड़ीः अंत्या। चरणाक्षर हैं–ओ, बा, वी, वू

रोहिणी नक्षत्र में जातक सामान्यतः छरहरे, आकर्षक नेत्र एवं चुम्बकीय व्यक्तित्व वाले होते हैं। वे भावुक हृदय होते हैं और अक्सर भावावेग में ही निर्णय करते हैं। उन्हें तुनुक–मिजाज भी कहा जा सकता है और उनका हठ लोगों को परेशान कर देता है। उनमें आत्म लुब्धता की भावना भी होती है। वे औरों पर तत्काल भरोसा कर लेते हैं और धोखा भी खाते हैं। लेकिन यह सब उनकी सत्यनिष्ठता में कोई कमी नहीं लाता।

ऐसे जातक वर्तमान में ही जीते हैं, कल की चिंता से सर्वथा मुक्त। उनका जीवन उतार–चढ़ाव से भरा रहता है। वे हर कार्य निष्ठा से संपन्न करना चाहते हैं, पर अधैर्य उन्हें कोई भी कार्य पूरा नहीं करने देता। उनकी ऊर्जा बंट–सी जाती है। वे एक को साधने की बजाय सबको साधने की कोशिश करते हैं, लेकिन ऐसे जातकों को यह उक्ति याद रखनी चाहिए कि–

एक ही साधे सब सधे, सब साधे सब जाय!

यदि वे अधैर्य त्याग कर संयमित होकर कार्य करें तो जीवन में यशस्वी भी हो सकते हैं।

युवावस्था उनके लिए सतत् संघर्ष लेकर आती है। आर्थिक समस्याओं के अतिरिक्त स्वास्थ्य की गड़बड़ी भी उन्हें परेशान किये रहती है। अड़तीस वर्ष की अवस्था के बाद ही जीवन में स्थिरता आती है।

ऐसे जातक माता के प्रति विशेष आसक्त होते हैं। मातृपक्ष से ही उन्हें लाभ भी होता है। पिता की ओर से उन्हें कोई विशेष लाभ नहीं होता।

ऐसे जातकों में यह भी देखा गया है कि जरूरत पड़ने पर वे तमाम रीति–रिवाजों और मान्यताओं को तिलांजलि भी देते हैं। ऐसे जातकों का वैवाहिक जीवन भी विशेष सुखद नहीं बताया गया है।

रोहिणी नक्षत्र में जन्मे जातक रक्त संबंधी विकारों के शिकार हो सकते हैं–यथा रक्त का मधुमेह आदि।

रोहिणी नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं भी सुंदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती हैं। वे सद्–व्यवहार वाली होती हैं तथापि प्रदर्शन–प्रिय भी, रोहिणी नक्षत्र में जन्मे जातकों की तरह वे भी तुनुक–मिजाजी के कारण दुःख उठाती हैं। वे व्यवहारिक होती हैं, अतः वे थोड़े से प्रयत्न से अपनी इस आदत पर काबू पा सकती हैं।

ऐसी जातिकाएं प्रत्येक कार्य को भली भांति करने में सक्षम होती हैं। फलतः उनका पारिवारिक जीवन भी सुखी होता है। लेकिन पूर्ण वैवाहिक एवं पारिवारिक सुख प्राप्त करने के लिए उन्हें अपने ही स्वभाव पर अंकुश लगाने की सलाह दी जाती है।

ऐसी जातिकाओं का स्वास्थ्य प्रायः ठीक ही रहता है।

रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल, द्वितीय चरण का शुक्र, तृतीय चरण का बुध एवं चतुर्थ चरण का स्वयं चंद्र होता है।

रोहिणी नक्षत्र में सूर्य की स्थिति के फल

प्रथम चरणः यहाँ सूर्य जातक के बुद्धिमान, व्यवहार–कुशल और

वेश–भूषा के प्रति ज्यादा सतर्क होने की सूचना देता है। जातक को पशुपालन से लाभ होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ सूर्य हो तो व्यक्तित्व आकर्षक होता है। जातक तेल संबंधी व्यवसाय से जुड़ सकता है।

तृतीय चरणः यहाँ सूर्य जातक को समाजसेवी एवं यशस्वी बनाता है। तथापि उसे आर्थिक अभाव बना रहता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ सूर्य जातक को शासकीय सेवा में ले जाता है। उसे यात्राएं भी करनी पड़ सकती हैं।

रोहिणी नक्षत्र स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

चंद्र की दृष्टि जातक को जल संबंधी व्यवसाय–कार्य से जोड़ती है।

मंगल की दृष्टि उसे धनी एवं यशस्वी बनाती है। जातक सेना से जुड़ सकता है।

बुध की दृष्टि उसे परिवार में, समाज में प्रतिष्ठा दिलाती है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होता है। उसके जितने मित्र होते हैं, उतने ही शत्रु भी होते हैं।

गुरु की दृष्टि हो तो जातक परिवार एवं समाज में भी प्रमुख होता है। सामाजिक मान–सम्मान, यश से युक्त जातक सत्ता पक्ष से भी लाभ पाता है।

शनि की दृष्टि हो तो आर्थिक अभाव एवं खराब स्वास्थ्य की सूचना मिलती है।

रोहिणी नक्षत्र में चंद्र के फल

प्रथम चरणः यहाँ चंद्र हो तो जातक मिष्टभाषी, स्नेहिल व्यवहार वाला एवं धनी होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ चंद्र जातक की संगीत एवं अन्य ललित कलाओं में रुचि बढ़ाता है। शिक्षा में व्यवधान, आवास–परिवर्तन के भी फल कहे गये हैं।

तृतीय चरणः यहाँ चंद्र हो तो जातक को सुंदर स्त्रियों का सान्निध्य मिलता है। जातक बुद्धिमान, आकर्षक व्यक्तित्व वाला तथापि भीरू भी होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ चंद्र जातक को सत्यनिष्ठ बनाता है। रत्न संबंधी व्यापार–कार्य में उसे विशेष सफलता मिलती है।

रोहिणी नक्षत्र स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि से कृषि कार्यों से लाभ होता है। वह धनी एवं गुह्य विधाओं में रुचि रखता है।

मंगल की दृष्टि हो तो जातक सत्यवादी, समादृत तथापि विपरीत योनि वालों के प्रति आकर्षण का अनुभव करता ही रहता है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक अत्यंत बुद्धिमान तथा जीवन में सफल रहता है।

गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप जातक धार्मिक वृत्ति का, उत्तरदायित्वों की पूर्ति करने वाला होता है।

शुक्र की दृष्टि जातक को सभी भौतिक सुख प्रदान करती है।

शनि की दृष्टि हो तो जातक को मातृ–स्नेह से वंचित रहना पड़ सकता है। पिता से भी कोई लाभ नहीं मिलता।

रोहिणी नक्षत्र में मंगल के फल

प्रथम चरणः जातक मधुरभाषी एवं वाद्य संगीत में रुचि रखता है।

द्वितीय चरणः जातक प्रतिरक्षा सेवाओं में जा सकता है। यदि सूर्य के साथ मंगल की युति हो तो यह स्थिति दूसरी बनती है।

तृतीय चरणः मंगल जातक को साहसी एवं विद्वान बनाता है।

चतुर्थ चरणः जातक धनी एवं सुरा–सुंदरी का शौकीन होता है। वह अवैध मार्गों से धन कमाने में भी नहीं हिचकता।

रोहिणी स्थित मंगल पर अन्य ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक पर्वतीय प्रदेशों में रहना पसंद करता है। वह पत्नी को सुख नहीं दे पाता।

चंद्र की दृष्टि जातक को स्त्रियों का सुख प्राप्त कराती है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक धार्मिक शास्त्रों का ज्ञाता, धनी तथापि कलहप्रिय होता है।

गुरु की दृष्टि जातक को संगीत आदि कलाओं में निष्णात तथा सहृदय, परोपकारी बनाती है।

शक्र की दृष्टि हो तो जातक प्रसिद्ध राजनेता बन सकता है।

शनि की दृष्टि के अच्छे फल मिलते हैं। जातक विद्वान एवं ग्राम या नगर का प्रमुख का पद संभाल सकता है।

रोहिणी स्थित बुध के फल

प्रथम चरण: जातक चतुर एवं धनी होता है। पत्नी सुशील, सुसंस्कृत होती है।

द्वितीय चरण: जातक को वेदों का ज्ञाता, विद्वान तथा प्रसिद्ध बनाता है। उसके विवाहपूर्व भी यौन-संबंध हो सकते हैं।

तृतीय चरण: जातक दृढ़ स्वभाव वाला, कामुक वृत्ति का होता है।

चतुर्थ चरण: बुध संबंधियों से लाभ का कारक बनता है।

रोहिणी स्थित बुध पर अन्य ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए अशुभ मानी गयी है। जातक अभावग्रस्त तथापि परोपकारी होता है।

चंद्र की दृष्टि हो तो जातक परिश्रमी, धनी, सत्तापक्ष के निकट होता है।

मंगल की दृष्टि से उसे सत्ता पक्ष से लाभ मिलता है।

गुरु की दृष्टि हो तो जातक बुद्धिमान, धनी, नेतृत्व के गुण वाला होता है।

शुक्र की दृष्टि जातक को कामासक्त बनाती है।

शनि की दृष्टि हो तो जातक को परिवार से मानसिक पीड़ा होती है।

रोहिणी नक्षत्र में गुरु के फल

प्रथम चरण: यहाँ गुरु हो तो जातक सत्यनिष्ठ और दर्शनशास्त्र में गहरी दिलचस्पी रखने वाला होता है। ऐसा ज़ातक हमेशा अच्छे लोगों की संगति करता है। उसका जीवन भी पूर्णतः सुखी रहता है, अच्छी पत्नी, सुयोग्य संतान। जातक में नेतृत्व के भी गुण होते हैं। जातक प्रशासन, संगठन में कुशल एवं यशस्वी होता है।

द्वितीय चरण: यहाँ गुरु हो तो धार्मिक प्रवृत्ति का, पितृ-भक्त, सद्‌गुणी, सत्यनिष्ठ होता है। दो पत्नियों का योग भी बताया गया है। ऐसे जातकों को अस्थमा पैदा करने वाले वातावरण से दूर रहना चाहिए।

तृतीय चरण: यहाँ गुरु हो तो विपरीत फल मिलते हैं। जातक अपनी कामवासना की पूर्ति में ऊंच-नीच का भेद नहीं करता।

चतुर्थ चरण: यहाँ गुरु की उपस्थिति अनेक यात्राओं का योग दर्शाती है। बत्तीस वर्ष की आयु तक जीवन संघर्षमय व आर्थिक तनावों से भरा होता है। इसके बाद किसी सहृदय की सहायता से वह जीवन में संपूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

रोहिणी नक्षत्र स्थित गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक के प्रतिरक्षा सेनाओं में जाने के संकेत मिलते हैं।

चंद्र की दृष्टि जातक को सत्यनिष्ठा से भरपूर, सहृदय और परोपकारी बनाती है।

मंगल की दृष्टि परिवार का पूर्ण सुख प्रदान करती है। अच्छी पत्नी, अच्छे बच्चे। उसे सत्ता पक्ष से भी लाभ मिलता है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक का व्यक्तित्व आकर्षक तथा वह राजनीति में सफलता प्राप्त करता है।

शुक्र की दृष्टि जातक को धनी, सौभाग्यशाली और दरिद्रों की सहायता में प्रवृत्त करती है।

शनि की दृष्टि हो तो जातक धनी, यशस्वी होता है। राजयोग के भी फल मिलते हैं।

रोहिणी नक्षत्र में शुक्र के फल

प्रथम चरण: यहाँ शुक्र हो तो जातक धनी, सभी सुविधाओं से पूर्ण जीवन बिताता है। तथापि पैंतीस वर्ष की अवस्था तक उसे पारिवारिक कलह से त्रस्त रहना पड़ता है। समय के साथ स्थितियो में सुधार आता है।

द्वितीय चरण: यहाँ शुक्र जातक की ललित कलाओं, विशेषकर संगीत में रुचि बढ़ाता है। उसमं लेखन एवं अभिनय के गुण भी होते हैं। जातक का पारिवारिक जीवन सुखी होता है।

तृतीय चरण: यहाँ शुक्र जातक की कामवासना में घोर वृद्धि करता है। फलतः उसे बाद में तरह–तरह के शोषण का शिकार होना पड़ता है। उसे गुप्त रोग भी हो सकते हैं।

चतुर्थ चरण: यहाँ शुक्र हो तो जातक की पत्नी बेहद सुंदर तथा उसके कारण उसकी आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होती है।

रोहिणी नक्षत्र स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक को स्त्रियों से लाभ होता है तथापि वैवाहिक जीवन में अशांति ही भरी होती है।

चंद्र की दृष्टि हो तो जातक मृदुभाषी, परिवार में श्रेष्ठ तथापि काम–वासना से पीड़ित रहता है।

मंगल की दृष्टि जातक को क्रूर ह्रदय बनाती है। उसका जीवन भी अभावमय बीतता है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक का व्यक्तित्त्व आकर्षक एवं स्वभाव शांतिप्रिय होता है।

गुरु की दृष्टि हो तो जीवन सुखी, सुविधाओं से युक्त कहा गया है।

शनि की दृष्टि स्वास्थ्य खराब रखती है। जीवन भी अभावमय बीतता है।

रोहिणी नक्षत्र स्थित शनि के फल

प्रथम चरण: यहाँ शनि हो तो जातक धार्मिक प्रवृत्ति का, सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है। तथापि उसमें जुआरीपन की प्रवृत्ति भी हो सकती है।

द्वितीय चरण: यहाँ शनि हो तो जातक को पशुपालन से लाभ होता है।

तृतीय चरण: यहाँ शनि को शुभ फल देने वाला कहा गया है। जातक अत्यंत बुद्धिमान तथा मृदुभाषी धार्मिक विषयों में शोध-कर्त्ता होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ शनि हो तो जातक सत्ता पक्ष के निकट होता है। वह स्वयं भी राजनीति में जाकर धनी एवं यशस्वी हो सकता है। पशु पालन से भी उसे लाभ होता है।

रोहिणी नक्षत्र स्थित शनि पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि दरिद्रता से भरे जीवन का संकेत करती है।

चंद्र की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक धनी, बलिष्ठ तथा सत्ता पक्ष से सम्मान पाता है।

मंगल की दृष्टि जातक को सामान्य धनी तथा वाचाल बनाती है।

बुध की दृष्टि जातक की काम-पिपासा में घोर वृद्धि करती है। वह पशु की तरह व्यवहार कर सकता है।

गुरु की दृष्टि उसे परोपकारी, रोगियों की सेवा करने वाला बनाती है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक रत्नों के व्यापार से लाभ उठा सकता है। वह सुरा-सुंदरी का भी शौकीन होता है।

रोहिणी नक्षत्र स्थित राहु के फल

प्रथम चरण: यहाँ राहु हो तो जातक छरहरे बदन का निर्भीक मानस वाला होता है। उसे वायु विकार होता है एवं अपच की आशंका बनी रहती है।

द्वितीय चरणः यहाँ राहु अत्यंत शुभ फल देता है। जातक शक्ति संपन्न, असाधारण रूप से ख्यात तथा समाज में समादृत होता है।

तृतीय चरणः यहाँ राहु सर्वथा विपरीत फल देता है। इस चरण में राहु हो तो जातक अभावग्रस्त जीवन बिताता है। वह जल प्रदूषण से होने वाले रोगों का जल्दी शिकार हो सकता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ राहु हो तो जातक में काव्य प्रतिभा होती है। भले वह आधुनिक अर्थ में 'सुशिक्षित' न हो तथापि अपने काव्य के कारण प्रसिद्ध भी होता है। ऐसे जातकों को यात्राओं के समय दुर्घटनाग्रस्त हो जाने का अंदेशा बना रहता है।

रोहिणी नक्षत्र स्थित केतु के फल

प्रथम चरणः यहाँ केतु हो तो जीवन परावलम्बी होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ केतु हो तो बचपन में दृष्टि दोष की आशंका बनी रहती है।

तृतीय चरणः यहाँ केतु जातक को अध्यापन के पेशे से जोड़ता है। पत्नी खर्चीले स्वभाव की होती है।

चतुर्थ चरणः यहाँ केतु के अच्छे फल मिलते हैं। जातक वेदाभ्यासी, विद्वान, तार्किक एवं तंत्र–मंत्र विशारद होता है। ऐसे जातक आयुर्वेदिक चिकित्सा के क्षेत्र में भी सफल होते हैं।

मृगशिर

राशि पथ में 53.20 अंशों से 66.40 अंशों के मध्य मृगशिरा नक्षत्र की स्थिति मानी गयी है। अरबी में उसे 'अल अकाई' कहते हैं। इसके अन्य पदाधिकारी नाम हैं—सौम्य, चंद्र, अग्रहायणी, उडुप।

चंद्रमा को इस नक्षत्र का देवता तथा मंगल को इसका अधिपति ग्रह माना जाता है।

इस नक्षत्र में तीन तारे हैं जिन्हें हिरण अर्थात् मृग के सिर की तरह कल्पित किया गया है। इसके साथ एक पौराणिक कथा जुड़ी हुई। ब्रह्मा ने जब मृग का रूप धर कर अपनी बेटी रोहिणी का पीछा किया तो इस अपराध के कारण उनका सिर काट दिया गया। यही कटा सिर मृग शिर नक्षत्र के रूप में है।

लोकमान्य तिलक के अनुसार इस नक्षत्र का नाम अग्रहायणी इसलिए पड़ा कि वैदिक युग में वसंत सपांत बिंदु इस नक्षत्र के मध्य पड़ता था, अतः इसका नाम अग्रहायणी पड़ा।

इस नक्षत्र के प्रथम दो चरण वृष राशि के अंतर्गत आते हैं और अंतिम दो चरण मिथुन राशि में। वृष का स्वामी शुक्र है, मिथुन का बुध।

गणः देव, योनिः सर्प एवं नाड़ीः मध्य है।

चरणाक्षर हैं—बे, बो, क, की।

मृगशिर नक्षत्र में जन्मे जातक बलिष्ठ, सुंदर, लंबे कद के होते हैं। ऐसे जातक सरल प्रवृत्ति के, निष्पक्ष, सिद्धांतप्रिय तथा राय देने में हमेशा ईमानदारी बरतते हैं। वे सुशिक्षित तथा विभिन्न कार्यों को करने में सक्षम

होते हैं। तथापि उनका एक दोष यह है कि वे किसी पर विश्वास नहीं करते। सदैव संशय से घिर रहते हैं। और कहा गया है—'संशयात्मा विनश्यति।' फल यह होता है कि अक्सर लोग भी ऐन वक्त पर उन्हें धोखा दे जाते हैं। संशय की प्रवृत्ति ऐसे जातकों को भीतर से भीरु भी बना देती है।

ऐसे जातकों का वैवाहिक जीवन सामान्यतः सुखी बीतता है, किंतु पत्नी के सदैव रोगिणी रहने के फल भी कहे गये हैं। जातक का वैवाहिक जीवन यों तो सुखी बीतता है तथापि उसके संशयपूर्ण तथा हठी स्वभाव के कारण संबंध कुछ समय के लिए तनावपूर्ण भी हो सकते हैं।

ऐसे जातकों का बचपन में रुग्ण होना बताया गया है। निरंतर कब्ज के कारण उन्हें उदर रोग भी हो सकते हैं।

मृगशिर नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं छरहरी, तीखे नयन—नक्श वाली तथा अत्यंत बुद्धिमती होती हैं। उनमें सदैव सर्तकता, हाजिर जवाबी भी रहती है तथापि उनकी वाणी का व्यंग्य लोगों को तिलमिला देता है।

ऐसी जातिकाओं की शिक्षा भी अच्छी होती है तथा वे मैकेनिकल या इलैक्ट्रिक इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रानिक्स आदि क्षेत्रों में भी सफल हो सकती हैं।

ऐसी जातिकाओं में समाज सेवा की भावना भी होती है।

ऐसी जातिकाओं का वैवाहिक जीवन सुखी रहता है। भले विवाह पूर्व उनके प्रणय संबंध रहे हो, विवाह के बाद ये पति के प्रति एकनिष्ठ रहती हैं।

ऐसी जातिकाओं को अपने मासिक धर्म में आने वाले दोषों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अन्यथा वे तरह—तरह के रोगों का शिकार भी हो सकती हैं।

मृगशिर नक्षत्र के विभिन्न चरणों के स्वामी हैं—प्रथम चरणः सूर्य, द्वितीय चरणः बुध, तृतीय चरणः शुक्र, चतुर्थ चरणः मंगल।

मृगशिर नक्षत्र में सूर्य के फल

प्रथम चरणः यहाँ सूर्य हो तो जातक भाग्यशाली, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, बुद्धिमान एवं धनी होता है। उसे मुख, नेत्र आदि के रोगों के प्रति सतर्क रहना चाहिए।

द्वितीय चरणः यहाँ सूर्य हो तो भी जातक का व्यक्तित्व शानदार होता है। उसकी गायन—वादन में भी रुचि होती है।

तृतीय चरणः यहाँ सूर्य हो तो जातक आर्थिक जगत में उच्च पद पाता है। वह जन—संपर्क में भी कुशल, सफल होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ सूर्य अच्छे फल देता है। जातक समाजसेवी एवं प्रख्यात होता है।

मृगशिर नक्षत्र स्थित सूर्य पर अन्य ग्रहों की दृष्टि

चंद्र की दृष्टि हो तो जातक जल संबंधी व्यवसाय में सफल होता है।

मंगल की दृष्टि जातक को साहस से धनोपार्जन करने वाला बनाती है।

बुध की दृष्टि से जातक आकर्षक व्यक्तित्व का, प्रसिद्ध लेखक बनता है।

गुरु की दृष्टि उसे सत्ता पक्ष के निकट लाकर लाभ दिलवाती है।

शुक्र की दृष्टि हो तो पारिवारिक जीवन सुखी तथा जातक राजनीति में ऊंचे पद पर पहुँचता है।

शनि की दृष्टि उसे भद्र वृत्ति का तथा अपने से अधिक आयु की स्त्रियों से काम–संबंध रखने वाला बनाती है।

मृगशिर में चंद्र की स्थिति के फल

प्रथम चरणः यहाँ चंद्र जातक को बुद्धिमान, प्रसिद्ध व राजनीति के क्षेत्र में यशस्वी होता है। पत्नी सुंदर, धनी-परिवार से, अनेक पुत्रियों की मां होती है।

द्वितीय चरणः यहाँ चंद्र हो तो जातक का जन्म अभिजात्य परिवार में होता है। वैवाहिक जीवन से पूर्ण सुख मिलता है।

तृतीय चरणः यहाँ भी चंद्र शुभ फल देता है। जातक धनी होता है तथापि उसका आरंभिक जीवन संघर्षमय बीतता है। जातक को माता से पूर्ण स्नेह नहीं मिल पाता।

चतुर्थ चरणः यहाँ चंद्र हो जातक बलिष्ठ एवं स्वस्थ होता है। औषध, रसायन, प्रसाधन सामग्री आदि से संबंधित कार्यों में उसे विशेष सफलता मिलती है।

मृगशिर स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक धनी, साहुकार एवं कृषि–क्षेत्र में लाभ कमाने वाला होता है।

मंगल की दृष्टि शुभ नहीं होती। जातक पत्नी को त्याग परस्त्रियों के प्रेम में पड़ सकता है।

बुध की दृष्टि जातक को विद्या व्यसनी बनाती है।

गुरु की दृष्टि हो तो जातक को जीवन में सभी सुख प्राप्त होते हैं। प्रसिद्धि, अच्छी पत्नी, अच्छे बच्चे।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक को मां से विरासत में संपत्ति मिलती है।

शनि की दृष्टि धन की दृष्टि से शुभ नहीं होती। जीवन अभावमय होता है, तथापि बच्चे अच्छे, आज्ञाकारी होते हैं।

मृगशिर स्थित मंगल के फल

प्रथम चरणः यहाँ मंगल हो तो जातक कटुभाषी एवं अभाव से भरे जीवन वाला होता है। उसे पत्नी का भी बिछोह सहना पड़ता है।

द्वितीय चरणः यहाँ मंगल हो तो जातक अपने ही परिवार के लिए घातक तथा अपयश का कारण बनता है।

तृतीय चरणः यहाँ मंगल हो तो जातक का जीवन दरिद्र होता है। जीवन दुखी ही बीतता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ भी मंगल सामान्य फल देता है। वैवाहिक जीवन सुखी तथापि पत्नी रुग्ण होती है।

मृगशिर स्थित मंगल पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को साहसी एवं प्रकृति–प्रेमी बनाती है तथापि स्त्रियों के प्रति उसके मन में घृणा का भाव बना रहता है।

चंद्र की दृष्टि हो तो जातक में वेश्यागमन की लालसा बलवती हो जाती है। मां का अनादर करने से भी वह नहीं चूकता।

बुध की दृष्टि हो तो जातक अल्प धनी तथापि पुत्रवान होता है।

गुरु की दृष्टि जातक को संगठित एवं गायन–वादन कला की ओर प्रवृत्त करती है।

शुक्र की दृष्टि राजनीति के क्षेत्र में उच्च पद प्राप्त कर सकता है। यदि वह प्रतिरक्षा सेवाओं में जाता है तो वहाँ भी उसे सफलता मिलती है।

शनि की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक ग्राम या नगर–प्रमुख होता है।

मृगशिर स्थित बुध के फल

प्रथम चरणः यहाँ बुध हो तो जातक सर्वगुण सम्पन्न होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ बुध हो तो जातक निम्न कार्यों में जुट कर धन कमाने की ओर प्रवृत्त होता है।

तृतीय चरणः यहाँ बुध शुभ फल देता है। जातक साहसी, बुद्धिमान, प्रसन्नचित्त, साथ ही वासनाप्रिय भी होता है। उसके अनेक संबंध हो सकते हैं।

चतुर्थ चरण: यहाँ बुध हो तो जातक बेहद धार्मिक, ईश्वरभक्त होता है। वह अपने परिश्रम से जीवन में ऊंचाइयों तक पहुँचता है।

मृगस्थिर स्थित बुध पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को नौकरी-पेशा वाला बनाती है।

चंद्र की दृष्टि शुद्ध हृदय, स्वस्थ व परिवार में आसक्ति वाला बनाती है।

मंगल की दृष्टि मिश्रित फल देती है।

गुरु की दृष्टि हो तो जातक अत्यंत बुद्धिमान, विवेकी, वचन-निष्ठ तथा नेतृत्व की क्षमता से युक्त होता है।

शुक्र की दृष्टि जातक को सौभाग्यशाली, धनी बनाती है।

शनि की दृष्टि के शुभ फल नहीं मिलते। जीवन दरिद्र, दुखी होता है। संबंधी भी कष्टों के कारण बनते हैं।

मृगस्थिर स्थित गुरु के फल

प्रथम चरण: यहाँ गुरु हो तो जातक अस्थिर मति होने के बावजूद पठन–पाठन, लेखन का शौकीन तथा प्रसिद्ध होता है।

द्वितीय चरण: यहाँ गुरु जातक को सत्ता पक्ष के निकट बनाये रखता है।

तृतीय चरण: यहाँ गुरु के शुभ फल नहीं मिलते। जातक कृपण अर्थात् कंजूस एवं परिवार सुख से हीन होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ गुरु शुभ फल देता है। जातक धनी--समाज तथा सत्ता पक्ष से सम्मानित होता है। ऐसे जातक दूसरों के मन की बात भी जान लेते हैं।

मृगशिर स्थित गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक धनी एवं सत्ता पक्ष के निकट होता है।

चंद्र की दृष्टि भी जातक को धनी बनाती है तथापि उसमें राज प्रवृत्ति अधिक होती है।

मंगल की दृष्टि हो तो जातक विद्वान, साहसी एवं धनी होता है, तथापि पारिवारिक सुख की कमी होती है।

बुध की दृष्टि भी जातक को विद्वान एवं सदगुण संपन्न बनाती है।

शुक्र की दृष्टि हो तो जातक का व्यक्तित्त्व आकर्षक होता है। स्त्री सुख भी पर्याप्त मिलता है।

शनि की दृष्टि से जातक विद्वता के कारण सर्वत्र प्रशंसित होता है।

मृगशिर स्थित शुक्र के फल

प्रथम चरण: यहाँ शुक्र हो तो जातक ललित कलाओं, विशेषकर संगीत में निष्णात एवं समाज से सम्मानित भी होता है। उसमें अभिनय की भी क्षमता होती है। जातक में काम-प्रवृत्ति की अधिकता के भी फल मिलते हैं।

द्वितीय चरण: यहाँ शुक्र हो तो जातक स्वस्थ, परोपकारी तथा धनी होता है। उसे अनेक स्त्रियों का सुख भी मिलता है।

तृतीय चरण: यहाँ शुक्र हो तो जातक ललित कलाओं में निपुण होता है। विज्ञान एवं शास्त्रों के अध्ययन में भी उसकी रुचि होती है।

चतुर्थ चरण: यहाँ शुक्र जातक की लेखन या काव्य प्रतिभा में चार चांद लगाता है।

मृगशिर स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि हो तो जातक धनी, भूमि एवं भवनों का स्वामी तथा सुंदर स्त्री का पति होता है।

चंद्र की दृष्टि संकेत देती है कि जातक की मां की समाज में अत्यंत प्रतिष्ठा होती है, जिसका उसे भी लाभ मिलता है।

मंगल की दृष्टि वैवाहिक जीवन अशांत बनाती है। स्त्रियों की संगति में उसके धन का अपव्यय होता है।

बुध की दृष्टि जातक को सौभाग्यशाली, प्रसन्नचित्त बनाये रखती है।

गुरु की दृष्टि हो तो पत्नी एवं बच्चों का पूर्ण सुख मिलता है।

शनि की दृष्टि से जीवन दुखी रहता है। पत्नी से भी कष्ट ही मिलता है।

मृगशिर नक्षत्र में शनि के फल

मृगशिर नक्षत्र में शनि के विशेष शुभ फल नहीं मिलते।

प्रथम चरण: यहाँ शनि हो तो जातक छरहरा, अभावग्रस्त तथा निम्न कोटि की स्त्रियों से यौन-संबंधों के लिए आतुर रहता है।

द्वितीय चरण: यहाँ शनि जातक को कुसंगति का शिकार बनाता है। आय से व्यय अधिक होता है। दीर्घजीवी ऐसा जातक सदैव कामातुर बना रहता है।

तृतीय चरण: यहाँ शनि हो तो जातक प्रतिरक्षा सेवाओं में जा सकता है। उसे मस्तिष्क विकार की भी आशंका बतायी गयी है।

चतुर्थ चरण: यहाँ शनि हो तो जातक धार्मिक वृत्ति का, जन्म स्थल से दूर जीवन बिताने वाला होता है।

मृगशिर स्थित शनि पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक वेद अर्थात् धर्मग्रंथों का अभ्यासी एवं विद्वान होता है। पर उसे पराधीन जीवन बिताना पड़ता है।

चंद्र की दृष्टि जातक को राजनीति में सक्रिय कर ऊंची स्थिति में पहुँचा सकती है। वह किसी संगठन या विभाग का प्रमुख बन सकता है। उसमें नेतृत्व की एवं संगठन की क्षमता होती है।

मंगल की दृष्टि सुखी परिवार एवं जातक के प्रतिरक्षा सेनाओं में जाने के संकेत करती है।

बुध की दृष्टि हो तो जातक अवैध कार्यों के कारण निंदित हो सकता है।

गुरु की दृष्टि हो तो जातक परोपकारी एवं सबके सुख-दुःख में हाथ बटाने वाला होता है।

शुक्र की दृष्टि प्रथम चरण स्थित शनि पर हो तो जातक अपार संपत्ति का स्वामी बनता है। वह सत्ता पक्ष के निकट रहकर लाभ उठाता है। सुरा–सुंदरी का उसे विशेष शौक होता है।

मृगशिर स्थित राहु के फल

प्रथम एवं चतुर्थ चरण स्थित राहु विशेष शुभ फल देता है।

प्रथम चरण में राहु हो तो जातक वैभव संपन्न एवं समाज में समादृत होता है। चतुर्थ चरण में राहु हो तो जातक विद्वान एवं सत्ता पक्ष से सम्मानित होता है। अच्छी पत्नी, अच्छे बच्चों के कारण पारिवारिक जीवन भी सुखी रहता है।

इन फलों के विपरीत यदि राहु द्वितीय चरण में हो तो जातक तुनुक–मिजाज, कुटिल बुद्धिवाला, वैभव संपन्न होता है। तृतीय चरण में स्थित राहु जातक को ईर्ष्यालु, लोभी एवं असंतुष्ट प्रकृति का बनाता है।

मृगशिर नक्षत्र स्थित केतु के फल

मृगशिर नक्षत्र के तीन चरणों में केतु शुभ फल नहीं देता।

प्रथम चरण में केतु हो तो जीवन चिंताओं से युक्त। तृतीय चरण में हो तो जातक ईर्ष्यालु प्रकृति का तथा चतुर्थ चरण मे हो तो जातक कलह प्रिय, पाप कर्मों में रत रहता है।

केवल द्वितीय चरण में केतु शुभ फल देता है यद्यपि जातक विकलांग हो सकता है तथापि वह अपना सारा जीवन मानसिक रूप से बाधित लोगों की उन्नति के लिए लगा देता है।

आर्द्रा

राशि पथ में आर्द्रा नक्षत्र की स्थिति 66.40 अंशों में 80.00 अंशों के मध्य मानी गयी है। पर्यायवाची अन्य नाम हैं–अरबी में इसे अल हनाह कहा जाता है।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र आर्द्रा नक्षत्र में केवल एक तारे की उपस्थिति को मानता है, जबकि अरबी उसे दो तारों को मिलाकर बना मानते हैं। इसकी आकृति मणि जैसी मानी गयी है। आर्द्रा का देवता रूद्र को माना गया है, जबकि स्वामी ग्रह है–राहु।

नाडीः आद्या, योनिः श्वान, गणः मनुष्य। चरणाक्षर हैं–कू, घ, ङ, छ।

इस नक्षत्र के चारों चरण मिथुन राशि (स्वामीः बुध) के अंतर्गत होते हैं।

आर्द्रा नक्षत्र में जन्मे जातक कर्तव्यनिष्ठ, कठिन परिश्रमी तथा सौंपे गये कार्यों को जिम्मेदारी से निभाने वाले होते हैं। उनमें विविध विषयों का ज्ञान पाने की भी ललक होती है। विनोदी वृत्ति के ऐसे जातक सबसे सज्जनता पूर्ण व्यवहार करते हैं। ऐसे जातक प्रायः अपने जन्म–स्थल से दूर ही जीवन बिताते हैं। चूंकि वे हर विषय में कुछ न कुछ जानकारी रखते हैं, अतः वे शोधकार से लेकर व्यवसाय तक सभी में सफल हो सकते हैं। यद्यपि जीवन में उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, तथापि वे कभी उनका औरों से जिक्र नहीं करते।

ऐसे जातकों का शीघ्र विवाह दुखदायी हो सकता है, जबकि विलम्ब से विवाह पूर्ण पारिवारिक सुख का संकेत करता है।

आर्द्रा नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं सुंदर नेत्र, जरा ऊंची नाक वाली होती हैं। वे बुद्धिमती, शांतिप्रिय तथा दूसरों की सहायता में भी तत्पर रहती हैं। तथापि अनाप–शनाप खर्च की तथा छिद्रान्वेषी प्रकृति कलह पैदा करने वाली होती हैं।

ऐसी जातिकाओं का विवाह प्रायः विलम्ब से होता है, तथापि उन्हें पति या पति के परिवार में पूर्ण सुख नहीं मिलता।

आर्द्रा के विभिन्न चरणों के स्वामी हैं—प्रथम चरण: गुरु, द्वितीय चरण: शनि, तृतीय चरण: शनि, चतुर्थ चरण: गुरु।

आर्द्रा के विभिन्न चरणों में सूर्य की स्थिति

आर्द्रा के विभिन्न चरणों में स्थित सूर्य प्रायः शुभ फल देता है। वह ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता भी बनाता है।

प्रथम चरण: यहाँ सूर्य के फलस्वरूप जातक विद्वान और धनी होता है। गणित में वह दक्ष होता है। वह ज्योतिष शास्त्र का भी ज्ञाता होता है।

द्वितीय चरण: यहाँ सूर्य जातक को मधुरभाषी, विद्वान और परिवार में प्रिय बनाता है।

तृतीय चरण: यहाँ सूर्य व्यक्ति को विविध विषयों का ज्ञाता और ज्योतिष—शास्त्र में दक्ष बनाता है। वित्तीय विषयों की भी उसे अच्छी जानकारी होती है।

चतुर्थ चरण: यहाँ सूर्य हो तो व्यक्ति सज्जन, शास्त्रज्ञ, ज्योतिष—शास्त्र में निपुण होता है। उसका व्यक्तित्व आकर्षक होता है। चालीस वर्ष के बाद उसे जीवन में सफलता मिलती है।

आर्द्रा स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

चंद्र की दृष्टि हो तो जातक आजीविका की तलाश में जन्मभूमि से दूर जाता है। संबंधी उसे पीड़ित करते हैं।

मंगल की दृष्टि उसे आलसी बना देती है। शत्रु भी उसे दुखी करते हैं।

बुध की दृष्टि भी अच्छा फल नहीं देती। हाँ, उसे संतान के कारण सुख मिलता है, पर यहाँ भी संतान की समृद्धि उसे संबंधियों के ईर्ष्या-द्वेष का पात्र बनाती है।

गुरु की दृष्टि उसे तंत्र—मंत्र में प्रवीण बनाती है, पर उसका पारिवारिक जीवन सुखी नहीं होता।

शुक्र की दृष्टि के फलस्वरूप वह विदेश में वासकर धनोपार्जन करता है।

शनि की दृष्टि उसे चतुर बनाती है लेकिन स्त्रियों के हाथों उसे अपमानित भी होना पड़ता है।

आर्द्रा के विभिन्न चरणों में चंद्र की स्थिति

आर्द्रा के तृतीय चरण को छोड़ शेष अन्य चरणों में चंद्र सामान्य फल देता है।

प्रथम चरण: यहाँ चंद्र व्यक्ति का हृदय तो पवित्र और शुद्ध रखता है तथापि चिड़चिड़ा बना देता है।

द्वितीय चरण: यहाँ चंद्र मेकेनिकल विषयों में रुचि पैदा करता है। ऐसे व्यक्ति को अस्थमा और कफ संबंधी रोगों से विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

तृतीय चरण: यहाँ चंद्र हो तो व्यक्ति विद्वान, प्रभावशाली वक्ता और प्रसन्नचित्त होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ चंद्र फिजूलखर्ची वाला बना देता है। ईश्वर के प्रति जातक के मन में आस्था होती है। वह सही माध्यमों से धन कमाता है तथापि मत–वैभिन्न्य के कारण वह पारिवारिक जीवन में सदैव दुखी रहता है।

आर्द्रा में स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि व्यक्ति को परा–भौतिक विषयों का ज्ञाता बनाती है। पर वह धनी नहीं होता।

मंगल की दृष्टि उसे विद्वान बनाती है।

बुध की दृष्टि से उसे सत्ता पक्ष से लाभ होता है।

गुरु की दृष्टि उसे विद्वान और उदार शिक्षक बनाती है।

शुक्र की दृष्टि उसे जीवन में सारे सुख उपलब्ध कराती है।

शनि की दृष्टि अशुभ होती है। ऐसा व्यक्ति अभावग्रस्त रहता है।

आर्द्रा के विभिन्न चरणों में बुध की स्थिति

आर्द्रा के विभिन्न चरणों में स्थित बुध कुछ शुभ फल देता है।

प्रथम चरण: यहाँ बुध प्रत्येक क्षेत्र में सफल होने की क्षमता देता है। ज्योतिष–शास्त्र में भी जातक की रुचि होती है। वह एकाधिक स्त्रियों से यौन–संबंध रखता है।

द्वितीय चरण: यहाँ बुध ज्योतिष–प्रवीण बनाता है। वह धनी होने के साथ–साथ मृदुभाषी भी होता है।

तृतीय चरण: यहाँ बुध होने से जातक अतिशय बुद्धिमान होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ बुध जीवन के सभी सुख उपलब्ध कराता है।

आर्द्रा स्थित बुध पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि सरकारी नौकरी में पद दिलवाती है। उसे अपने वरिष्ठ अधिकारियों या स्वामी की कृपा का लाभ मिलता है।

चंद्र की दृष्टि के फलस्वरूप वह कुशल प्रशासक बनता है।

मंगल की दृष्टि का फल सामान्य होता है।

गुरु की दृष्टि उसे बुद्धिमान और धनी बनाती है।

शुक्र की दृष्टि पारिवारिक जीवन के लिए ठीक नहीं है। पत्नी से सदैव ही विवाद बना रहता है। रसायन शास्त्र में जातक की रुचि होती है।

शनि की दृष्टि का फल शुभ होता है। व्यक्ति उदार होता है और जीवन में उसे अनायास, अपेक्षित सहायता मिलती रहती है।

आर्द्रा के विभिन्न चरणों में गुरु की स्थिति

आर्द्रा के विभिन्न चरणों में गुरु की स्थिति शुभ फल देती है। व्यक्ति समाज का नेता या मंत्री तक बन सकता है।

प्रथम चरण: यहाँ गुरु कलात्मक अभिरुचियां पैदा करता है। व्यक्ति कला संबंधी विषयों का ज्ञाता और शिक्षक होता है।

द्वितीय चरण: यहाँ गुरु उच्च पद पर आसीन करवाता है। वह विभाग–प्रमुख या मंत्री तक बन सकता है।

तृतीय चरण: यहाँ गुरु विशेष फल नहीं देता।

चतुर्थ चरण: यहाँ गुरु लाखों में एक बनाता है।

आर्द्रा स्थित गुरु या विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि धन–धान्य और अच्छी पत्नी, अच्छी संतान का सुख देती है।

चंद्र की दृष्टि उसे समाज में प्रमुख पद दिलाती है।

मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप उसे वायु सेना में अवसर मिलता है। वह मोटर गाड़ियों संबंधी कार्य में जुट सकता है।

बुध की दृष्टि गणितज्ञ और ज्योतिष बनाती है।

शुक्र की दृष्टि के फलस्वरूप जातक धनी तो बनता है, पर अपने धन का उपयोग नहीं कर पाता।

शनि की दृष्टि का फल अच्छा होता है। जातक धनी–मानी होता है। पत्नी अच्छी होती है। संतान भी अच्छी होती है। व्यक्ति लाखों में एक माना जाता है।

आर्द्रा के विभिन्न चरणों में शुक्र की स्थिति

आर्द्रा के विभिन्न चरणों में शुक्र प्रायः शुभ फल देता है।

प्रथम चरण: यहाँ शुक्र वैज्ञानिक विषयों का ज्ञाता बनाता है। स्त्रियों

की कुंडली में आर्द्रा के प्रथम चरण में शुक्र की स्थिति बेहद अशुभ फल देता है। वह अपना स्त्रीत्व तक बेच सकती है।

द्वितीय चरण: यहाँ शुक्र व्यक्ति को विद्वान, और दीर्घजीवी बनाता है। रसायन शास्त्र में उसकी विशेष रुचि होती है।

तृतीय चरण: यहाँ शुक्र विद्वान और धनी बनाता है। जातक आस्तिक और धर्मशील होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ शुक्र की स्थिति बहुत अच्छी मानी गयी है। व्यक्ति अभिनय पटु होता है। संगीत में भी उसकी रुचि होती है।

आर्द्रा स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि चिकित्सक बना सकती है। द्विभार्या योग के भी संकेत मिलते हैं।

चंद्र की दृष्टि शरमीले स्वभाव का बनाती है। वह स्वयं की भावनाएं भली–भांति व्यक्त नहीं कर पाता।

मंगल की दृष्टि हर तरह से शुभ होती है।

बुध की दृष्टि भी शुभ फल देती है।

गुरु की दृष्टि विद्वान बनाती है। सभी प्रकार का सुख देती है।

शनि की दृष्टि कामी तथा यौन–रोगों का शिकार बनाती है।

आर्द्रा के विभिन्न चरणों में शनि की स्थिति

आर्द्रा स्थित शनि न केवल अशुभ फल देता है वरन तरह–तरह से पीड़ित भी करता है।

प्रथम चरण: यहाँ शनि ऋण–ग्रस्त, दुखी और लज्जाहीन बना देता है। व्यक्ति तरह–तरह के बुरे कार्यों में लिप्त रहता है।

द्वितीय चरण: यहाँ शनि ईर्ष्यालु बनाता है। ऐसे व्यक्ति की पराया धन हड़पने में ज्यादा रुचि होती है।

तृतीय चरण: यहाँ शनि कुसंगति का शिकार बनाता है। दुर्दिन कभी उसका साथ नहीं छोड़ते। वह अपराधी भी बन सकता है। पत्नी के साथ भी उसके मधुर संबंध नही रहते।

चतुर्थ चरण: यहाँ शनि व्यक्ति को पत्नी पर निर्भर बनाता है। वह मद्यप्रिय भी होता है। मुकदमेबाजी में उसे कारावास तक हो सकता है।

आ... स्थित शनि पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को पितृ–विरोधी बनाती है। उसे पिता से कोई लाभ नहीं मिलता।

चंद्र की दृष्टि के कारण उसे विधवा बहन का बोझ उठाना पड़ सकता है।

मंगल की दृष्टि भाई–बहनों के लिए शुभ नहीं होती।

बुध की दृष्टि का शुभ फल मिलता है। व्यक्ति विद्वान होता है। पर पारिवारिक जीवन के लिए यह स्थिति अशुभ है।

गुरु की दृष्टि शासन से लाभ दिलाती है।

शुक्र की दृष्टि उसे स्वर्णकार बना सकती है। द्विभार्या योग के भी संकेत हैं।

आर्द्रा के विभिन्न चरणों में राहु की स्थिति

प्रथम चरणः यहाँ राहु अत्यधिक स्वाभिमानी तथा कामुक बनाता है। वह जुए का शौकीन होता है अतः जो कुछ कमाता है, जुए में गवां देता है।

द्वितीय चरणः यहाँ राहु अनैतिक कार्यों में प्रवृत्त कराता है। वह वाचाल भी होता है। बचपन में दुर्घटना में आहत होने की भी आशंका बनी रहती है।

तृतीय चरणः यहाँ राहु शुभ फल देता है। व्यक्ति समाज का प्रमुख भी बन सकता है। पर वह पर–स्त्रीगामी भी होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ राहु द्विभार्या योग होने की आशंका बढ़ाता है लेकिन व्यक्ति मान सम्मान, धन–दौलत भी पाता है।

आर्द्रा के विभिन्न चरणों में केतु की स्थिति

आर्द्रा स्थित केतु झगड़ालु स्वभाव वाला बना देता है।

प्रथम चरणः यहाँ केतु जातक को कृतघ्न, क्रूर और घूर्त प्रवृत्ति का बनाता है। उसकी पत्नी सदैव बीमार रहती है।

द्वितीय चरणः यहाँ केतु झगडालू प्रवृत्ति का बना देता है। परिवार वाले उसे त्याग देते हैं।

तृतीय चरणः यहाँ केतु कृषि कार्यों में लगाता है। पर भूमि गंवा बैठने का भी योग है।

चतुर्थ चरणः यहाँ केतु शुभ फल नहीं देता। व्यक्ति पैतृक संपत्ति भी गंवा बैठता है। वह विषय–बाधा का भी शिकार हो सकता है।

पुनर्वसु

पुनर्वसु नक्षत्र राशि पथ में 80.00 अंशों से 93.20 अंशों के मध्य स्थित माना गया है। अन्य पर्यायवाची नाम हैं--आदित्य, सुरजननी। अरबी में इसे अध-धीरा कहते हैं, अर्थात् 'सिंह का पंजा'। इसमें चार तारे हैं। पुनर्वसु का देवता अदिति एवं स्वामी ग्रह गुरु को माना गया है। गण: देव, योनि: मार्जार तथा नाड़ी: आदि कही गयी है। चरणाक्षर हैं--के, को, ह, ही।

इस नक्षत्र के तीन चरण मिथुन (स्वामी : चंद्र) राशि में आते हैं।

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मे जातक सुंदर, ईश्वर पर अगाध आस्था रखने वाले तथा परंपरा-प्रिय होते हैं। अवैध या अनैतिक कार्यों का वे जमकर प्रतिरोध करते हैं। सादगी भरा जीवन बिताने के आकांक्षी ऐसे जातक परोपकारी, दूसरों की सहायता करने वाले तथापि कुछ गर्म-मिजाज होते हैं। अपनी बहुमुखी प्रतिभा के कारण वे जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल हो सकते हैं। अध्यापन का क्षेत्र हो, अथवा अभिनय का, लेखन का हो या चिकित्सा का, वे सर्वत्र यशस्वी होते हैं।

ऐसे जातक मातृ--पितृ भक्त, गुरुजन का आदर करने वाले भी होते हैं। उनका वैवाहिक जीवन प्रायः सफल नहीं रहता। संबंध--विच्छेद एवं पुनर्विवाह के भी फल कहे गये हैं।

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं शांतिप्रिय तथापि तार्किक प्रकृति की होती हैं, फलतः दूसरों से प्रायः उनकी बनती नहीं। तथापि ऐसी जातिकाएं परोपकारी, सबका सम्मान करने वाली तथा सुखी होती हैं। उन्हें पति का पूर्ण सुख मिलता है। बच्चे भी अच्छे होते हैं।

सामान्यतः ऐसी जातिकाओं का स्वास्थ्य प्रायः ठीक ही रहता है।

पुनर्वसु के विभिन्न चरणों के स्वामी हैं--प्रथम चरण: मंगल, द्वितीय चरण: शुक्र, तृतीय चरण: बुध, चतुर्थ चरण: चंद्र।

पुनर्वसु के विभिन्न चरणों में सूर्य की स्थिति

पुनर्वसु के चतुर्थ चरण को छोड़कर अन्य सभी चरणों में सूर्य के शुभ फल प्राप्त होते हैं।

प्रथम चरण: यहाँ सूर्य की स्थिति जातक को सुशिक्षित, धनी और ज्योतिषी बनाती है।

द्वितीय चरण: यहाँ भी सूर्य शुभ फल देता है। जातक गणितज्ञ और कुशल प्रशासक भी होता है। शिक्षा एवं राजनीति के क्षेत्र में भी वह सफल होता है। उसमें अंतर्ज्ञान की शक्ति भी होती है।

तृतीय चरण: यहाँ भी सूर्य की स्थिति शुभ फलदायक है। यदि सूर्य के साथ गुरु की भी युति हो तो जातक उच्च कोटि का राजनीतिज्ञ होने के साथ–साथ मंत्री पद भी सुशोभित कर सकता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ सूर्य की स्थिति शुभ फल नहीं देती। जीवन अभावग्रस्त बीतता है। यदि लग्न में भी यही चरण हो तो व्यक्ति असाध्य रोग से पीड़ित होता है।

पुनर्वसु स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

चंद्र की दृष्टि के फलस्वरूप व्यक्ति संबंधियों से दुखी होता है। उसे जन्मभूमि से दूर, अभावग्रस्त जीवन बिताना पड़ता है।

मंगल की दृष्टि व्यक्ति को आलसी और शत्रुओं से पीड़ित भी रखती है।

बुध की दृष्टि भी सुखदायक नहीं है। हाँ, जातक को संतान और सत्ता पक्ष से लाभ होता है।

गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप जातक की गुह्य विद्याओं में सक्रिय रुचि होती है। पत्नी और संतान से उसके संबंध तनावपूर्ण रहते हैं।

शुक्र की दृष्टि उसे विदेशों का प्रवासी बनाती है। वहाँ वह पर्याप्त धनोपार्जन करता है।

शनि की दृष्टि के फलस्वरूप वह फिजूलखर्ची लेकिन कर्त्तव्यनिष्ठ होता है। काम–वासना संतुष्टि के लिए वह निम्न श्रेणी की स्त्रियों से संपर्क रख सकता है।

पुनर्वसु के विभिन्न चरणों में चंद्र की स्थिति

पुनर्वसु के विभिन्न चरणों में स्थित चंद्र व्यक्ति को कामातुर एवं काम–कला में प्रवीण बनाता है।

प्रथम चरण: यहाँ चंद्र व्यक्ति को मिश्रित स्वभाव वाला बनाता है। वह कार्य–कुशल भी होता है और अपने इस गुण के कारण समादृत होता है।

द्वितीय चरण: यहाँ चंद्र हो तो व्यक्ति स्त्रियों में विशेष रुचि रखता है। वह कामकला प्रवीण भी होता है और विवाह भी तीन–चार करता है। अपने गुणों के कारण यद्यपि वह वैज्ञानिक, राजदूत आदि भी बन सकता है, पर

उसे जुआ खेलने का भी शौक होता है।

तृतीय चरण: यहाँ भी चंद्र स्त्रियों का शौकीन बनाता है। वह चतुर, संगीत–प्रिय होने के साथ–साथ जुआरी प्रवृत्ति का भी होता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ भी चंद्र काम–कला प्रवीण बनाता है। गुरु के साथ युति उसे धनी और कुटुंब का प्रमुख बनाती है, जबकि मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप वह बेहद स्वार्थी बन जाता है, इतना कि जरूरत पड़ने पर पत्नी को भी बेच सकता है।

पुनर्वसु स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि शुभ फल देती है, व्यक्ति विद्वान, सुशील लेकिन अभावों से भी घिरा होता है।

मंगल की दृष्टि उसे उदार, बुद्धिमान, धनी व विविध विषयों का ज्ञाता बनाती है।

बुध की दृष्टि के फलस्वरूप उसे शासन से लाभ मिलता है।

गुरु की दृष्टि उसे विद्वान, प्रसिद्ध और परोपकारी बनाती है।

शुक्र की दृष्टि के कारण उसे जीवन के सभी सुख मिलते हैं।

शनि की दृष्टि उसे अभावग्रस्त रखती है तथा पत्नी–सुख और धन से हीन रखती है।

पुनर्वसु के विभिन्न चरणों में बुध की स्थिति

पुनर्वसु के विभिन्न चरणों मे बुध शुभ फल देता है।

प्रथम चरण: यहाँ बुध व्यक्ति को गणितज्ञ और बहीखाता लिखने में निपुण बनाता है। वह अपने क्षेत्र में उच्च पद तक पहुँचता है। वह धनी और प्रसिद्ध भी होता है। कला ही नहीं, विज्ञान की अनेक विद्याओं का भी उसे अच्छा ज्ञान होता है।

द्वितीय चरण: यहाँ भी बुध सफल एकाउंटेंट बनाता है। वह बिना किसी पूर्वाग्रह के सबके प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाता है। वह बिना किसी भेदभाव के सबसे समान व्यवहार करता है। वह सर्वत्र आदर भी पाता है।

तृतीय चरण: यहाँ बुध परोपकारी व निःस्वार्थ जनसेवी बनाता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ बुध धन–दौलत से संपन्न, शासकों का प्रिय और प्रसिद्ध बनाता है।

पुनर्वसु स्थित बुध पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि उच्चपद दिलाती है। वह सत्य-वक्ता और सरकार से लाभान्वित भी होता है।

चंद्रमा की दृष्टि उसे वाचाल पर उग्र–स्वभाव वाला बनाती है।

मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप वह कला–निपुण और ईमानदार होता है। उसका व्यक्तित्व भी लोगों को आकर्षित करता है।

गुरु की दृष्टि उसे विद्वान और धनी बनाती है। उसे शासन से लाभ भी मिलता है।

शुक्र की दृष्टि के फलस्वरूप वह शत्रु–हंता होता है। विवाद सुलझाने में वह कुशल होता है।

शनि की दृष्टि उसे सुशील स्वभाव का, सबका आदर करने वाला बनाती है।

पुनर्वसु के विभिन्न चरणों में गुरु की स्थिति

पुनर्वसु के विभिन्न चरणों में गुरु सामान्यः शुभ फल ही देता है। लेकिन पारिवारिक जीवन में पत्नी के कारण तनाव बना रहता है।

प्रथम चरणः यहाँ गुरु समस्त भौतिक सुख प्रदान करता है। यही नहीं, व्यक्ति मान–सम्मान और आदर भी पाता है। लेकिन पारिवारिक जीवन की दृष्टि से यह स्थिति अच्छी नहीं होती। पत्नी संदेह करती रहती है और फलस्वरूप तनाव बना रहता है।

द्वितीय चरणः यहाँ गुरु प्रसिद्ध, परोपकारी बनाता है और व्यक्ति शासन अथवा राजनीति के क्षेत्र में उच्चपद प्राप्त करता है। यहाँ भी पत्नी की संकीर्ण मनोवृत्ति उसे व्यथित रखती है।

तृतीय चरणः यहाँ भी गुरु शुभ फल देता है। व्यक्ति शासन, सार्वजनिक क्षेत्र में सफलता अर्जित करता है। यदि इस चरण में गुरु के साथ सूर्य की युति हो तो व्यक्ति उच्च राजनेता या मंत्री बनता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ गुरु अत्यंत प्रसिद्ध बनाता है लेकिन जातक को न तो सुख नसीब होता है और न धन–दौलत। मित्र और संबंधी उसे दुखी करते हैं। पराये लोग उसे देव तुल्य मान कर सम्मान करते हैं।

विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

पुनर्वसु स्थित गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि के फल इस प्रकार हैं।

सूर्यः शुभ फल, अच्छी पत्नी, योग्य संतति तथा संबंधियों को आदर, मान–सम्मान।

चंद्रः अच्छे व्यवहार के कारण लोकप्रिय, यशस्वी, ग्रामों एवं नगरों में प्रशासन–भार की भी संभावना।

मंगलः प्रतिरक्षा सेनाओं में जाने की संभावना। अनेक अवरोधों के बाद जीवन में सफलता।

बुधः पारिवारिक जीवन सुखमय। ज्योतिष शास्त्र में भी रुचि।

शुक्रः अशुभ फल। स्त्रियों से पीड़ा–कष्ट। यदि शुक्र के साथ बुध की भी दृष्टि हो तो शुभ फल। संपत्ति की प्राप्ति।

शनिः शासन पक्ष से बेहद लाभ। राजनीति के क्षेत्र में सफलता।

पुनर्वसु के विभिन्न चरणों में शुक्र की स्थिति

द्वितीय चरण को छोड़कर पुनर्वसु के शेष चरणों में शुक्र अच्छे फल देता है।

प्रथम चरणः यहाँ शुक्र जातक को अपने समाज में लोकप्रिय बनाता है। उसे हर तरह की विलास–सामग्री उपलब्ध रहती है।

द्वितीय चरणः यहाँ शुक्र आलसी बनाता है। उसकी जीवन के कार्य कलापों में कोई रुचि नहीं होती। 'वक्त आने पर देखा जाएगा' उसका स्वभाव होता है।

तृतीय चरणः यहाँ शुक्र शुभ फल देता है। व्यक्ति विद्वान और धनी होता है। शासकीय सेवा में नौकरी करता है, पर उसे बार–बार काम बदलना पड़ता है। वह इंजीनियरिंग के क्षेत्र में सफल हो सकता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ शुक्र वैवाहिक जीवन सुखी और संपन्न रखता है। उसकी संतान अच्छी होती है।

पुनर्वसु स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि अशुभ फल देती है। व्यक्ति कुसंगति में पड़ जाता है।

चंद्र की दृष्टि उसे उसे आकर्षक व्यक्तित्व प्रदान करती है। वह सत्ता-पक्ष का कृपा-पात्र और अधिकार संपन्न होता है।

मंगल की दृष्टि से जातक प्राचीन शास्त्रों में निपुण / बुद्धिमान होता है।

बुध की दृष्टि से वह रणनीति–निपुण, बुद्धिमान और धनी होता है।

गुरु की दृष्टि उसे धनी और सद्‌गुण संपन्न बनाती है। समाज उसका आदर करता है।

शुक्र की दृष्टि उसे स्वर्णकार आभूषणों के व्यापार में प्रवृत्त करती है।

शनि की दृष्टि के कारण जीवन दुखी हो जाता है। तरह–तरह के अपमान झेलने पड़ते हैं।

पुनर्वसु के विभिन्न चरणों में शनि की स्थिति

पुनर्वसु के द्वितीय एवं तृतीय चरण में शनि शुभ फल देता है, जबकि प्रथम एवं चतुर्थ चरण में शुभ फल नहीं मिलते।

प्रथम चरण: यहाँ शनि अच्छा नहीं माना गया है। व्यक्ति सटोरिया होता है और उसमें सब-कुछ उड़ा देता है। वह कर्जदार भी हो जाता है। कभी–कभी आपराधिक मामलों में भी यह फंस जाता है।

द्वितीय चरण: यहाँ शनि अच्छे फल देता है। व्यक्ति साहूकारी का धंधा करता है। लौह–इस्पात से संबंधित उद्योगों से उसे लाभ होता है।

तृतीय चरण: यहाँ शनि परिश्रमी और सक्रिय बनाता है। वह केमिकल या मैकेनिकल इंजीनियर बन सकता है। उसे उच्च पद भी मिलता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ शनि व्यक्ति को गुस्सैल बनाता है। उसकी यह प्रवृत्ति नाना प्रकार की समस्याओं को जन्म देती है। उसका बचपन दुखी बीतता है।

पुनर्वसु के विभिन्न चरणों में राहु की स्थिति

पुनर्वसु में राहु की स्थिति सामान्यतः शुभ फल देती है।

प्रथम चरण: यहाँ राहु सही निर्णय करने की क्षमता देता है। लेखन, प्रकाशन और शिक्षण से उसे लाभ मिलता है।

द्वितीय चरण: यहाँ राहु व्यक्ति को विज्ञान के क्षेत्र में उसके किसी शोध के कारण प्रसिद्ध बनाता है। उसका व्यक्तित्व आकर्षक और दृष्टिकोण उदार होता है।

तृतीय चरण: यहाँ राहु व्यक्ति को बुद्धिमान और अच्छी स्मरण-शक्ति वाला बनाता है। लोभ से दूर वह संतोषी प्रवृत्ति का होता है। सरकारी नौकरी में वह एकाउंट विभाग में प्रमुख भी बन सकता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ राहु साहित्यकार–पत्रकार अथवा प्रकाशक बना देता है। राहु–बुध की युति ज्योतिष–प्रवीण बनाती है। वह गणितज्ञ होता है। साथ ही स्त्रियों का शौकीन भी।

पुनर्वसु के विभिन्न चरणों में केतु की स्थिति

प्रथम चरण: यहाँ केतु भाई–बहनों के लिए घातक होता है।

द्वितीय चरण: यहाँ केतु से ज्ञात होता है कि व्यक्ति का जन्म समृद्ध परिवार में हुआ है। उसका पिता समाज का सम्माननीय सदस्य है। पर जातक ऐसे देव तुल्य पिता के लिए दुःख ही दुःख पैदा करता है।

तृतीय चरण: यहाँ केतु हो तो तीन पत्नियों की संभावना बनती है। ऐसा व्यक्ति सदैव कर्ज में डूबा रहता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ केतु घोर परिश्रम के बावजूद दरिद्र रखता है। तथापि संतान से उसे सुख मिलता है।

पुष्य

राशि पथ में पुष्य नक्षत्र की स्थिति 93.2 अंशों से 106.40 अंशों से मध्य मानी गयी है। पुष्य के अन्य पर्यायवाची नाम हैं--तिस्य, अमरेज्या।

अरबी में उसे अन–तराह कहते हैं। इस नक्षत्र में तीन तारे हैं।

पुष्य का देवता गुरु एवं स्वामी ग्रह शनि कहा गया है।

गण: देव, योनि: मेष एवं नाड़ी: मध्य है।

चरणाक्षर हैं–हू, हे, हो, डा।

पुष्य के चारों चरण कर्क राशि (स्वामी : चंद्र) में आते हैं।

पुष्य नक्षत्र में जन्मे जातक प्रायः अस्थिर मति के होते हैं। हर बात में संदेह उनकी प्रकृति होती है। प्रशंसा उन्हें फुला देती है, जबकि आलोचना असह्य। वे तत्काल अवसाद में घिर जाते हैं। फलतः मीठा बोल कर उनसे अच्छा कार्य करवाया जा सकता है। उनमें जन्मजात प्रतिभा एवं बुद्धिमता भी होती है तथा वे अवैध, अनैतिक एवं कानून–विरोधी कार्यों का जमकर विरोध करते हैं।

उन्हें कोई भी कार्य सौंप कर निश्चिंत हुआ जा सकता है, क्योंकि वे सौंपे गये कार्य को निहायत ईमानदारी एवं संपूर्ण कुशलता से करने का प्रयत्न करते हैं।

पुष्य नक्षत्र में जन्में जातक थियेटर, कला एवं वाणिज्य व्यवसाय के क्षेत्र में सफल हो सकते हैं।

ऐसे जातकों का पारिवारिक जीवन प्रायः समस्याग्रस्त रहता है तथा परिस्थितियों वश उन्हें अपनी पत्नी एवं बच्चों से दूर जीवन बिताना पड़

सकता है तथापि इससे परिवार के प्रति उनकी आसक्ति में कोई कमी नहीं आती।

पुष्य नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं शांति प्रिय, सौजन्य से भरी तथा समर्पण की भावना से युक्त होती हैं—फलतः अक्सर वे सबके दबाव और दुर्व्यवहार का भी शिकार बनी रहती हैं। ऐसी जातिकाएं ईश्वर—भक्त तथा सबकी सहायता करने वाली होती हैं।

ऐसी जातिकाएं अपने मन की बात मुश्किल से व्यक्त करती हैं, ज्यादातर वे अपने मन को अभिव्यक्त ही नहीं करतीं। वैवाहिक जीवन में भी वे पति तक से अपने मन की बात नहीं कहतीं, फलतः हमेशा गलत समझी जाती हैं। सिवाय आत्म—पीड़ा के उन्हें कुछ नहीं मिलता। ऐसी जातिकाएं श्वास संबंधी रोग का शिकार हो सकती हैं।

पुष्य के विभिन्न चरणों के स्वामी—प्रथम चरणः सूर्य, द्वितीय चरणः बुध, तृतीय चरणः शुक्र तथा चतुर्थ चरणः मंगल।

पुष्य के विभिन्न चरणों में सूर्य

पुष्य के विभिन्न चरणों में सूर्य के मिश्रित फल प्राप्त होते हैं।

प्रथम चरणः यहाँ सूर्य पिता के लिए लाभकारी सिद्ध होता है। जातक का व्यक्तित्व सुंदर और आकर्षक होता है। यहां स्थित सूर्य पित्त और कफ संबंधी व्याधियां बढ़ाता है।

ज्योतिष—शास्त्र के अनुसार यदि लग्न मघा नक्षत्र में हो एवं सूर्य पुष्य नक्षत्र में हो तो जातक का जन्म यद्यपि सामान्य और अभावग्रस्त परिवार में होता है, तथापि जातक के जन्म के बाद उसके पिता की स्थिति में उत्तरोत्तर सुधार होता जाता है और फलतः जातक का जीवन सुखी बीतता है।

ऐसे जातकों में नशे के प्रति सहज आकर्षण होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ सूर्य चित्त की अस्थिरता बढ़ाता है। फलतः वह कोई काम एकाग्रचित्त से नहीं कर पाता। तथापि ऐसा व्यक्ति कर्त्तव्यनिष्ठ और ईमानदार होता है। इंजीनियरिंग के क्षेत्र में उसे सफलता मिलती है, विशेषकर अंतरिक्ष संबंधी इंजीनियरिंग के क्षेत्र में।

तृतीय चरणः यहाँ सूर्य शुभ फल देता है। जातक राजसी वृति का होता है। अपने व्यवहार और कार्यों से उसे सफलता और प्रसिद्धि भी प्राप्त होती है। सामान्यतः ऐसे जातक लंबे कद के होते हैं तथापि उनकी नेत्र—दृष्टि विकार युक्त होती है।

चतुर्थ चरणः यहाँ सूर्य सामान्य फल देता है तथापि जातक पत्नी के मामले में सौभाग्य शाली नहीं होता। पत्नी उसकी प्रगति के मार्ग में बाधा बन जाया करती है।

पुष्य स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

चंद्र की दृष्टि औद्योगिक क्षेत्र में सफलता प्रदान करती है। व्यक्ति या तो स्वयं सफल--प्रसिद्ध उद्योगपति होता है, अथवा फिर वह शासकीय क्षेत्र के अथवा निजी क्षेत्र के किसी उद्योग में उच्च पद पर होता है।

मंगल की दृष्टि जातक को धनी–मानी बनाती है। तथापि वह रोग ग्रस्त भी होता है। संबंधी भी उसके मार्ग में बाधक बनते हैं।

बुध की दृष्टि उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सहायक होती है। व्यक्ति शासकीय सेवा में होता है।

गुरु की दृष्टि उसे राजनीति अथवा प्रतिरक्षा विभाग की ओर प्रेरित करती है।

शुक्र की दृष्टि व्यक्ति को परोपकारी बनाती है। धातु उद्योग में उसे विशेष सफलता दिलाती है।

शनि की दृष्टि रोग–ग्रस्त बनाती है। जीवन–साथी की आयु पर अशुभ प्रभाव डालती है। जातक बेहद चतुर होता है, पर घोर स्वार्थी भी।

पुष्य के विभिन्न नक्षत्रों में चंद्र की स्थिति

पुष्य के प्रथम तीन चरणों में स्थित चंद्र प्रायः शुभ फल देता है। चतुर्थ चरण में स्थित चंद्र का फल ठीक नहीं है।

प्रथम चरणः यहाँ जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होता है। किंतु स्वास्थ्य में कफ-वायु का विकार उसे परेशान रखता है। ऐसा व्यक्ति स्त्रियों के प्रति कोमल भावनाएं रखता है व जल्दी ही उनके प्रभाव में आ जाता है।

द्वितीय चरणः यहाँ जन्मा व्यक्ति धनी होता है। जमीन–जायदाद मकान के सुख से युक्त। उसके अनेक अच्छे और सच्चे मित्र होते हैं। ऐसा व्यक्ति 'यत्र नार्यस्तु पूजयंते रमंते तत्र देवता' की उक्ति के अनुसार आचरण करता है अर्थात् स्त्रियों के प्रति सदैव आदर भाव रखता है।

तृतीय चरणः यहाँ चंद्र जातक को विदेश प्रवास का शौकीन बनाता है। वहाँ अपने परिश्रम के कारण वह मान--सम्मान और धन भी अर्जित करता है। प्रकृति से उसे अच्छा प्यार होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ चंद्र जातक को कुमार्गी बनाता है। वह स्वार्थ लोलुप,

दूसरों की संपत्ति हड़पने वाला बन जाता है। उसकी ये प्रवृतियां उसे स्व–जन से भी दूर कर देती हैं।

पुष्य स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि व्यक्ति को साहसी बनाती है। वह सरकारी सेवा में होता है, अधिकार, सुरक्षा अथवा विधि–विभाग में।

मंगल की दृष्टि उसे अपने काम में होशियार बनाती है। मां के लिए यह दृष्टि अशुभ मानी गयी है।

बुध की दृष्टि उसे मान–सम्मान, प्रसिद्धि प्रदान करती है, विशेषकर राजनीति के क्षेत्र में। उसे परिवार का पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

गुरु की दृष्टि उसे शिक्षा के क्षेत्र में ऊंचाईयों तक ले जाती है। वह विद्वान भी होता है।

शुक्र की दृष्टि उसे परोपकारी, धनी–मानी बनाती है पर व्यक्ति में काम–भावना भी प्रबल होती है

शनि की दृष्टि का फल अच्छा नहीं होता। जातक अभावग्रस्त और रोगी रहता है, विशेषकर तपेदिक से।

पुष्य के विभिन्न चरणों में बुध की स्थिति

पुष्य के विभिन्न चरणों में स्थित बुध प्रायः शुभ फल देता है।

प्रथम चरणः यहाँ बुध जातक को संपन्न बनाता है। जमीन–जायदाद आदि का वह स्वामी होता है। यह भी कहा गया है कि यदि लग्न में स्वाति अथ्वा मघा नक्षत्र हो तो जातक बहुत धनी होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ बुध जातक को विश्वास पात्र बनाता है फलतः उसे ऐसा पद मिलता है, जहाँ अत्यधिक विश्वास पात्र व्यक्ति की नियुक्ति की आवश्यकता होती है। यदि इस चरण में बुध के साथ शनि भी हो तो जातक की इंजीनियरिंग में रुचि होती है।

तृतीय चरणः यहाँ बुध व्यक्ति को ललित–कला प्रिय बनाता है, विशेषकर संगीत, नृत्य में उसकी विशेष अभिरुचि होती है। ऐसा व्यक्ति व्यवहार चतुर भी होता है। अपनी सूझ–बूझ से वह महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों का सामीप्य पाता है। विदेश–प्रवास के अवसर भी उसे मिलते हैं।

चतुर्थ चरणः यहाँ बुध जातक को बुद्धिमान बनाता है। ललित कलाओं में उसकी रुचि होती है। अपनी बुद्धिमता के कारण वह राज–नेताओं का विश्वास अर्जित कर सकता है।

पुष्य स्थित बुध पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक को दंत चिकित्सक बना सकती है।

चंद्र की दृष्टि शुभ फल नहीं देती। आय से व्यय अधिक होता है, फलतः अभाव की स्थिति बनी रहती है।

मंगल की दृष्टि शिक्षा के मार्ग में बाधक बनती है।

गुरु की दृष्टि उसे विद्वान और विज्ञान एवं अन्य विषयों में पारंगत बनाती हैं वह सत्तासीन लोगों का विश्वास पात्र भी बनाती है।

शुक्र की दृष्टि शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति दिलाती है। भौतिकी में उसकी विशेष रुचि होती है। उसका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है।

शनि की दृष्टि उसे गुण–हीन और विवाद–प्रिय बनाती है।

पुष्य के विभिन्न चरणों में गुरु की स्थिति

पुष्य के विभिन्न चरणों में स्थित गुरु शुभ फल प्रदान करता है।

प्रथम चरणः यहाँ गुरु जातक को विद्वान, शास्त्र पारंगत और धनी बनाता है। जीवन में उसे सभी तरह के सुख प्राप्त होते हैं।

द्वितीय चरणः यहाँ भी गुरु जातक को सौभाग्यशाली बनाता है। उसे जीवन में परिवार का, संपत्ति का, मित्रों का सभी का सुख मिलता है। अपनी बुद्धिमत्ता से वह ऊंचा पद भी प्राप्त करता है।

तृतीय चरणः यहाँ गुरु व्यक्ति को विश्वास पात्र बनाता है। वह बुद्धिमान भी होता है तथा ऊंचे पद पर भी कार्य करता है। ऐसा व्यक्ति इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी सफल होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ गुरु इंजीनियरिंग की शिक्षा उपलब्ध करता है। जातक का इंजीनियरिंग कौशल उसे मान–सम्मान दिलाता है।

पुष्य स्थित गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

गुरु पर सूर्य की दृष्टि जातक को उद्‌भट विद्वान बनाती है। वह विभाग प्रमुख भी होता है।

चंद्र की दृष्टि भी उसे अतिशय धनी बनाती है। उसे अच्छी पत्नी मिलती है। बच्चों का भी पूरा सुख मिलता है।

मंगल की दृष्टि भी जातक को धनी बनाती है। इस दृष्टि के फलस्वरूप जातक का विवाह अपेक्षाकृत जल्दी होता है।

बुध की दृष्टि राजनीति के क्षेत्र में सफल बनाती है। जातक परिवार के प्रति सारे दायित्व बखूबी निभाता है।

शुक्र की दृष्टि उसे अनायास धन दिलाती है। साथ ही वह कामी भी बहुत होता है।

शनि की दृष्टि जातक को समाज में प्रतिष्ठा दिलाती है। वह अपने समाज का नेतृत्व भी करता है।

पुष्य के विभिन्न चरणों में शुक्र की स्थिति

पुष्य के तृतीय चरण को छोड़कर शेष सभी चरणों में स्थित शुक्र शुभ फल प्रदान करता है।

प्रथम चरण: यहाँ शुक्र जातक को व्यापारिक बुद्धि देता है और वह अंतरराष्ट्रीय व्यापार तक से संबद्ध हो सकता है।

द्वितीय चरण: यहाँ शुक्र जातक को बुद्धिमान और उसके व्यक्तित्व को आकर्षक बनाता है। स्त्रियां उसके प्रति चुंबकीय आकर्षण अनुभव करती हैं। फलतः जातक कामी बन जाता है।

तृतीय चरण: यहाँ शुक्र के कारण व्यक्ति दबा-दबा सा रहता है। खुलकर अपनी बात नहीं कह पाता। प्रेम में भी उसे निराशा मिलती है।

चतुर्थ चरण: यहाँ शुक्र के कारण जातक दार्शनिक स्वभाव का बन जाता है। विज्ञान में भी उसकी रुचि होती है। ऐसे व्यक्ति का पारिवारिक जीवन सुखी नही होता। एक तो विवाह में विलंब होता हैं, दूसरे उसकी पत्नी को भी कोई न कोई रोग घेरे रहता है।

पुष्य स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि शुभ होती है। जातक उद्योगपति हो सकता है। उसे पत्नी भी अच्छी मिलती है। सुंदर और संपन्न। उसकी संपत्ति का भी जातक को लाभ मिलता है।

चंद्र की दृष्टि के कारण जातक का व्यक्तित्व आकर्षक बनता है।

मंगल की दृष्टि उसे ललित कलाओं के माध्यम से धनी बनाती है।

बुध की दृष्टि उसे विद्वान बनाती है। उसकी पत्नी भी विदुषी होती है।

गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप उसे जीवन के सारे सुख प्राप्त होते हैं।

शनि की दृष्टि जातक को अभावग्रस्त बनाती है। तरह-तरह के रोग भी उसे घेरे रहते हैं।

पुष्य के विभिन्न चरणों में शनि की स्थिति

पुष्य के तृतीय चरण को छोड़कर शेष सभी चरणों में शनि की स्थिति शुभ फल देती है।

प्रथम चरणः यहाँ शनि व्यक्ति को घोर स्वार्थी बनाता है। उसकी परिवार में किसी से नहीं बनती। हाँ, ऐसा व्यक्ति परिश्रमी अवश्य होता है और स्व प्रयत्नों से ही जीवन में आगे बढ़ता है।

द्वितीय चरणः यहाँ शनि व्यक्ति को उदार और करुणामय बनाता है तथापि उसे तरह–तरह के रोग घेरे रहते हैं।

तृतीय चरणः यहाँ शनि जातक को शासकीय अथवा व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता प्रदान करता है। शासकीय सेवा में हो तो जातक उच्च पद पर आसीन होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ शनि हो तो ऐसे व्यक्ति को बचपन में माता–पिता का सुख नसीब नहीं होता। उसका लालन–पालन अन्य संबंधी करते हैं। उन्हीं के कारण उसे विरासत में संपत्ति भी मिलती है।

पुष्य स्थित शनि पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि जातक के बचपन को कष्टकारक बना देती है। उसे पिता का सुख नही मिलता।

चंद्र की दृष्टि उसे विशेष शिक्षा नहीं दिलाती। माता के लिए भी यह दृष्टि अशुभ है।

मंगल की दृष्टि संपन्न और स्वस्थ बनाती है। उसे जीवन के सभी सुख प्राप्त होते हैं।

बुध की दृष्टि उसे समाजसेवी, परोपकारी बनाती है।

गुरु की दृष्टि उसे परिवार का पूरा सुख प्रदान करती है। सुशील पत्नी और समझदार संतान। वह धनी भी होता है।

शुक्र की दृष्टि उसे सामान्यतः सुखी रखती है। अपने व्यवहार के कारण वह सभी को प्रिय होता है।

पुष्य के विभिन्न चरणों में राहु की स्थिति

पुष्य स्थित राहु शुभ फल प्रदान करता है। व्यक्ति कला–प्रिय, धनी और प्रसिद्ध भी होता है।

प्रथम चरणः यहाँ राहु काव्य प्रेमी बनाता है। जातक स्वयं भी कवि होता है। ऐसे व्यक्ति का बचपन कष्टमय बीतता है। प्रेम में भी निराशा मिलती है फलतः जातक के मन में स्त्रियों के प्रति उपेक्षा और कुछ अंशों तक घृणा उत्पन्न हो जाती है।

द्वितीय चरणः यहाँ शनि जमीन–जायदाद का मालिक बनाता है। जातक को दुग्ध–व्यवसाय से लाभ मिल सकता है।

तृतीय चरण: यहाँ राहु जातक को लेखन–प्रकाशन के कार्य में प्रवृत्त करता है। वह शोध, अनुसंधान में भी रुचि लेता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ राहु जातक को वैभव संपन्न और प्रसिद्ध बनाता है। लेकिन उसका पारिवारिक जीवन सुखी नहीं होता।

पुष्य के विभिन्न चरणों में केतु की स्थिति

पुष्य में केतु की स्थिति शुभ फल नहीं देती।

प्रथम चरण: यहाँ केतु कष्टकारक होता है। जातक बचपन में घर से भाग जाता है और अभावमय जीवन बिताता है।

द्वितीय चरण: यहाँ केतु बुरी संगति का शिकार बनाता है। जातक के मित्र अच्छे नहीं होते और कुसंगति के कारण वह पैतृक संपत्ति तक गवां बैठता है।

तृतीय चरण: यहाँ केतु जातक को आजीवन ऋणग्रस्त रखता है। वह यायावर की तरह भटकता है। कभी–कभी कोई असाध्य रोग भी उसे घेर लेता है।

चतुर्थ चरण: यहाँ भी केतु अच्छे फल नहीं देता। जातक जो भी कमाता है, बुरी स्त्रियों की संगति में उसे गवां देता है। प्रौढ़ावस्था में ही उसका जीवन सुखी होता है।

आश्लेषा

आश्लेषा की राशिपथ में स्थिति 106.40 अंश से 120.00 अंशों के मध्य मानी गयी है। आश्लेषा के अन्य पर्यावाची नाम हैं–अहि, भुजंग, सार्पी। अरबी में आर्द्रा को अल–तर्फ कहा जाता है।

आश्लेषा का स्वरूप चक्र की भांति माना गया है। सर्प को देवता तथा बुध को इस नक्षत्र का स्वामी ग्रह माना गया है। इस नक्षत्र में पांच तारों की स्थिति मानी गयी है। यह नक्षत्र कर्क राशि के अंतर्गत आता है, जिसका स्वामी चंद्र है।

गण: राक्षस, योनि: बिल्ला (मार्जर) तथा नाड़ी: अन्त्या कही जाती है।

नक्षत्र के **चरणाक्षर** है: डी, डू, डे, डो।

वाल्मीकी रामायण के अनुसार दशरथ पुत्र लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म इसी नक्षत्र में हुआ था।

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे जातक–जातिकाओं के लिए कहा गया है कि उनकी दृष्टि भेदक होती है। उनकी दृष्टि मात्र में एक शक्ति होती है जो सामने वाले को प्रभावित किये बिना नहीं छोड़ती।

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे जातक भाग्यशाली, हष्ट–पुष्ट होते हैं तथापि वे रुग्ण व्यक्तित्व का आभास दिलाते हैं। वे वाचाल भी होते हैं, तथापि उनकी वाणी में लोगों को मुग्ध करने की शक्ति होती है। उनमें निहित बुद्धिमानी एवं नेतृत्व की क्षमता उन्हें शीर्षस्थ पर पहुँचने की प्रेरणा देती है।

इस नक्षत्र में जातक किसी भी बात पर आँख मूंदकर विश्वास नहीं

करते। उन्हें अपनी स्वतंत्रता में किसी का भी कोई हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं होता। अतः आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे जातकों से निभाव का एकमात्र उपाय है कि उनकी बात न काटी जाए। आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे जातकों में एक विशेषता यह भी होती है कि आँख मूंदकर उनका अनुसरण करने वाले लोगों के हित के लिए वे किसी भी सीमा तक जा सकते हैं। यद्यपि वे न किसी से विश्वासघात करते हैं, और न किसी को धोखा देना पसंद करते हैं, तथापि अक्सर वे समाज में अवैध कार्यों में लिप्त लोगों के जाने–अनजाने खैर–ख्वाह बने रहते हैं। उनमें एक दोष यह होता है कि वे कृतज्ञता व्यक्त करना नहीं जानते। उनका उग्र स्वभाव लोगों को उनका विरोधी बना देता है और अवसर मिलते ही ऐसे लोग उन्हें धोखा देने से नहीं चूकते।

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे जातकों की शैक्षिक रुचि के विषय अक्सर कला एवं वाणिज्य व्यवसाय के होते हैं।

ऐसे जातकों की पत्नियां अक्सर उन्हें समझ नहीं पाती। दूसरे उसमें स्वार्थपरता की भावना भी अधिक होती है। ऐसे जातकों को नशे से बचने की सलाह दी गयी है।

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मी जातिकाएं विशेष सुंदर नहीं होती। वे नैतिकता के उच्च आदर्शों से प्रेरित होती हैं तथा अपने इस गुण के कारण समादृत भी होती हैं। उनमें आत्म संयम एवं लज्जा की भावना भी प्रचुर मात्रा में होती है। वे कार्यदक्ष होती हैं। घरेलू कामकाज में भी और अवसर मिलने पर प्रशासनिक कार्यों में भी।

आश्लेषा के विभिन्न चरणों में सूर्य की स्थिति

आश्लेषा के विभिन्न चरणों में सूर्य सामान्य फल देता है। लग्न में विभिन्न नक्षत्रों की स्थिति फलों में गुणात्मक परिवर्तन कर देती है। इसी तरह शुभ ग्रहों की दृष्टि से भी फलों में परिवर्तन आ जाता है।

आश्लेषा के विभिन्न चरणों के स्वामी हैं–प्रथम चरणः गुरु, द्वितीय चरणः शनि, तृतीय चरणः शनि एवं चतुर्थ चरणः गुरु।

प्रथम चरणः यहाँ सूर्य सामान्य फल देता है। यदि लग्न में अनुराधा नक्षत्र हो तो जातक यायावर बन जाता है। यह स्थिति वैराग्य की भावना को भी जन्म देती है। परिवार से विरक्त साधु संन्यासी बना देती है। तीर्थाटन के लिए प्रेरित करती है। उदार एवं परोपकारी बनाती है।

द्वितीय चरणः यहाँ भी सूर्य विशेष शुभ फल नहीं देता। यदि लग्न में ज्येष्ठा नक्षत्र हो तो जातक की पत्नी उसकी उन्नति में बाधक बनती है। पिता के लिए भी यह स्थिति शुभ नहीं कही गयी है।

तृतीय चरणः यहाँ भी सूर्य सामान्य फल देता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ भी सूर्य शुभ फल नहीं देता। जातक को संतान से कोई सुख नहीं मिलता।

आश्लेषा स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

चंद्र की दृष्टि हमेशा नौकरी करवाती है। संबंधी सहायक होने की बजाय बाधक बनते हैं।

मंगल की दृष्टि भी संबंधियों से विवाद बढ़ाती है।

बुध की दृष्टि का फल शुभ होता है। जातक विद्वान और प्रसिद्ध शिक्षा–शास्त्री होता है।

गुरु की दृष्टि का भी फल शुभ होता है। जातक को शासन से लाभ होता है। परिवार में उसकी प्रतिष्ठा बनी रहती है।

शुक्र की दृष्टि स्त्रियों से लाभ करवाती है, किंतु जीवन दुखी भी रहता है।

शनि की दृष्टि स्वास्थ्य पर घातक प्रभाव डालती है।

आश्लेषा के विभिन्न चरणों में चंद्र की स्थिति

आश्लेषा के प्रथम चरण को छोड़कर शेष तीनों चरणों में चंद्र के शुभ फल नहीं मिलते।

प्रथम चरणः यहाँ चंद्र जातक को उदार, विद्वान और संपन्न बनाता है। वह समाज में आदर भी पाता है।

द्वितीय चरणः यहाँ चंद्र शुभ फल नहीं देता, विशेषकर स्वास्थ्य–दृष्टि से।

तृतीय चरणः यहाँ चंद्रमा दुर्घटनाओं के योग बनाता है। ये दुर्घटनाएं घर तक में भी हो सकती है।

चतुर्थ चरणः यहाँ चंद्र व्यक्ति को अनैतिक और स्वार्थी बनाता है। व्यक्ति धन–लिप्सा में लीन रहता है और धन कमाने के लिए गलत माध्यमों का भी आश्रय लेता है।

आश्लेषा स्थित चंद्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि भवन–निर्माण कार्यों में दक्षता देती है।

मंगल की दृष्टि उसे क्रूर स्वभाव वाला बनाती है। परिवार वाले

भी उससे दुखी होते हैं। उसके कार्य-कलापों से उन्हें शर्मिंदगी उठानी पड़ती है।

बुध की दृष्टि का फल शुभ होता है। जातक धनी और प्रसिद्ध होता है और उसे परिवार का भी पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

गुरु की दृष्टि का भी शुभ फल मिलता है। जातक उदार, सुखी और अपने सद् व्यवहार के कारण लोकप्रिय होता है।

शुक्र की दृष्टि जातक को संपूर्ण सुख देती है लेकिन साथ ही काम-पिपासा की पूर्ति के लिए अधिक शक्ति देती है। फलतः तरह-तरह के यौन रोगों का कष्ट उसे झेलना पड़ता है।

शनि की दृष्टि उसे दरिद्र और मातृ-विरोधी बनाती है।

आश्लेषा के विभिन्न चरणों में बुध

आश्लेषा के विभिन्न चरणों में स्थित बुध प्रायः सामान्य फल देता है।

प्रथम चरणः यहाँ बुध व्यक्ति को योजनाबद्ध ढंग से कार्य करने का गुण देता है। वह बुद्धिमान और चतुर होता है।

द्वितीय चरणः यहाँ बुध व्यापार कार्य में रुचि देता है। जातक की लेखन में भी रुचि होती है।

तृतीय चरणः यहाँ बुध जातक को भ्रमणशील बनाता है। साथ ही नशे के प्रति उसमें विशेष कमजोरी होती है। उसका पारिवारिक जीवन सुखी नहीं रहता। पत्नी से सदैव अनबन बनी रहती है।

चतुर्थ चरणः यहाँ बुध शिक्षा का कारक बन जाता है। जातक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में विशेष तरक्की करता है।

आश्लेषा स्थित बुध पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि पत्नी के कारण पारिवारिक जीवन नरकीय बना देती है।

चंद्र की दृष्टि वस्त्र-व्यापार में अभिरुचि देती है।

मंगल की दृष्टि उसे विद्वान, शास्त्रों का अध्येता बनाती है। लेकिन स्वभाव में क्रूरता भी लाती है।

गुरु की दृष्टि बुद्धिमान, धनी और विवेकवान बनाती है।

शुक्र की दृष्टि के फलस्वरूप वह आकर्षक व्यक्तित्व वाला बनता है। संगीत-नृत्य में उसकी विशेष रुचि होती है।

शुक्र की दृष्टि उसे वाचाल भी बना देती है।

शनि की दृष्टि का फल शुभ फल नहीं होता। अपने व्यवहार के कारण जातक सर्वत्र तिरस्कृत होता है।

आश्लेषा के विभिन्न चरणों में गुरु

आश्लेषा नक्षत्र में गुरु की स्थिति शुभ फल देती हैं। जातक विद्वान, धनी और प्रसिद्ध होता है। उसका पारिवारिक जीवन भी सुखी होता है।

प्रथम चरणः यहाँ गुरु जातक को धनी बनाता है। पत्नी भी अच्छी मिलती है। संतान भी उसे सुख पहुँचाती है।

द्वितीय चरणः यहाँ गुरु जातक को विद्वान, उदार और सत्यवादी बनाता है, फलतः वह सर्वत्र आदर पाता है। उसकी संतान भी अच्छी, दीर्घ–जीवी होती है।

तृतीय चरणः यहाँ भी गुरु शुभ फल देता है। विशेषकर उसकी पत्नी धनी परिवार से होती है और इसका लाभ जातक को मिलता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ गुरु बहुत अच्छे फल देता है। जातक जमीन–जायदाद का स्वामी और सुखी रहता है। शासकीय सेवा में हो तो उच्च पद पर पहुँचता है।

आश्लेषा स्थित गुरु पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि उच्च पद प्रदान करती है। जातक राजनीतिक क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है और इसी कारण उसे शासन में भी महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त होता है।

चंद्र की दृष्टि का फल अच्छा नहीं होता। जातक परिवार के विनाश का कारण बनता है।

मंगल की दृष्टि उसे हर दृष्टि से सुखी रखती है। धन की दृष्टि से भी और परिवार की दृष्टि से भी।

बुध की दृष्टि के फलस्वरूप जातक राजनीति के क्षेत्र में अत्यंत सफल होकर उच्च पद पाता है। उसे विरासत में संपत्ति भी प्राप्त होती है।

शुक्र की दृष्टि उसे स्त्रियों में लोकप्रिय बनाती है। उनसे उन्हें लाभ भी प्राप्त होता है।

शनि की दृष्टि का फल शुभ होता है। जातक सुरक्षा संगठनों यथा सेना अथवा पुलिस में उच्चतम पद प्राप्त कर सकता है। उसके पास न केवल धन वरन् अधिकार भी होता है।

आश्लेषा के विभिन्न चरणों में शुक्र

आश्लेषा के चतुर्थ चरण में शुभ फल देने के अलावा विभिन्न चरणों में शुक्र मिले–जुले फल देता है, पर वैवाहिक जीवन की दृष्टि यहाँ शुक्र की स्थिति शुभ नहीं मानी जा सकती।

प्रथम चरणः यहाँ शुक्र विशेष फल नहीं देता है। इस चरण में चंद्र के साथ शुक्र की युति संबंध–विच्छेद की नौबत ला देती है।

द्वितीय चरणः यहाँ शुक्र अपने अन्य फलों के साथ–साथ व्यक्ति को काम–पिपासु बनाता है। काम वासना का आधिक्य पारिवारिक जीवन में विग्रह उत्पन्न करता है। दो पत्नियों का भी योग बनाता है। ऐसे जातक के जीवन का अंतिम चरण दुखदायी होता है। वह अपने कर्मों के फलस्वरूप अकेला रह जाता है।

तृतीय चरणः यहाँ भी शुक्र अच्छे फल नहीं देता। प्रथम चरण की भांति इस चरण में भी चंद्र–शुक्र युति अच्छे फल नहीं देती। वह मानसिकता को बिल्कुल अनैतिक बना देती है।

चतुर्थ चरणः यहाँ शुक्र शुभ फल देता है। जातक राजनीति के क्षेत्र में विशेष सफल होता है। लेकिन कामाधिक्य उसे परस्त्रीगामी बना देता है। फलतः उसका वैवाहिक जीवन सुखी नहीं होता।

आश्लेषा स्थित शुक्र पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि शुभ नहीं होती। जातक को स्त्रियों की कोप–दृष्टि का शिकार होना पड़ता है।

चंद्र की दृष्टि माता के लिए अशुभ होती है।

मंगल की दृष्टि उसे बुद्धिमान, कला–प्रिय ही नहीं वरन् कलाओं में विख्यात भी बनाती है।

बुध की दृष्टि उसे विवेकपूर्ण बनाती है और परिवार के लोगों के व्यवहार से दुखी रहने के बावजूद वह अपने पारिवारिक दायित्वों को निष्ठा से पूरा करता है।

गुरु की दृष्टि उसे धनी और बेहद चतुर बनाती है। उसका वैवाहिक जीवन भी सुखी रहता है।

शनि की दृष्टि का फल अच्छा नहीं होता। व्यक्ति अभावग्रस्त रहता है। चरित्र हीनता के कारण वह हेय दृष्टि से भी देखा जाता है।

आश्लेषा के विभिन्न चरणों में शनि

आश्लेषा के द्वितीय चरण को छोड़कर विभिन्न चरणों में शनि शुभ फल नहीं देता। जातक प्रायः माता–पिता के सुख से वंचित रहता है।

प्रथम चरणः यहाँ शनि माता के सुख से वंचित रहता है। या तो मां होती नहीं और होती भी है तो जातक उसके द्वारा लालन–पालन के सुख से वंचित रहता है।

द्वितीय चरणः यहाँ शनि शुभ फल देता है। जातक सुशिक्षित और चतुर होता है। विज्ञान संबंधी विषयों में उसकी रुचि होती है। वह विदेश–यात्राएं भी करता है।

तृतीय चरणः यहाँ शनि पिता के सुख से वंचित रखता है। जातक हमेशा संदेहशील बनता रहता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ शनि जातक को पितृ-विरोधी बनाता है। उसका पिता मद्य-प्रिय हो सकता है। फलतः माता–पिता के बीच संबंध ठीक नहीं होते। पिता के प्रति वैर भाव के कारण जातक पारिवारिक संपत्ति भी नष्ट कर सकता है।

आश्लेषा स्थित शनि पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

सूर्य की दृष्टि पारिवारिक जीवन दुखी रखती है। जातक को पत्नी से पूर्ण सुख नहीं मिलता।

चंद्र की दृष्टि भी शुभ फल नहीं देती। जातक परिवार वालों के लिए दुःख का कारण बन जाता है।

मंगल की दृष्टि शासन से लाभ दिलवाती है।

बुध की दृष्टि के फलस्वरूप जातक घमंडी और कटु वचन कहने वाला बन जाता है।

गुरु की दृष्टि शुभ फल देती है। जातक धनी और पत्नी तथा संतान सुख पाता है।

शुक्र की दृष्टि का भी शुभ फल मिलता है। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होता है। व्यापार में वह सफल होता है।

आश्लेषा के विभिन्न चरणों में राहु

प्रथम चरणः यहाँ राहु जातक को दीर्घजीवी बनाता है।

द्वितीय चरणः यहाँ राहु विशेष शुभ फल नहीं देता।

तृतीय चरणः यहाँ राहु चिकित्सा के क्षेत्र में सफल बनाता है। जातक अत्यंत भावुक होता है और इसी कारण उसे परेशानी भी उठानी पड़ती है।

चतुर्थ चरणः यहाँ राहु जीवन में अवरोधक बनता है। यहाँ तक कि परिवार वाले ही बाधाएं उत्पन्न करने लगते हैं।

आश्लेषा के विभिन्न चरणों में केतु

प्रथम चरणः यहाँ केतु चिकित्सा क्षेत्र की ओर प्रवृत्त करता है। स्त्रियों की कुंडली में में स्थित राहु सफल डॉक्टर बनाता है।

द्वितीय चरणः यहाँ केतु जातक को साहसी और निर्भीक बनता है। उसकी धर्म–कर्म में भी रुचि होती है। पर पिता के व्यवहार फलस्वरूप उसे कष्ट भोगना पड़ता है।

तृतीय चरणः यहाँ केतु जातक को वैज्ञानिक दृष्टि वाला बनाता है। विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में वह सफलता प्राप्त करता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ केतु जातक को व्यापार में सफल बनाता है। मित्रों के मामले में वह बेहद सौभाग्यशाली होता है। उसकी उन्नति में भी वे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मघा

मघा नक्षत्र राशिफल में 120.00 अंश से 133.20 अंश के मध्य स्थित है। पर्यायवाची नाम है पितृजनक। अरबी में मघा को 'अल–जवाह' (अर्थात् सिंह का मस्तक) कहते हैं। यह नक्षत्र सिंह राशि का प्रथम नक्षत्र है। मघा का देवता पितर एवं स्वामी केतु को माना गया है। सिंह राशि का स्वामी सूर्य है।

इस नक्षत्र में पांच तारे माने गये हैं जो एक मकान–जैसी आकृति दर्शाते हैं।

गण: राक्षस, योनि: मूषक एवं नाड़ी: अंत मानी गयी है।

चरणाक्षर हैं: मा, मी, मू, मे।

मघा नक्षत्र में जन्मे जातक मध्यम कद, रोमावलि युक्त शरीर तथा निर्दोष भाव–भंगिमा वाले होते हैं। उनकी गरदन अपनी प्रमुखता के कारण ध्यान आकर्षित करती है। ऐसे जातक ईश्वर–भीरु, बड़ों का आदर करने वाले, मृदुभाषी तथा वैज्ञानिक विषयों में पैठ रखने वाले होते हैं। विभिन्न कलाओं में भी उनकी रुचि होती है। अपने शांत स्वभाव, शांतिप्रिय जीवन की ललक और विद्वत्ता के कारण वे विद्वजन द्वारा भी सम्मानित होते हैं।

वे हर कार्य सुविचारित ढंग से योजना बनाकर करते हैं। यद्यपि वे गर्ममिजाज के भी होते हैं तथा सच्चाई के खिलाफ कोई बात, कोई कार्य बर्दाश्त नहीं करते, तथापि वे अपने व्यवहार से भरसक किसी को ठेस नहीं पहुँचाना चाहते। और यदि कभी उन्हें लगता है कि उनके कारण किसी का जी दुखा है तो वे तत्काल क्षमायाचना भी कर लेते हैं। ऐसे जातक निजी स्वार्थ से कोसों दूर, समाज के लिए हरदम कुछ न कुछ उपयोगी, हितकर

कार्य करना चाहते हैं। प्रतिदान में वे और कुछ नहीं मात्र मानसिक परितोष–संतोष चाहते हैं।

स्वाभाविक है कि ऐसे लोग आजकल के व्यवसाय में अपनी ईमानदारी के कारण ही असफल रहेंगे। लेकिन चाहे वे व्यवसाय में हो, चाहे नौकरी में अपने मृदु, ईमानदार व्यवहार के कारण वातावरण में संतुलन बनाए रखते हैं। ऐसे जातकों का वैवाहिक जीवन भी प्रायः सुखी ही रहता है।

मघा नक्षत्र में जन्मी जातिकाओं का व्यक्तित्व सुंदर और आकर्षक होता है। जातकों की भांति वे भी ईश्वर–निष्ठ होती हैं और निस्वार्थ भाव से सबकी सहायता करती हैं। वे गृह कार्य में, आफिस के काम काज में भी दक्ष होती हैं। इतने सद्‌गुणों के बावजूद गुस्सा जैसे उनकी नाक पर सवार रहता है। यही कारण है कि उनका पारिवारिक, वैवाहिक जीवन अशांत रहता है। उन्हें पति एवं परिवार वालों के बीच दीवारें खड़ा करने वाला भी मान लिया जाता है।

मघा के विभिन्न चरणों के स्वामी इस प्रकार हैं–प्रथम चरणः मंगल, द्वितीय चरणः शुक्र, तृतीय चरणः बुध एवं चतुर्थ चरणः चंद्र।

मघा के विभिन्न चरणों में सूर्य

प्रथम चरणः यहाँ सूर्य अभावग्रस्त रखता है। आजीविका के लिए जातक को नौकरी करनी पड़ती है।

द्वितीय चरणः यहाँ भी सूर्य प्रथम चरण जैसे ही फल देता है, यथा अभावग्रस्त जीवन, दरिद्रता, जातक दुर्बलता के कारण थकान जल्दी अनुभव करता है।

तृतीय चरणः यहाँ सूर्य का विशेष फल नहीं होता। जातक मध्यम आयु का होता है।

चतुर्थ चरणः यहाँ भी सूर्य अभावग्रस्त रखता है, पर जीवन भर नहीं। लगभग चालीस वर्ष की अवस्था तक। इसके बाद जीवन अपेक्षाकृत सुखी हो जाता है।

मघा स्थित सूर्य पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि

चंद्र की दृष्टि शुभ होती है। इतनी कि मघा के विभिन्न चरणों में अभावग्रस्त रहने वाला जातक चंद्र दृष्टि के फलस्वरूप प्रसिद्ध और शक्ति संपन्न हो जाता है। व्यक्ति खर्चीला भी बहुत होता है।

मंगल की दृष्टि भी उसे खर्चीला बनाती है। इस दृष्टि के फलस्वरूप जातक स्वयं को स्त्री जाति की सेवा में लगा देता है। जातक परिश्रमशील लेकिन कटु वचन बोलने वाला होता है।